खण्ड-271, अंक-7
शनिवार, 11 चैत्र, शक संवत् 1889
(1 अप्रैल, 1967 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 271 में 7 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)

१९६८

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

उत्तर प्रदेश विधान सभा

शनिवार, १ अप्रैल, १९६७

विधान सभा की बैठक सभा-मण्डप, लखनऊ में ११ बजे दिन में अध्यक्ष, श्री जगदीशशरण अग्रवाल, की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

उपस्थित सदस्य—४१८

अंगनेलाल, श्री
अख्तर अली खां, श्री
अजात प्रताप, श्री
अठई राम, श्री
अतीकुर्रहमान, श्री
अनन्तराम, श्री
अब्दुल खालिक, श्री
अब्दुल मुईज खां, श्री
अयोध्याप्रसाद, श्री (झांसी)
अयोध्या प्रसाद, श्री (मिर्जापुर)
अयोध्याप्रसाद आर्य, श्री
अर्जुन, श्री
अवधेश प्रताप मल, श्री
अवेद्यनाथ, श्री
अशरफ अली खां, श्री
अशर्फीलाल, श्री
अश्वनी कुमार, श्री
अश्वनी कुमार चतुर्वेदी 'राकेश', श्री
अहमदउल्ला खां, श्री
आत्मा, श्री
आनन्द सिंह, कुंवर
इन्द्रपाल, श्री
इन्द्रपाल सिंह, श्री
इन्द्रमणी, श्री
इन्द्रमोहिनी, श्रीमती
इन्द्रलाल, श्री
ईश्वर शरण, श्री
उग्रसेन, श्री
उदय प्रताप, श्री
उदयवीरसिंह, श्री
उदित नारायण, श्री
उमादत्त, श्री
ऊदल, श्री
एस० जी० दत्त, श्री
ए० सी० ग्राइस, श्री
ओंकार सरन, श्री
ओम् प्रकाश, श्री
ओम् प्रकाश सिंह, श्री
कन्धई लाल, श्री
कन्हैया लाल, श्री (इटावा)
कन्हैया लाल, श्री (झांसी)
कन्हैया लाल बाल्मीकी, श्री
कमला प्रसाद, श्री (जौनपुर)
कमला प्रसाद, श्री (बहराइच)
करन सिंह, श्री
कला रानी, श्रीमती
कल्पनाथ सिंह, श्री
कल्याणचन्द्र मोहिले, श्री (उपनाम छन्नन गुरु)
कल्याण सिंह, श्री
कामता सिंह, श्री
कालीचरण, श्री
काशीनाथ, श्री
किशन लाल, श्री
किशन लाल दिलेर, श्री
किशन सिंह, श्री
किशुन लाल, श्री
कृष्ण बहादुर, श्री
कृष्ण सिंह, श्री
कृष्णानन्द राय, श्री
केदार राज जंगबहादुर राणा, श्री
केशरीलाल, श्री
केशव देव, श्री

खूब सिंह, श्री
खेमा, श्री
गंगाधर, श्री
गंगाप्रसाद, श्री (एटा)
गंगाप्रसाद, श्री (मथुरा)
गंगाभक्त सिंह, श्री
गंगाराम, श्री
गंगास्वरूप भटनागर, श्री
गंजाधर, श्री
गया प्रसाद, श्री (उपनाम मास्टर साहब)
गया प्रसाद मेहरोत्रा, श्री
गिरजा शंकर, श्री
गिरधारी लाल, चौधरी
गिरिराज सिंह, श्री
गिरीश चन्द्र तिवारी, श्री
गुप्तार सिंह, श्री
गुलाब सिंह, श्री
गेंदा सिंह, श्री
गोपालदत्त ओझा, श्री
गोपाल राम दास, श्री
गोविन्द नारायण तिवारी, श्री
गोविन्द सहाय, श्री
गौरी राम, श्री
गौरीशंकर सराफ, श्री
गौरीसिंह, राठौर, श्री
घनश्याम गिरि, महन्त
घनश्याम दास, श्री
चतुर्भुज शर्मा, श्री
चन्द्र किशोर, श्री
चन्द्र कुमार, श्री
चन्द्रदेव, श्री
चन्द्रबली, श्री
चन्द्रभानु गुप्त, श्री
चन्द्रशेखर, श्री
चन्द्रशेखर सिंह, श्री
चन्द्र सिंह रावत, श्री
चरण सिंह, श्री
चेतराम पचपेड़ा, श्री
चेतराम वर्मा, श्री
जंग बहादुर, श्री
जगत सिंह, श्री
जगदम्बा प्रसाद, श्री
जगदीश नारायण त्रिपाठी, श्री
जगदीश सिंह, श्री
जगनप्रसाद रावत, श्री
जगपत सिंह, श्री
जगवीर सिंह, श्री
जमीलुर्रहमान, श्री
जयनारायण सिंह, श्री
जयराम वर्मा, श्री
जयेन्द्र सिंह, श्री
जवाहर लाल जाटव, श्री
जवाहिर लाल, श्री
जसदा नन्द, श्री
जानकी प्रसाद, श्री
जितेन्द्रनाथ मिश्र, श्री
जियाउर्रहमान, श्री
जी० एस० चौधरी, श्री
जुगल किशोर, श्री
जे० एन० सिन्हा, श्री
जैदत्त सिंह, श्री
जैनूराम, श्री
जोरावर वर्मा, श्री
झारखण्डे राय, श्री
टम्बरेश्वर प्रसाद, श्री
टीकम सिंह, श्री
तिरमल सिंह, श्री
तेज सिंह, श्री
त्रिवेणी, श्री
त्रेपन सिंह, श्री
दल बहादुर सिंह, श्री
दल सिंह, श्री
दशरथ, श्री
दीक्षित, आचार्य
दुर्गाप्रसाद, श्री
दुर्योधन, श्री
दृगराज सिंह, श्री
देवराम, श्री
देवीचरण अग्निहोत्री, श्री
देवी दयाल सेन, श्री
देवी सहाय बाजपेयी, श्री
देवी सेवक, श्री
देवेन्द्र सिंह, कुंवर
देशराजसिंह, श्री
धनराज यादव, श्री
धनुषधारी पाण्डेय, श्री
धर्मगज सिंह, श्री
धर्मवीर, श्री
धर्मवीर सिंह, श्री
धर्मसिंह, श्री
ध्रुव कुमार, श्री
नन्हेलाल, श्री

नरदेव सिंह, श्री
नरवदेश्वर, श्री
नरेन्द्रसिंह विष्ट, श्री
नवलकिशोर, श्री
नाथूराम शिक्षक, श्री
नारायणदास, श्री
नारायण सिंह, श्री
नित्यानन्द पाण्डेय, श्री
नियाज हसन, श्री
निहाला सिंह, श्री
नेकराम शर्मा, श्री
नेमपाल सिंह, श्री
नौनिहाल सिंह, श्री
पब्बर राम, श्री
पातीराम अहरवार, श्री
पीतम सिंह, श्री
प्यारेलाल, श्री (अलीगढ़)
प्यारेलाल, श्री (मेरठ)
प्रतापनारायण तिवारी, श्री
प्रताप सिंह, श्री
प्रभाकर त्रिपाठी, श्री
प्रभुदयाल, श्री
प्रेमदत्त, श्री
फारूक चिश्ती, श्री
फूल सिंह, श्री
बंशीधर, श्री
बंशीधर मिश्र, श्री
बजरंग बली, ब्रह्मचारी
बदन सिंह, श्री
बदलराम, श्री
बद्री प्रसाद, श्री
बद्रीप्रसाद अवस्थी, श्री
बनारसी दास, श्री
बलदेव सिंह सरदार
बलवीर सिंह श्री, (मेरठ)
बलवीर सिंह, श्री (फतेहगढ़)
बसन्तलाल, श्री (जालौन)
बसन्तलाल, श्री (लखनऊ)
बसन्त सिंह, श्री
बाबू बदरे, श्री
बाबूराम, श्री
बाबूलाल, श्री
बाबू सिंह, श्री
बिशन लाल, श्री
बृज किशोर, श्री
बृजपाल सिंह, श्री
बृज मोहन दास अग्रवाल, श्री
बेचनराम, श्री (मिर्जापुर)
बेचनराम, श्री (वाराणसी)
बेनी बाई, श्रीमती
बेनीसिंह अवस्थी, श्री
बैजनाथ, श्री (बलिया)
बैजनाथ, श्री (वाराणसी)
ब्रह्माश्रम, स्वामी
भगवतीसिंह विशारद, श्री
भगौती, श्री
भगौतीप्रसाद वर्मा, श्री
भग्गूराम, श्री (उपनाम भृगुनाथ)
भारतसिंह चौहान, श्री
भीखालाल, श्री
भीमा प्रसाद, श्री
भुवनेशभूषण, श्री
भृगुनाथ चतुर्वेदी, श्री
भैरवदत्त धूलिया, श्री
मंगलदेव, श्री
मंगलाप्रसाद तिवारी, श्री
मंजूर अहमद, श्री
मकसूद हुसैन, श्री
मदनमोहन मिश्र, श्री
मदन मोहन सिंह, श्री
मधुकर दिघे, श्री
मन्नालाल, श्री
मन्नीलाल, श्री
मन्सादीन, श्री
मलिखान सिंह, श्री
महरमसिंह, श्री
महिपालसिंह, श्री
महीलाल, श्री
महेन्द्रप्रताप सिंह, कुंवर
महेशकुमार, श्री
माता प्रसाद, श्री
मानसिंह, श्री
मारकण्डे, श्री
मुन्शीलाल चमार, श्री
मुक्तिनाथ राय, श्री
मुजफ्फर हसन, श्री
मुंशीलाल, श्री
मुरलीधर, श्री
मुलायम सिंह, श्री
मुल्कीराज, श्री
मुल्तान सिंह, श्री
मुहम्मद असरार अहमद, श्री

मुहम्मद महमूद अली खां, श्री
मुहम्मद रऊफ, श्री
मुहम्मद रफी खां, श्री
मोतीलाल देहलवी, श्री
मोहनलाल, आचार्य
मोहनलाल कपूर, श्री
मोहनलाल गौतम, श्री
यशोदा देवी, श्रीमती
यादवेन्द्र सिंह, श्री (उपनाम ललन जी)
योगेश्वर प्रसाद, श्री
रईसउद्दीन, श्री
रघुनाथ सिंह, श्री (आगरा)
रघुनाथ सिंह, श्री (कानपुर)
रघुनाथ सिंह, श्री (झांसी)
रघुनाथ सिंह वर्मा, श्री
रघुराज, श्री
रघुवीर, श्री
रघुवीर सिंह, श्री (एटा)
रघुवीरसिंह, श्री (मैनपुरी)
रफी मुहम्मद खां, श्री
रमाकान्त, श्री
रमावल्लभ मिश्र, श्री
रमाशंकर अग्रवाल, श्री
रवीन्द्र प्रताप सिंह, श्री
राज किशोर, श्री
राजदेव, श्री
राजनाथ, श्री
राजनारायण सिंह, श्री
राजबली, श्री
राजबहादुर, श्री (जौनपुर)
राजबहादुर, श्री (सीतापुर)
राजबहादुर चन्द, श्री
राजबहादुर त्रिवेदी, श्री
राज राजेश्वर, श्री
राजाराम, श्री (आगरा)
राजाराम, श्री (देवरिया)
राजाराम, श्री (बलिया)
राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी, डाक्टर
राजेन्द्र दत्त, श्री
राजेन्द्र प्रताप सिंह, श्री
राजेन्द्र सिंह यादव, श्री
राधेश्याम कपूर, श्री
राम अंजोर, श्री
राम अचल सिंह सेन्गर, श्री
राम अधार, श्री
रामअधीन सिंह, श्री
राम आसरे, श्री
रामकरन, श्री
राम किंकर, श्री
राम किशोर, श्री
राम कुमार, श्री
रामचन्द्र आजाद, श्री
रामचन्द्र, जोशी, श्री
राम चन्द्र विकल, श्री
रामचन्द्र सिंह, श्री
रामचरन दोहरे, श्री
रामजीलाल सहायक, श्री
रामदत्त, श्री
रामदास, श्री
रामदुलार पटेल, श्री
रामदुलारे, श्री (गोंडा)
रामदुलारे, श्री (रायबरेली)
रामदेव, श्री (गोंडा)
रामदेव, श्री (प्रतापगढ़)
रामनरेश पांडेय, श्री
रामनरेश शुक्ल, श्री
राम नाथ, श्री (मिर्जापुर)
रामनाथ, श्री (शाहजहांपुर)
रामनारायण, श्री
रामपति, श्री
रामपाल त्रिवेदी, श्री
रामप्यारे शुक्ला, श्री
रामप्रकाश त्रिपाठी, श्री
रामप्रसाद, श्री (आगरा)
रामप्रसाद, श्री (गढ़वाल)
रामप्रसाद, श्री (रायबरेली)
रामप्रसाद देशमुख, श्री
रामवचन, श्री
रामबली मिश्र, श्री
राममूर्ति, श्री
राममूर्ति 'अंचल', श्री
राम रतन, श्री
राम लखनसिंह, श्री
राम लाल, श्री
रामश्री राजपूत, श्री
रामसजीवन, श्री
राम समझावन, श्री
रामसरन सिंह, श्री
रामसिंह, श्री
रामसुन्दर शास्त्री, श्री
रामसेवक, श्री
रामस्वरूप, श्री (देहरादून)

रामस्वरूप, श्री (प्रतापगढ़)
रामस्वरूप, श्री (मैनपुरी)
रामस्वरूप वर्मा, श्री
रामायण राय, श्री
रामेश्वर सिंह, श्री
रुस्तम सैटिन, श्री
रूपनारायण, श्री
रूपनरायन, श्री
लक्ष्मीरमण आचार्य, श्री
लक्ष्मीशंकर, श्री
लटूरीसिंह, श्री
लाखन, श्री
लाल कृष्ण कुमार पाल, श्री
लालन शर्मा, श्री
लाल बहादुर, श्री
वरमेश्वर पाण्डेय, श्री
वसी नकवी, श्री
विजय कुमार त्रिपाठी, श्री
विजय शंकर सिंह, श्री
विपिन बिहारी तिवारी, श्री
विशुन प्रताप सिंह, श्री
विश्वनाथ प्रसाद, श्री (उपनाम झींन साहू)
विश्वनाथ सिंह, श्री
विष्णु स्वरूप, श्री
वीर बहादुर, श्री
वीरेन्द्र वर्मा, श्री
वीरेश्वर त्यागी, श्री
शंकर सिंह, चौधरी
शकुन्तला देवी, श्रीमती
शफकत जंग, श्री
शब्बीर हसन, श्री
शमीम आलम, श्री
शराफत हुसैन रिजवी, श्री
शशिभूषण सिंह, श्री
शिवगोपाल तिवारी, श्री
शिवनाथ सिंह, श्री
शिवमंगल सिंह, श्री
शिवराजसिंह, श्री
शिवलाल, श्री
शिवशंकर सिंह, श्री
शीतलादीन, श्री
शीतलाप्रसाद सिंह, श्री
शुगनचन्द मजदूर, श्री
श्यामलाल यादव, श्री
श्यामसिंह, श्री
श्रीनाथ, श्री
श्रीनारायण तिवारी, श्री
श्रीपति मिश्र, श्री
श्रीराम तिवारी, श्री
श्री शंकर शर्मा, श्री
(उपनाम लालो शर्मा वकील)
सईद अहमद, श्री
सत्यवीर, कुंवर
सन्तू, श्री
सरजू प्रसाद, श्री
सरदार सिंह, श्री
सहदेव सिंह, श्री
सालिक राम, श्री
सिया राम, श्री
सीताराम, डाक्टर
सुक्खनलाल, श्री
सुखदेव, श्री
सुखदेव प्रसाद, श्री
सुदामाप्रसाद गोस्वामी, श्री
सुरेन्द्र विक्रम, श्री
सुशील कुमार विद्यार्थी, श्री
सोहन लाल, श्री
सोहन लाल युधिया, श्री
हरिगेनराम, श्री
हरिहरनाथ अग्रवाल, श्री (उपनाम हरी बाबू)
हरिहर बख्स सिंह, राजा
हरीदत्त काण्डपाल, श्री
हरीशकुमार गंगवार, श्री
हरीशचन्द्र, श्री
हरीशचन्द्र सिंह, श्री
हरीसिंह, श्री (बुलन्दशहर)
हरीसिंह, श्री (मेरठ)
हिम्मत बहादुर, श्री
हिम्मतसिंह, श्री
हुकुमसिंह, श्री
हेमवतीनन्दन बहुगुणा, श्री
होरीलाल यादव, श्री

नोट—उप मन्त्री, श्री शिवप्रसाद गुप्त तथा उप मंत्री डाक्टर रामनारायण पांडेय भी उपस्थित थे ।

प्रश्नोत्तर

शनिवार, १ अप्रैल, १९६७

अल्पसूचित तारांकित प्रश्न

मोहम्मदपुर, जिला खीरी में गोकशी

श्री विपिनबिहारी तिवारी (जिला सीतापुर)---

***१---क्या मुख्य मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि जिला खीरी में विकास खण्ड कुम्भी के अन्तर्गत ग्राम मोहम्मदपुर (अमीरनगर) में मार्च, १९६७ के द्वितीय सप्ताह में स्थानीय पुलिस द्वारा ५३ गायें वहां के कसाइयों के मकानों में पकड़ी गईं जिसमें ७ गाय कटी हुई तथा ४६ जिन्दा थीं जिसके कारण जनरोष फैला हुआ है ? यदि हां, तो पूरी घटना का विवरण क्या है ?

गृह उपमंत्री (श्री शिवप्रसाद गुप्त)---

दिनांक ११ मार्च १९६७ को जिला खीरी के ग्राम मोहम्मदपुर (अमीरनगर) में कुछ कसाइयों के घरों से चार कटी गायों की खाल तथा गोश्त इत्यादि पुलिस ने बरामद किया था। ग्राम के चौकीदार तथा निवासियों द्वारा उसी दिन ४६ खुली हुई गायें जो गांव में फसल का नुकसान कर रही थीं कांजी हाउस में दाखिल की गई थीं। इस घटना के कारण किसी प्रकार का जनरोष नहीं है।

श्री विपिन बिहारी तिवारी---

क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि उस गांव के अन्दर जो चार गायों की खालें और गोश्त बरामद हुआ है और जो ४६ गायें कैटेल हाउस में बन्द की गयी हैं उसके बारे में क्या पुलिस में कोई रिपोर्ट दर्ज की गयी उस दिन या उसके पहले ? यदि हां, तो उसको आप बता दें।

श्री शिवप्रसाद गुप्त---

श्रीमन्, पुलिस में रिपोर्ट दर्ज की गयी कि ४ गायों की गोकुशी वहां हो रही थी, उन लोगों को गिरफ्तार करके लाया गया। उनमें से दो आदमी भाग गये और उन्होंने भी बाद में आत्मसमर्पण कर दिया। वह पकड़ कर लाये गये और बाद में रिपोर्ट लिखी गयी।

श्री विपिन बिहारी तिवारी---

कृपया रिपोर्ट पढ़ कर सुना दें।

श्री शिवप्रसाद गुप्त---

यह रिपोर्ट ५-६ पेज की है, यदि आप श्रीमन्, आज्ञा दें तो सुना दूं।

श्री अध्यक्ष---

इसे सुनाना कैसे सम्भव हो सकता है।

श्री भुवनेश भूषण (जिला इटावा)---

यह जो ४७ गायें कैटेल हाउस भेजी गयी हैं ये जिस वक्त सर्च ली गयी उस वक्त भेजी गयीं या पहले ही भेज दी गयीं थीं ?

श्री शिवप्रसाद गुप्त---

इस सारे मामले की छानबीन हो रही है कि ये गायें वहीं लोग पकड़ कर लाये थे या ये वैसे ही चर रहीं थीं। विस्तृत जांच पड़ताल होने के बाद ही कुछ कहा जा सकता है।

श्री विपिनबिहारी तिवारी--

अध्यक्ष महोदय, अभी माननीय मंत्री ने अपने उत्तर में कहा कि वहां पर गो-कशी हो रही थी और उत्तर में यह लिखा है कि ४६ गायें वहां के गांव में किसानों की फसलों को नुकसान पहुंचा रहीं थीं और वहां के निवासी तथा चौकीदार ने उन्हें वहाँ पकड़ कर बन्द कर दिया। किन्तु इस समय मंत्री जी कह रहे हैं कि जांच हो रही है। तो मैं जानना चाहता हूं कि सही माने में वस्तु स्थिति क्या है जो मंत्री जी ने कहा वह या जो उत्तर दिया है ?

श्री अध्यक्ष--

उन्होंने यह कहा कि अभी उसकी जांच हो रही है अर्थात् मामला विचाराधीन है।

श्री विपिनबिहारी तिवारी--

उत्तर में तो यह नहीं है कि मामला विचाराधीन है। उसमें तो स्थिति बिलकुल साफ कर दी गयी है। मुझ से यदि साफ पूछा जाय तो मैं बताऊं कि ४६ गायें वहां पर कसाइयों ने बाड़े में बन्द कर रखी थीं और उनको काटने के लिये तैयार थे।

श्री अध्यक्ष--

दोनों उत्तरों में कोई विरोधाभास नहीं है।

श्री हरीश कुमार गंगवार (जिला बरेली)--

क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि जिन मकानों में गोकशी हो रही थी उनके मकान मालिकों या अन्य व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया है ? यदि हां, तो उनकी संख्या क्या है ? और रिपोर्ट के अनुसार जो आदमी भाग गये हैं, उनके सम्बन्ध में वह क्या कार्यवाही कर रहे हैं ?

श्री शिवप्रसाद गुप्त--

जिन मकानों में गायों का गोश्त और हिस्से मिले उन सबको गिरफ्तार कर लिया गया। लाला और गामा उनके भाई भाग गये थे। इन दोनों ने भी २९ मार्च को आत्म समर्पण कर दिया था और वे जेल भेज दिये गये।

श्री प्रतापनारायण तिवारी (जिला गोंडा)--

जिन लोगों को को गिरफ्तार किया गया था वे लोग क्या जमानत पर छोड़ दिये गये हैं ? और यदि हां, तो उनकी जमानत किन लोगों ने ली है ?

श्री शिवप्रसाद गुप्त--

यह सूचना तो मेरे पास उपलब्ध नहीं है, क्योंकि यह अल्पसूचित प्रश्न था और इसकी सूचना शीघ्रता से मंगाई गयी है। इसलिये यह नहीं कहा जा सकता हूं कि अदालत से उनकी जमानत हो गई है या नहीं।

श्री हिम्मतसिंह (जिला बुलन्दशहर)--

थाना घटनास्थल से कितनी दूर है और इसकी सूचना पुलिस को किसके द्वारा और कब मिली ?

श्री शिवप्रसाद गुप्त--

थाने से वह जगह १० मील दूर है। सूचना एक मुखबिर द्वारा प्राप्त हुयी थी। उसका नाम बताना जनहित में नहीं होगा।

श्री रमाशंकर अग्रवाल (जिला आगरा)--

क्या मंत्री जी उस रिपोर्ट का सारांश बताने की कृपा करेंगे ?

श्री अध्यक्ष--

रिपोर्ट का आशय तो उत्तर में अंकित है। ५-६ पृष्ठ की लम्बी चौड़ी रिपोर्ट तो पढ़ना उचित नहीं है।

श्री मन्नालाल (जिला खीरी)—

क्या यह सत्य है कि सभी गायें उन कसाइयों के बाड़े में बन्द पायी गयीं जो कि उस समय तक कटती रहीं लेकिन इस घटना के फौरन बाद इस बाड़े से वह बाहर कर दी गयीं और चौकीदार द्वारा बन्द करवा दी गयीं और क्यों करवायी गयीं ?

श्री शिवप्रसाद गुप्त—

मैंने पहले निवेदन किया कि यह सूचना मेरे पास नहीं है जो खाल और गोश्त मिला वह बरामद किया गया और जो गायें थीं उनको काजीहाउस में बन्द कर दिया गया । अब कसाई उन्हें चुराकर ले गये थे और वह नहीं काट पाये इसलिये भाग गये या और किस ने वहां रखा यह सूचना नहीं है । इसकी जांच की जा रही है ।

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)—

इस घटना के बाद सरकार ने वहां कौन-सी एहतियाती कार्यवाही की जिससे इस तरह की घटना की पुनरावृत्ति न होने पावे ?

श्री शिवप्रसाद गुप्त—

ऐसी घटना जब होती है तब पकड़ा जाता है । उन पर मुकदमे चलाये जाते हैं । अगर माननीय सदस्य जानना चाहें तो सन् ६३ में २८१, सन् ६४ में २६७ और सन् १९६५ में १८८ मुकदमें इस सिलसिले में चलाये गये ।

श्री अध्यक्ष—

यह किसी एक जिले का बता रहे हैं या सारे सूबे का ?

श्री शिवप्रसाद गुप्त—

श्रीमन्, सारे सूबे के यह आंकड़े हैं ।

श्री उग्रसेन—

मैं यह जानना चाहता हूं कि उस विशिष्ट क्षेत्र में क्या एहतियाती कार्यवाही की गयी ?

श्री शिवप्रसाद गुप्त—

किसी विशिष्ट क्षेत्र में किसी विशेष कार्यवाही का होना संभव नहीं है । कानून बना हुआ है और उसकी खिलाफवरजी पर लोग पकड़े जाते हैं और उनपर मुकदमे चलाये जाते हैं ।

श्री हिम्मत सिंह—

जो ४५ गायें थीं वह कांजीहाउस में इसलिये भेजी गयी थीं कि उनका कोई मालिक नहीं था ?

श्री शिवप्रसाद गुप्त—

मैंने बराबर निवेदन किया कि इसकी सूचना मेरे पास नहीं है कि इन गायों का कौन मालिक था । उसी की जांच हो रही है और उसी के बाद यह सब मालूम पड़ेगा ।

श्री भुवनेशभूषण शर्मा—

क्या सरकार यह बतलायेगी कि जो गोश्त और खाल बरामद की गयी, वह कांजीहाउस में गायें भेजने के पहले बरामद की गयीं या बाद में ?

श्री अध्यक्ष—

जवाब में प्रत्यक्ष है कि गायों की खाल और गोश्त तो पुलिस ने बरामद की थी । फिर भी अगर माननीय मंत्री जी के पास सूचना हो तो दे दें ।

श्री शिवप्रसाद गुप्त—

श्रीमन्, वह इस समय तो मेरे पास नहीं है । उसी दिन बन्द किया गया था मेरे पास सूचना है ।

श्री अनन्त राम (जिला बाराबंकी)—

क्या छापा मारने वाली पुलिस में थाने की ही पुलिस थी या जिले के भी पुलिस आफिसर्स थे ?

श्री शिवप्रसाद गुप्त—

जिले के कोई आफिसर नहीं थे। थानेदार के एक मुखबिर ने उसको खबर दी और थानेदार ने अपने सिपाहियों के साथ जाकर उनको गिरफ्तार किया।

श्री विपिनबिहारी तिवारी—

जिस समय थानेदार को सूचना दी गयी उससे कितने समय के बाद वह छापा मारा गया ?

श्री शिवप्रसाद गुप्त—

श्रीमन्, मेरे पास यह सूचना है कि ११ बजे के करीब उनको यह खबर मिली और १ बजे के करीब उन्होंने गिरफ्तारी की और उसके बाद जांच शुरू हो गयी।

उत्तर प्रदेश विधान सभा की विशेषाधिकार समिति का बीसवां और इक्कीसवां प्रतिवेदन†

श्री अध्यक्ष—

तृतीय विधान सभा की विशेषाधिकार समिति, विधान सभा के विघटन के पूर्व, बीसवां तथा इक्कीसवां प्रतिवेदन पर, जो निम्नलिखित विषयों से संबंधित है, स्वीकृति प्रदान कर चुकी थी :

(१) बीसवां प्रतिवेदन—श्री मारविन एच० जिम एवं श्री एस० के० राव द्वारा २० जुलाई, १९६६ को अनधिकृत रूप से कैमरा सहित समाचार-पत्र दीर्घा में प्रवेश करने का प्रश्न।

(२) इक्कीसवां प्रतिवेदन—श्री लक्ष्मी चन्द्र अग्रवाल, रेलवे मजिस्ट्रेट, लखनऊ के न्यायालय द्वारा मांगे गये अभिलेखों के प्रस्तुत करने के संबंध में विशेषाधिकार का प्रश्न।

(१) सदन की बैठक न होने के कारण माननीय अध्यक्ष ने उक्त प्रतिवेदन को स्वीकार करते हुये संबंधित पंजिकायें न्यायालय में भेजने के आदेश १६ जनवरी, १९६७ को दे दिये थे।

(२) समिति द्वारा रिपोर्ट स्वीकृत होने के उपरान्त सदन की बैठक नहीं हुई जिसके कारण उक्त दोनों प्रतिवेदन सदन में प्रस्तुत नहीं किये जा सके।

(३) उक्त दोनों प्रतिवेदनों को अब सदन के पटल कर रखा जा रहा है।

श्री राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद का प्रस्ताव (क्रमागत*)

**श्री अश्वनीकुमार चतुर्वेदी 'राकेश' (जिला मिर्जापुर)—

श्रीमन्, कल मैं यहां पर सदन के समक्ष कांग्रेसी समाजवाद और लोकतंत्र की विशेष व्याख्या कर रहा था। मैंने यह कहा था कि जो हमारे तमाम साथियों ने और माननीय सदस्यों ने उधर से यह कहा कि हम कांग्रेसी लोकतंत्रीय व्यवस्था के हामी हैं, समाजवाद के हामी हैं, उनके लिये मैंने यह कहा था कि आज कांग्रेस के लोग इस अपने लोकतंत्र को देखें। जो आज लोकतंत्र की दुहाई दे रहे हैं वे आज देखें कि प्रदेश में चारों तरफ क्या हो रहा है। आज इस लोकतंत्र के बीच में गरीब और मजदूरों की भूख छिपी हुई है। क्या हमारे कांग्रेसी भाई, जो लोकतंत्र की दुहाई दिया करते हैं, उन्होंने इस बात को महसूस किया है कि आज चारों तरफ

---

†छापा नहीं गया।
*३१ मार्च, १९६७ की कार्यवाही से।
**वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री अश्बनीकुमार चतुर्वेदी 'राकेश']

प्रदेश में किस तरह से त्राहि-त्राहि मची हुई है ? क्या कभी इस लोकतंत्र में जनशक्ति के साथ समुचित व्यवहार करने का प्रयास किया है । पूंजीपति व्यवस्था का सहारा लेकर यह सरकार इस बात को महसूस नहीं करती कि आज चारों तरफ हर वर्ग उनसे अप्रसन्न है । चाहे वह विद्यार्थी वर्ग हो, चाहे किसानों का वर्ग हो, चाहे मजदूरों का वर्ग हो और चाहे कोई भी तबका क्यों न हो, चारों तरफ जनसमुदाय के अन्दर एक भयंकर रोष इस कांग्रेसी लोकतंत्र के प्रति दिखाई देता है । माननीय गोबिन्द सहाय ने कल यहां पर तमाम बातों की व्याख्या करते हुये कहा था कि ३२ प्रतिशत से हम यहां पर आये हैं लेकिन तब भी शासन की बागडोर अपने हाथ में ली है और शासन का उत्तरदायित्व संभाला है। मैं निवेदन करूंगा कि आप जन समुदाय में जाकर और जनता के बीच में जाकर इस बात को जानने का प्रयास करें कि कितने ऐसे लोग हैं जो आपकी इस बात को सुनकर प्रसन्न होते हैं । आज यदि आपने विरोधी पक्ष को इस बात का मौका दिया होता कि वह आकर अपनी सरकार बनाये तो प्रजातंत्र के नाम पर जनता यह महसूस करती कि प्रजातंत्र के आप हामी हैं । जनता यह महसूस कर सकती कि वास्तव में यहां पर प्रजातंत्र की पद्धति चलती है और विरोधी पक्ष को यह मौका होता कि वह अपनी अच्छाई और बुराई रख सकता । दूसरे दलों को अपनी अच्छाई बुराई रखने का पूरा मौका मिलता । मैं समझता हूं हिन्दुस्तान के प्रजातंत्र के लिये यह बड़ा आवश्यक था और समय की सब से बड़ी पुकार थी । समाजवाद के नाम पर जब कभी आप आगे बढ़ते हैं तो एक ओर तो जनशक्ति के नाम पर, स्वतंत्रता के नाम पर और दूसरों की आजादी के नाम पर आये दिन गोलियां चलायी जाती हैं, आये दिन तमाम लोगों को काले कानूनों की तरह जेलों में ठूंसा जाता है । श्रीमन्, मैं आप के माध्यम से माननीय मंत्री महोदय से कहूंगा कि आखिर आप कब इस बात को देखेंगे कि आप की इस प्रशासनिक व्यवस्था में परिवर्तन हो । सवाल इस बात का नहीं है कि आप इस कुर्सी पर हैं अथवा दूसरे हैं । आप इस व्यवस्था में परिवर्तन करने हेतु जिले को इकाई मान कर चलें और जिले तथा गांव को इकाई मान कर अपनी इस प्रशासनिक व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन की व्यवस्था करें । यह अत्यन्त आवश्यक है और यह तुरन्त होनी चाहिये । जिला परिषदों का चुनाव कर के, ग्राम पंचायतों का चुनाव कर के आप हर स्थान पर मंत्रियों की नियुक्ति कर दें तथा एक ही व्यक्ति को जिम्मेदारी कर वसूली की तय कर दें । आप इस शासन को मिटा दें, तहसीलों को समाप्त कर दें । आप क्यों नहीं गांव की तरफ ध्यान देते । इस तरह के आप के त्रिविध शासन में बड़ी अपरिपक्वता रही है और जिस काम को आप हाथ में लेते हैं वह पूरा नहीं हो पाता । अंग्रेजों ने भारत में विभाजित कर राज्य करो की नीति अपनायी थी । ऐसा लगता है कि उसी नीति को आप ने भी अख्तियार किया है । जब कभी समाजवादी परम्पराओं की आप बात करते हैं उस के पीछे इसी नीति की गंध आती है । यद्यपि राज्यपाल महोदय के भाषण में इस ओर इंगित भी किया गया है किन्तु आप ने उस से कोई संकेत नहीं लिया । राज्यपाल का अभिभाषण तो किसी पटवारी का खसरा-खतौनी मात्र मालूम पड़ता है । मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि यदि राज्यपाल महोदय की पटवारी जैसी भावना ही न रही होती तो वे केवल अपनी सरकार की नीतियों का लेखा-जोखा तथा उस के कार्यों का विवरण देने के साथ-साथ कम से कम उस की भविष्य के लिये क्या नीति होगी इस ओर भी कुछ इंगित किये होते ।

आज आप को अपनी योजना में आमूलचूल परिवर्तन करना चाहिये । नीचे से ऊपर तक जनता आप से आशा रखती है, इस प्रदेश के ५४ जिलों की भूखी प्यासी जनता आप से आशा रखती है कि आप उसे संतोष देंगे । आप अपने इस सड़े-गले प्रशासन को सुधारेंगे और इसके लिये मैं आप से कहना चाहूंगा कि प्रशासनिक व्यवस्था में परिवर्तन करने के निमित्त लोकतांत्रिक आधार पर विकेन्द्रीकरण कर के गांवों को इकाई मान कर आप अपने प्रशासन का नये ढंग पर गठन करेंगे । कांग्रेस ने, मैं यह नहीं कहता कि जनतांत्रिक भावना को दफन कर दिया है । अगर ऐसा हुआ होता तो जो बगावत मजदूरों और विद्यार्थियों ने आज की है, और

समाज के हर तबके ने जो आज बगावत कर दी है, वह बहुत समय पहले ही कर दी होती। लेकिन आज जब चार आम चुनावों के दौरान जनतंत्र के लक्ष्य के नाम पर, समाजवाद की स्थापना के नाम पर, राष्ट्र और प्रदेश की सुरक्षा के नाम पर, शक्ति की सुरक्षा के नाम पर, आपने ने जनता से वोट मांगने शुरू किये और सड़कों और गलियों में इस तरह की बात कहनी शुरू कर दीं कि हम जनतंत्र की रक्षा करना चाहते हैं तो मैं कहना चाहता हूं कि आप अपने दिलों को एक बार फिर से टटोलें और देखें कि क्या यह सरकार गरीबों को और गरीब नहीं बना रही है? आप देखें कि नियम और कानून में जो अंग्रेजों के बनाये थें, उनमें परिवर्तन होना चाहिये था वह आप ने बिलकुल नहीं किया, वरन् आपने भारत सुरक्षा कानून को एटम बम बना दिया, प्रिवेंटिव डिटेंशन ऐक्ट को आप ने हाइड्रोजन बम बना दिया और स्पेशल पावर ऐक्ट तथा ऐसे ही दूसरे ऐक्ट्स को, जो जाब्ता फौजदारी के थे, जैसे धारा १०८, १०९, १११ या १२४ ए, जिन के लिए गांधी जी ने भी कहा था कि उन को समाप्त कर दिया जाना चाहिये, उनको आपने बनाये रखा और उन का खुल कर मनमाना उपयोग किया। आज आप उन्हीं सारे कानूनों को ले कर जब प्रजातांत्रिक पद्धति की बात करते हैं तो मैं अपनी सरकार के नेतागणों से कहना चाहूंगा कि आप पहले अपने को बदलिये और फिर आगे बढ़िये।

आज आप के शासन में बड़े लोग बड़े होते गये हैं। बिड़ला जो २५ करोड़ का आदमी था वह आज ५० करोड़ का आदमी बन गया है। समाजवादी और लोकतांत्रिक व्यवस्था के नाम पर आप ने बिड़ला, टाटा और सिंहानियां को पैदा कर दिया है और उन के नीचे गरीब बेचारा मर रहा है। चाहे वह आप की चुर्क फैक्ट्री हो अथवा ओबरा डैम, रिहन्द की स्कीम हो अथवा जमना हाइडिल की, हर जगह गरीब पिस रहा है, उसे खुल कर सांस लेने की गुंजाइश नहीं है। आप कहते हैं इसी प्रकार लोकतांत्रिक आर्थिक व्यवस्था पनपेगी, मैं सीधा-सीधा लांछन नहीं लगाना चाहता, लेकिन इतना कहूंगा कि अगर आप सीधी-सीधी लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना करेंगे तो उस में यदि बिड़ला जी और गुप्त जी को गुप्त वार्ता संभव न हो सके तो, आप को एलेक्शन के लिये, उस के नाम पर, यह ठीक है कि इतनी प्राप्ति न हो सकेगी। बड़े-बड़े लोगों से टैक्स वसूल नहीं करेंगे लेकिन छोटे लोगों पर जुल्म करेंगे। समाजवाद की बात करेंगे, लेकिन कथनी करनी में बड़ा भेद है।

श्री अध्यक्ष—

अब आप समाप्त करें।

श्री अश्वनीकुमार चतुर्वेदी 'राकेश'—

श्रीमन्, २ मिनट और दे दीजिये।

श्री अध्यक्ष—

आज बड़ा मुश्किल है। अच्छा, आप एक मिनट में समाप्त करें।

श्री अश्वनीकुमार चतुर्वेदी 'राकेश'—

तो मैं कहना चाहूंगा' कि कथनी-करनी में भेद मत करो। आज कहते हैं कि हमने चोरी नहीं की, लेकिन 'दोज' व्हू आर बीइंग प्राफिटेड बाई क्राइम्स, आर आलसो गिल्टी। जब सत्य-अहिंसा के नाम पर गोलियां चलायी जाती हों, मैं गांधी जी के चेलों से, सन् ३६ वाले चेलों से पूछता हूं कि क्या यही गांधी जी की नीति थी? गांधी जी ने कभी श्मशान, की खामोशी की बात नहीं कही थी, समाजवाद को केवल कोरा ढोंग नहीं बतलाया था। इसलिये प्रशासनिक व्यवस्था में आप परिवर्तन करिये।

श्री अध्यक्ष—

आपका समय समाप्त।

श्री मोहनलाल गौतम (जिला अलीगढ़)---

अध्यक्ष महोदय, मुझसे पहले अभी जो सदस्य बोल चुके, उन्होंने बड़े जोर से कांग्रेस की उन नीतियों का खंडन किया है और डायर और ओडायर की तरह गोलियां चलाने का जिक्र किया है। जो पहला जमाना था उसमें मुकाबला नहीं हो सकता, क्योंकि उस वक्त सब जगह कांग्रेस की गवर्नमेंट थीं, लेकिन आज के जमाने में मुकाबला बहुत आसानी से हो सकता है। इस वक्त दोनों तरह की गवर्नमेंट बनी हुई हैं। आंज के जमाने में अगर कहीं गोली चली है, कहीं आदमी मरे हैं और जखमी हुए हैं तो वह नान कांग्रेस गवर्नमेंट हैं। अभी जुम्मा जुम्मा ८ दिन हुये हैं जब दोनों तरह की हुकूमतें कायम हुईं, अब देखा जायगा कि क्या होगा।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष---

मैं चाहूंगा कि इधर के लोग, जब भाषण हो रहा हो तो सुनें और आप सब एक दम जो प्रोटेक्शन देने की बात करने लगते हैं वह उचित नहीं है। वह मेरे लिये छोड़ दीजिये, आप के उस कहने से भी व्यवधान होता है।

श्री मोहनलाल गौतम---

अध्यक्ष महोदय, हमारा प्रदेश सबसे बड़ा प्रदेश है, इस वक्त जमाना बड़ा नाजुक है, देश संकट काल से गुजर रहा है और आज इस देश को इकट्ठा रखना, इसमें डिमाक्रेटिक पद्धतियों को कायम रखने का एक इम्तदान है। कहीं लेफ्ट कम्युनिस्ट गवर्नमेंट है, कहीं सोशलिस्ट्स की गवर्नमेंट है, कहीं रिएक्शनरीज और फ्यूडल लार्डस की और कहीं कांग्रेस की। हमारे प्रदेश से कोई बड़ा प्रदेश नहीं है और हमें फख्र है, कि हम किसी से छोटे नहीं हैं इसलिये मैं आपसे निवेदन करूंगा कि हमारे प्रदेश पर बड़ी जिम्मेदारी है। यह प्रदेश भारत है और बाकी सब सूबे हैं। जो प्रथायें, जो परम्परायें यहां बनेंगी उसका सारे देश पर प्रभाव पड़ेगा। इसलिये मैं सदन के सब सदस्यों से निवेदन करूंगा कि अपनी जिम्मेदारी को समझें। ८ करोड़ इनसानों की ही नहीं, ५० करोड़ के नेतृत्व करने की जिम्मेदारी इस सदन के सदस्यों पर है। इसलिये मैं चाहता हूं कि यहां परम्परायें अच्छी डाली जायं।

अध्यक्ष महोदय, राज्यपाल महोदय ने कहा है कि हम ऊंची परम्परायें डालें। यह तभी हो सकता है कि जब हम सब ऊंचे उठें और यह साबित करें कि हम अपना कार्य अच्छी तरह से कर रहे हैं। मैं सबसे पहले यह निवेदन करूंगा कि आप इसके नेता और अध्यक्ष हैं, आप परम्परायें डालेंगे तो वह पड़ेंगी। वह यह है कि आप यह कहें कि आप अब कांग्रेस के मेम्बर नहीं रहेंगे। आप यह एलान करें कि आप कोई पद नहीं लेंगे जोकि सरकार के देने में है। मैं गलत मानता हूं कि स्पीकर को कहीं गवर्नर बनाया जाय। हाई कोर्ट के जजेज को गवर्नर बनाया जाय, यह परम्परा भी अच्छी नहीं है। लेकिन उसी के साथ-साथ मैं इस आदरणीय सदन के विरोधी पक्ष के माननीय सदस्यों से भी निवेदन करूंगा कि वे सब भी यह घोषणा करें कि खेर साहब की तरह आपको (अध्यक्ष को) इलेक्शन में हराने के लिये वे किसी को खड़ा नहीं करेंगे। इस बात का विरोधी दलों को एलान करना चाहिये कि आपका विरोध यह लोग नहीं करेंगे ...

कुछ सदस्य---

नहीं करेंगे, नहीं करेंगे, अपोजीशन की तरफ से उनका विरोध नहीं होगा।

श्री मोहनलाल गौतम---

(अध्यक्ष) से और आपको भी यह कहना होगा कि आप भी स्पीकर हो रहेंगे, और कुछ नहीं, यानी और कोई पद नहीं लेंगे यदि एग्जीक्यूटिव कभी आपको दे। अगर आज से यह हो जाय तो मुझे विश्वास है कि इस सदन को आपके ऊपर बहुत विश्वास हो जायेगा।

[श्री मोहनलाल गौतम]

दूसरी बात यह कि अब वह जमाना नहीं रहा कि जब यहां पर माननीय सदस्य गैर जिम्मेदारी के साथ बात कर सकते थे। अब तो उनका (विरोध पक्ष का) दावा है कि वे सरकार बना सकेंगे, आज नहीं तो कल बनायेंगे। इसलिये उनसे मैं यह प्रार्थना करूंगा कि बजाय इसके कि इस वक्त वे यहां शोर मचायें, (अध्यक्ष को) क्रीटीसाइज करें ....

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)---

यहां तो अभी शोर हुआ नहीं है, गौतम जी बहुत दिनों के बाद यहां आये हैं, शोर तो मदन मोहन वर्मा के जमाने में होता था, अब कहां होता है ?

श्री टम्केश्वर प्रसाद (जिला सीतापुर)---

गौतम जी, ऐसी ही अपील किया करें, यहां कभी शोर नहीं होगा।

श्री मोहनलाल गौतम---

पहले जो यहां शोर होता था उसको मैं अखबारों में ही पढ़ता था और उसी के आधार पर मेरी जानकारी है। मुझे खुशी है कि विरोधी दल के लोगों ने अब यह विश्वास दिलाया है कि शोर नहीं होगा।

अध्यक्ष महोदय आज इस प्रदेश के हालात ऐसे हैं कि इस प्रदेश को एक मजबूत सरकार की जरूरत है। मैं पूछता हूं कि आज विरोधी दल जो कुछ कर रहा है, उसको देखते हुए क्या वह मजबूत सरकार दे सकेगा ? मैं एक छोटी सी बात खाद्यान्न की ले रहा हूं। धन्यवाद के प्रस्ताव पर जो संशोधन आये हैं उसमें से मैं तीन को ले रहा हूं। माननीय रामचन्द्र विकल जी का कोई संशोधन ऐसा नहीं है कि किस प्रकार से अनाज सस्ता हो। किसानों के बारे में जरूर उन्होंने कहा है। तलवार साहब ने अपना दायरा कानपुर तक ही सीमित रखा है और उनका कहना यह है कि वहां सस्ते गल्ले की दुकानों के साथ ही खुली प्राइवेट दुकानों में भी अनाज की बिक्री होना चाहिये यानी प्राइवेट इंटरप्राइज को मौका दिया जाय। माननीय झारखंडेराय ने कहा है कि खाद्यान्नों के संबंध में राष्ट्रीयकरण की घोषणा होनी चाहिये। मैं पूछता हूं आज अगर विरोधी दलों की सरकार होती तो उनकी नीति इस संबंध में क्या होती ? मैं कहता हूं कि इस तरह से सरकारें नहीं बना करतीं, अपोजीशन चल सकता है। मैं आपके द्वारा अध्यक्ष महोदय, विकल जी से पूछना चाहता हूं कि इस संबंध में आपकी नीति क्या होती ? मैं तो अपनी सरकार से भी प्रार्थना करूंगा कि अगर माननीय विकल जी माननीय झारखंडे राय जी के संशोधन को मान लें, खाद्यान्न के व्यापार के राष्ट्रीयकरण के विषय में, और सभी विरोधी दलों के नेता उससे सहमत हो जायं तो यह सरकार उसे मान ले। मैं कहता हूं कि सब साथी बैठ कर एक मत से इस संबंध में ऐलान करें कि आपका दल यह चाहता है, तो मैं नेता सदन से प्रार्थना करूंगा कि वे इसे स्वीकार कर लें। अगर यह भी हो जाय तो मैं समझ लूं कि चलो एक कदम तो हम आगे बढ़े।

हरियाना में हम देखते हैं जनसंघ ने क्या किया। वे मंत्रिमंडल में शामिल नहीं हुए और कहा कि हम उसी उक्त तक समर्थन करेंगे जब तक सब दलों के बनाए कार्यक्रम को पूरा करें। अभी लोहिया साहब ने कहा है कि उनके जो साथी बिहार मंत्रिमंडल में हैं उन्होंने गलत काम किया है। लोहिया ने अपने साथियों को क्रिटिसाइज किया। मसानी साहब ने यह कहा..... (व्यवधान)

अध्यक्ष---

आप लोग कृपया शान्त रहें।

श्री मोहनलाल गौतम--

हम उनके साथ काम कर सकते हैं जो डैमोक्रेटिक सिद्धान्तों में विश्वास करते हैं यानी पार्लियामेंन्ट में ऐसे दल हैं जो प्रजातन्त्र में विश्वास नहीं करते। अगर वे विश्वास नहीं करते तो यहां पर भी कोई ऐसा दल नहीं है जो पार्लियामेंट में तो हो पर यहां न हो। तो मेरी समझ में नहीं आ सकता कि मसानी साहब कैसे काम कर सकते हैं। अन्त में राजगोपालाचारी ने कह दिया है कि स्वतन्त्र और डी० एम० के० का जो हनीमून था वह खत्म हो गया और उसके बाद एक और महत्व की खबर निकली, अध्यक्ष महोदय आपकी नजर से गुजरी होगी, बाम्बे में जनसंघ मैनन को सपोर्ट नहीं करेगा बल्कि कांग्रेस को सपोर्ट देगा। अब यह हालत है। आपने कहा था कि काम कर सकते हैं। परन्तु हरियाना और बिहार में दरारें पड़ गई हैं। जनसंघ ने अपना कैन्डीडेट विदड्रा करके कांग्रेस के कैन्डीडेट को सपोर्ट करना शुरू कर दिया है। जब सिद्धान्त एक न हों, प्रोग्राम एक न हों, सब जगह झगड़े चल रहे हों तो क्या वे मजबूत सरकार दे सकेंगे? अगर दे सकते हैं तो बताएं और कार्यक्रम बतायें। जनता को समझायें तभी हो सकता है, अन्यथा नहीं। आपने जो कार्यक्रम बनाया है उसका दिग्दर्शन विकल जी के १९ संशोधनों से मुझे हो रहा है। उसमें गल्ले को कैसे सस्ता किया जाय उसमें उसका कोई जिक्र नहीं है।

अब मैं एक दो शब्द सरकार से भी कहना चाहता हूं कि वह समस्याओं पर गहराई से विचार करें। मिसाल के तौर पर गन्ना है उसकी तरक्की करनी है। मैं मोटे आंकड़ों में बता रहा हूं। इस प्रदेश में तीस लाख एकड़ में गन्ना बोया जाता है। उसमें से २० लाख एकड़ मिलों के साथ जुड़ा हुआ है। जो दस लाख एकड़ गन्ने की और जमीन है वह हमारे महकमे केन डिपार्टमेन्ट के साथ जुड़ी नहीं है। दूसरी ओर कृषि विभाग कहता है कि हमारा गन्ने से कोई संबंध नहीं है। जो मिलों का एरिया है उनसे गन्ना विभाग संबंध रखता है, लेकिन बाकी जो जमीनें हैं उनके लिये कोई ऐसा महकमा भी नहीं है जो कि बीज भी दे सके। अलीगढ़ में कोई गन्ने का बीज नहीं दे सकता। एग्रीकल्चर डिपार्टमेन्ट दखल नहीं देता है। केन कोआपरेटिव, एग्रीकल्चर कोआपरेटिव और इण्डस्ट्रियल कोआपरेटिव, ये जो अलग अलग महकमें हैं इनको मिला दिया जाय तो सौ करोड़ रुपये की सालाना सहायता और मिल सकती है और ब्याज की दर भी ढाई फीसदी होगी। बदल जायेगा यू० पी० यदि १०० करोड़ रुपया सालाना कृषि और उद्योग पर लगाने के लिये ढाई फीसदी और अधिक मिल जाया करे। इस तरह के महत्व के सवालों को सरकार को अच्छी तरह से देखना होगा कि हमारा जो शासन चल रहा है वह कैसे अच्छी तरह चल सकता है।

श्री अध्यक्ष--

(श्री रामचन्द्र विकल से)

आप कृपया बीस मिनट बोलें।

श्री रामचन्द्र विकल (जिला बुलन्दशहर)--

अध्यक्ष महोदय, इस सदन के अन्दर मैं प्रथम भाषण में भी अनेक सवाल उठा चुका हूं इस आशा से कि हमारी सरकार की तरफ से उनके उत्तर मिलेंगे। मैं अभी तक उन उत्तरों से निराश हूं। बहुत से सवालों के उत्तर अभी भी सरकार की तरफ से नहीं आ सके।

हमारा विरोधी दल कोई सवाल उठाये और सरकार की ओर से जवाब न मिले तो मैं जनतंत्र में और इस विधानसभा के गठन तक में अपने को निराश पाता हूं। मैं नेता सदन से और उत्तर प्रदेश की जिम्मेदार सरकार के मंत्रियों से और उस दल को चलानेवाले जिम्मेदार व्यक्तियों से बहुत विनम्र शब्दों में प्रार्थना करूंगा कि जो विरोध पक्ष की तरफ से आशंकायें उठाई जा रही हैं, स्वयं मैंने और बहुत से माननीय सदस्यों ने भी उठाईं, उन का आप समाधान करें और एक ही बात को बार बार न उठावें कि हम लोग कहां से इकट्ठे हो गये, क्यों

इकट्ठे होगये, हमारे सिद्धांत नहीं मिलेंगे। हमको मौका तो मिला नहीं वरना हम आपको असली रूप से उत्तर देते कि हम कैसे एक हो गये। मैं मोहनलाल जी गौतम से जो मेरे गुरू भी होते हैं, बहुत नम्र शब्दों में निवेदन करना चाहता हूं कि उन्होंने कांग्रेस में समाजवाद दल को हमेशा अलग रखा, कांग्रेस में हमेशा दो दल रहे हैं, इसलिये आप हमारे दल को देखकर भयभीत न हों।

गौतमजी ने उत्तर प्रदेश की हालत की तो ज्यादा चर्चा नहीं की जिसके लिये हम ज्यादा जिम्मेदार हैं, लेकिन हमारे संगठन को लेकर आक्षेप किया और गोली कांड की चर्चा की। शायद उनका मतलब बंगाल से होगा। गैर कांग्रेसी सरकारों के यहां गोली चल रही है यह उन्होंने कहा, मैं गौतमजी की सेवा में निवेदन करना चाहता हूं कि अगर वह उत्तर प्रदेश की तरफ अधिक निगाह डालते तो उनको याद आता कि अभी तक बांदा गोलीकांड के आंसू नहीं सूखे हैं। अभी तक बनारस गोली कांड के आंसू नहीं सूख सके हैं। माननीय कमलापति त्रिपाठी, जो कांग्रेस के अध्यक्ष हैं, उन्होंने कहा था इसी सदन में कि बनारस के गोलीकांड को देखकर सन् ४२ के हालात को हम भूल जाते हैं। तो गोतमजी ने उत्तर प्रदेश के बाहर की चर्चा तो की मगर उत्तर प्रदेश के हालात पर आपने जरा भी दृष्टिगोचर नहीं किया। आज भी आप माननीय महीलाल जी से जो विधायक हैं, उन्हीं की कहानी उनकी जबानी सुनिये कि कैसे मुरादाबाद जिले में आतंक छाया हुआ है और मर्डर के मुकदमे हो रहे हैं। मैं कहना चाहता हूं कि हमको डराइयेगा नहीं। सरकार आपकी है। संयुक्त विधायक दल को आप डराइयेगा नहीं, समझाइयेगा। आप हमें समझाइयेगा, डराइयेगा नहीं। जिस बंगाल गोलीकांड की चर्चा माननीय गौतमजी ने की अभी तक वहां कांग्रेस के बोये हुए बीज हैं जिनके कारण ऐसा हुआ। उस सरकार को तो अभी ४ ही दिन हुए हैं। कांग्रेसी सरकारों के बोये हुए बीज संयुक्त विधायक दलों को काटने पड़ेंगे। बंगाल की घटना के लिये कांग्रेस जिम्मेदार है। आपने बंगाल का उल्लेख तो किया, लेकिन जयपुर को भूल गये।

(शोर)

श्री अध्यक्ष--

आप सब शोर करेंगे तो काम कैसे चलेगा ?

श्री रामचन्द्र दिवेल--

अध्यक्ष जी, मैं आपकी आज्ञा से माननीय गौतमजी के चरणों में निवेदन करना चाहता हूं कि वह तो जयपुर में पुलिस कमीशन के चेयरमैन रह चुके हैं, जरा वहां की ताजी घटना को भी दोहरा देते तो मुझे उनके ऊपर कोई शक नहीं होता। मैं आपको एक निष्पक्ष विचारक की हैसियत से देखता था। मगर आज मुझे कुछ शंका हो गई। आज मुझे शक हो गया है। जाहिर है कि इन दिनों के हालात उन को कुछ ज्यादा कहने के लिये गवाही नहीं दे रहे हैं। लेकिन मैं विश्वास के साथ कहता हूं कि इस सरकार का गठन पूर्ण हो जाय, या तो आप जिम्मेदार पोस्ट पर होंगे वरना आप हमारे साथ होंगे। यह मैं पूर्ण विश्वास के साथ कहता हूं। कोई और रास्ता नहीं है आपके लिये वहां रहने का। मुझे इसके बारे में अधिक नहीं कहना था। मगर चूंकि गोलीकांड का जिक्र पहले आया, तो मुझे भी कुछ कहना पड़ा।

मैं बड़े विनम्र शब्दों में कांग्रेस के भाइयों से कहना चाहता हूं कि आज आपका जो सम्मान है वह हमारे दल के कारण है। संयुक्त विधायक दल के बनने से आपकी कीमत लग रही है। एक एक सदस्य की जो कीमत आज है वह हमारे इकट्ठा होने से ही है और इज्जत भी हो रही है। वरना मैं असलियत जानता हूं, उसी घर में रहा हूं। मैं सब अन्दरूनी कच्चे हालात को जानता हूं। जो सम्मान आपको हमारी वजह से मिला है आप उस पर निरंकुश न हो जाइयेगा, ताड़ना न दीजियेगा। (शोर)

श्री अध्यक्ष---

माननीय चन्द्रदेव यह उचित नहीं है। आप कृपा करके बैठें। मैं इधर के माननीय सदस्यों से भी कहूंगा कि यदि उधर से कोई सदस्य हल्ला करें तो वे उसमें सहयोग न दें, तो अच्छा हो।

श्री रामचन्द्र विकल---

मैं यह इसलिये कह रहा हूं कांग्रेस के भाइयों से, कांग्रेस के सदस्यों से, नेता सदन से भी, कि विधान सभा के बाहर, कांउसिल में, विधान सभा में और पत्रों में बार-बार कांग्रेस की तरफ से मेरे ऊपर आक्षेप दिया गया है कि मैं उनका हूं, इसलिये मैं अपनेपन से ही उनसे कुछ बात कह रहा हूं। जब मैं अपनेपन से कांग्रेस में होते हुए कहता था तो आपने मेरी बातों पर विचार नहीं किया। अगर आज भी आप मुझे अपना मानते हैं और मैं यहां बैठा हूं आपकी ठोकर से और विरोधी दलों का सभी का कृपा-पात्र हो कर, तो आप यहीं से मेरी बात को मान लें। मैं आपके हित की बात कह रहा हूं। मैंने उस दिन भी कहा और आज फिर कहता हूं कि संयुक्त विधायक दल के साथ इस ८ करोड़ जनता का प्यार है, उसका आशीर्वाद इसे प्राप्त है और विश्वास प्राप्त है। वह आप के पास नहीं है। कनफ्यूशियस के शब्दों में वह सरकार नहीं रह सकती जिसे जनता का विश्वास प्राप्त न हो। जो जनता का विश्वास, प्रेम और सहयोग संयुक्त विधायक दल को प्राप्त है वह कांग्रेस सरकार को नहीं है। काश आपने यह बात मानी होती और संयुक्त विधायक दल की सरकार यहां बनी होती तो कांग्रेसी की ताकत अच्छी तरह से बढ़ती। आपने स्वेच्छा से इस बात का परिचय तो नहीं दिया। लेकन मैं यह विश्वास के साथ कहता हूं।

कृष्णानन्दरायजी ने इंग्लैंड की और दूसरे महायुद्ध की चर्चा की इस धन्यवाद के प्रस्ताव को पेश करते हुए। उन्होंने सब कुछ तो कहा मगर अंग्रेज कौम के कैरेक्टर की चर्चा नहीं की। जब उस अंग्रेज कौम ने यह समझ लिया कि यहां की जनता का उसे विश्वास नहीं है और वह उसे नहीं चाहती है तो वे हिन्दुस्तान छोड़कर चले गये। आप यह देखते हुए भी कि उत्तर प्रदेश की जनता आपके साथ नहीं है आप गद्दी नहीं छोड़ता चाहते हैं। कृष्णानन्द रायजी ने चर्चिल का जिक्र करते हुए कहा कि वह लड़ाई जीतने के बाद भी प्राइम मिनिस्टर नहीं बना। मैं उस युद्ध की ही बात कहना चाहता हूं जिसका सहारा कृष्णानन्दरायजी ने लिया। युद्ध के जमाने में इंग्लैंड में १० प्रतिशत से अधिक चीजों के दाम नहीं बढ़े। यह था अंग्रेज का कैरेक्टर। लेकिन आपके शुभ कदम जिस दिन से यहां आये हैं, मैं माननीय गौतम जी से विनम्र शब्दों में कहना चाहता हूं, चीजों के भाव बढ़े हैं। मेरे संशोधनों में भले ही उनको यह चीज देखने को न मिली हो, लेकिन वह गांवों में किसी बेचारी बुढ़िया से भी जाकर पूछ सकते हैं और वह जानती है कि जब संयुक्त विधायक दल की सरकार बनने की बात चली तो चीजो के दाम गिरे।

मैंने उस दिन गेंदासिंह जी का बयान सुना था। उन्होंने बड़ी हिम्मत के साथ कहा था....

एक सदस्य---

आपका रास्ता क्या है ?

(शोर)।

श्री रामचन्द्र विकल---

मैं विनम्र शब्दों में कहना चाहता हूं कि पहले यह सरकार हटे, तब यह हमारा रास्ता देखें। हम अमली सबूत देना चाहते हैं। यह है सबसे सही रास्ता। गेंदासिंह जी ने कहा था, जो सौभाग्य से इस समय खाद्य मंत्री भी हैं, कि छापे मारने के लिये उन्हें नेता सदन का पूर्ण विश्वास प्राप्त है। नेता सदन ने विरोधी दल वालों को जलपान के लिये बुलाया था और खाद्य समस्या हमारे सामने रखी। इसमें कोई संदेह नहीं कि संयुक्त विधायक दल का प्रदेश की खाद्यान्न समस्या को हल करने में पूर्ण सहयोग होगा, यह हमने नेता सदन से कह दिया था और माननीय नेता सदन ने उस वक्त कहा था कि हमने जिलाधीशों से पूछ लिया है, कुछ मिलता

मिलाता तो है नहीं। यही उनके शब्द थे। हमारे पास सरकारी ताकत तो है नहीं। लेकिन हम नेता सदन से अर्ज करते हैं कि वे किसी जिलाधीश से लिखवा कर मंगा लें कि उनके यहां गल्ला नहीं है तो संयुक्त विधायक दल के स्वयं सेवक सरकार को बतायेंगे कि गल्ला कहां है। आप के छापा मारने से पुलिस और राज्य कर्मचारियों की रिश्वत बढ़ी है। जनता को उससे लेश मात्र भी लाभ नहीं हुआ। क्यों? जैसा कि मैंने पहले ही कहा था कि घोड़ा सवार को पहचानता है। आपकी असलियत सारे प्रदेश की जनता को मालूम है। हमने माननीय नेता सदन को विश्वास दिलाया था कि हम जनता, व्यापारियों और अन्य लोगों से पूछ कर आपको बतायेंगे। लेकिन हम इन्तजार ही करते रहे, हम से पूछा नहीं गया और आपने एक फैसला ले लिया और आपकी तलवार किसान के ऊपर पड़ी। अब आप उनसे अनाज वसूल करेंगे। आपने यह नहीं बताया कि वह आप किस भाव लेंगे और किस प्रकार से उनको वसूल करेंगे। इस पर भी आप हमसे सहयोग चाहते हैं। • लेकिन मैं आपको स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि सरकार की गलत नीतियों का, जो जोर जबरदस्ती के साथ जनता के साथ अमल में लायी जायेंगी, हम डट कर मुकाबला करेंगे। जिन लोगों ने गिरानी के लिये आवाज उठायी उनको तो आपने हथकड़ी डालकर निकाला और जो गल्ला गोदामों के मालिक थे, बड़े आदमी थे, उनको बिना हथकड़ी के पकड़ कर ले जाया गया। इस पर भी दावा यह है आप खाद्यान्न समस्या को हल करना चाहते हैं। खाद्यान्न समस्या की मूल जड़ हमारा किसान है, उसको आप उपेक्षा की नजर से देखते हैं। आप भीख मांगते हो अमेरिका आदि दूसरे देशों से लेकिन किसानों की आप उपेक्षा करते हैं। काश कि आपने किसानों को महत्व दिया होता। आपकी गलत नीतियों का ही यह नतीजा है कि हमारा खेतिहर प्रदेश दाने-दाने का मोहताज हो रहा है। हमने अपने प्रोग्राम में यह रखा है कि जो भी अलाभकर योजनायें हैं उनको हम समाप्त कर देंगे। आपकी योजनायें कैसी हैं? एक छितौनी बांध है जिसकी तिवारी जी बड़ी चर्चा किया करते हैं। मैंने उसके बारे में कुछ अध्ययन किया। हमारे चीफ इंजीनियर जो इस वक्त हैं, श्री जे० एस० गुप्ता मैंने उनका बयान पढ़ा समाचार पत्रों में। उन्होंने कहा है कि इस बांध की जरूरत ही नहीं थी। इस बांध पर ५८ लाख रुपया की लागत आयी लेकिन उसकी मरम्मत पर खर्च किया गया डेढ़ करोड़ रुपया। अब दो वर्षों में जो उसकी मरम्मत होगी उस पर ३ करोड़ रुपया खर्च किया जायगा। जब कि वहां एक सब डिवीजन पहले था और एक एस० डी० ओं० इनचार्ज था अब उसको एक सर्किल ही बना दिया गया है। १६ एस० डी० ओ० हैं, ४ एक्जीक्यूटिव इंजीनियर हैं, और एक सुप० इंजीनियर है। इसके बारे में मैं एक सुझाव देना चाहता हूं, वह यह है कि बड़ी गंडक की दो धारायें हैं। उसकी एक धारा ५ मील से ज्यादा लंबी नहीं है, उसको आसानी से बंद किया जा सकता है। एक धारा के बन्द करने में ५० लाख रुपया खर्च होगा और उसी से मरम्मत का यह ढाई करोड़ रुपया बच सकता है लेकिन यहां तो इन फजूलखर्चियों को रोकने वाला कोई नहीं है। माता टीला बांध की बात कही जाती है, उसकी आज के जो चीफ सेक्रेटरी श्री बी० बी० लाल साहब हैं उन्होंने जांच की, प्रयाग नारायण साहब जो डिप्टी चीफ इंजीनियर हैं उन्होंने जांच की और श्री धनानन्द जी जो वाइसचांसलर, रुड़की यूनिवर्सिटी हैं उन्होंने भी उस की जांच की। उस में एक करोड़ रुपए का गबन है। मैं सरकार से जानना चाहता हूं और मैं चाहता हूं कि आज ही सरकार की तरफ से कोई जिम्मेदार व्यक्ति उत्तर दे कि पिछले सात साल में कितना व्यय इस पर हुआ है और स्टाफ पर कितना व्यय हुआ है, कितना काम हुआ है, कितना गबन हुआ है, कितनी कीमत की मशीनें आईं, कितने का स्टोर वहां है और मिट्टी के बांध पर उसके धरातल पर जमीन की सफाई में कितना पैसा खर्च हुआ है। ऐसा मालूम होता है कि उत्तर प्रदेश का जैसे कोई पुरसांहाल ही नहीं है।

यहां के गोमती के बांध के बारे में मैं कई बार कह चुका हूं। भैंसाकुंड के पास ऐप्रोच रोड ६०–७० लाख में बन सकती है लेकिन ढाई ३ करोड़ रुपया लखनऊ में गोमती पर पुल आदि बनाने में खर्च किया जा रहा है, । उसका क्या असर शहर पर होगा क्या नहीं यह

[श्री राम चन्द्र विकल]

नहीं कहा जा सकता । हमारी बात तो कोई सुनता नहीं । हम ने बड़े-बड़े लोगों को इस विषय में लिखा लेकिन अब कहा जाता है कि अब तो योजना चालू हो गई, कुछ व्यय भी शुरू हो गया अब कैसे उसको रोका जा सकता है । हमें उम्मीद थी कि आप इस को रोकते और करोड़ों रुपया जो पानी की तरह बह रहा है वह रुकता ।

किसानों की तरफ किसी का ध्यान नहीं जाता । आज सर्वे डिवीजन में २०० इंजीनियर मौज उड़ा रहे हैं । मैं कहता हूं कि आप उनको लखनऊ से निकाल कर किसान की गूलों की मरम्मत, नालियों की मरम्मत पर लगा दीजिये तो मैं आपसे वादा करता हूं कि एक साल के अन्दर पैदावार दुगुनी हो जायगी । यहां इंजीनियर्स का क्लब बनाया गया, १८० इंजीनियर्स उसके मेम्बर हैं जो लखनऊ में रहते हैं । उन का स्थान आज क्लबों में नहीं है, उन का स्थान किसान के खेतों पर है । आज कौन इंजीनियर देहातों में जाकर दौरा करते हैं, कौन खेतों पर जाकर देखता है, किसको मालूम है कहां पानी बिना खेत सूखते हैं । योजनाओं के नाम पर पैसे की लूट मची है, फजूलखर्ची का बोलबाला है । नारौरा पर डेम में डेढ़ करोड़ रुपया लगा और गंगा में मशीन बिठाई गई और करोड़ों रुपए का व्यय इस बांध पर भी किया गया । उसकी इंक्वायरी हुई लेकिन जब अफसरों के बारे में कहा गया तो एक मंत्री जी ने तो यहां तक कह दिया भाई क्यों पीछे पड़े हो, एस० ई० का तो इस चक्कर में हार्ट फैल हो जायगा, उस के पीछे न पड़ो । मेरा तो कहना है कि जो भी अफसर या इंजीनियर जनता के हित के खिलाफ एक भी पैसा इस तरह से लुटाते हैं उस को अगर फांसी भी दे दी जाय तो वह जनता के हित में होगा । लेकिन इस दिशा में यहां अभी न देखा गया है और न सोचा ही गया है ।

यह छापे मारना ही कोई खाद्य समस्या का हल नहीं है । आप अपने यहां का उत्पादन क्यों नहीं बढ़ाते ? आज मैं प्रदेश के कृषकों की तरफ से जिम्मेदारी लेता हूं कि अगर उस को सुविधा खेती की मिलेंगी तो वह पैदावार दुगुनी करेगा । लेकिन यहां तो सारे कर किसानों पर लगेंगे, कोई भी कमी नहीं होगी, कनेक्शन बिजली के उनको नहीं दिये जायेंगे । किसान आज उत्पादन बढ़ाने के लिये कटिबद्ध हैं लेकिन बगैर साधनों के वह करे क्या ? सरकार कमान्ड क्षेत्र बढ़ाती जाती है लेकिन न नलकूपों से पानी मिलता है और न नहरों में पानी पहुंचता है, न निजी नलकूपों को आप बिजली देते हैं तो फिर पैदावार कहां से बढ़ेगी ? सरकारी साधन हैं नहीं और निजी भी आप सफल न होने दें तो फिर क्या हो ? यह सब भाषण तो अब बहुत दिन हो चुके, अब लोग तबाही के आखिरी कगार पर खड़े हैं ? केवल एक ही रास्ता है कि पैदावार बढ़ाई जाय और उसके लिये सब काम रोक कर साधन दिये जायं । आखिर यह महंगाई क्यों हुई ? नेता सदन ने कहा कि केन्द्र ने गल्ला देने के लिये मना कर दिया और उनका कहना अब यह है कि खरीफ तक के लिये इंतजाम करना है, केन्द्र नहीं देगा । प्रधान मंत्री जी ने प्रदेश और बिहार में कहा है कि जितना हो सकेगा हम करेंगे । तो ये विरोधाभास के बयान हम रोज सुनते हैं । आज तो हमारे देश में माननीय रफी अहमद साहब जैसे व्यक्ति की जरूरत है जिनकी एक आवाज पर बंगाल का चावल बाहर निकल आया । आज भी आपका गल्ला नैपाल और चीन जाता है और आप उसको नहीं रोक पाते हैं । छोटी लाइन के कुछ व्यापारियों ने मुझे बताया कि इस प्रदेश से गल्ला बिहार में जाता है, उन इलाके से होकर आप गल्ले को बिहार, राजस्थान और मध्य प्रदेश में जाना नहीं रोक सकते हैं, केन्द्र से गल्ला ले नहीं सकते और किसानों को पैदावार बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित नहीं करते तो समझ में नहीं आता कि गल्ला प्राप्त होने का और क्या तरीका हो सकता है । क्या सुझाव चाहते हैं, हमारे माननीय गौतम जी ?

श्री मोहन लाल गौतम---

यहां पर डिस्ट्रिब्युशन की बात कही गयी थी न कि प्रोडेक्शन की ?

श्री रामचन्द्र विकल---

इस संबंध में मेरा स्पष्ट कहना है कि पैदावार बढ़ाने के बाद बटवारे की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी । आपको चाहिए कि आप पैदावार बढ़ायें ।

सुपर मार्केट जो लखनऊ में बना है, उसके बारे में भी सदन को जानकारी कराना चाहता हूं। वहां पर कीमतें रोज बढ़ाने कौन आता है ? दूसरी बात मैं यह भी जानना चाहता हूं वहां पर सामान के लिये कौन खरीदार आते हैं ? ज्यादातर वहां पर बड़े लोग ही आते हैं जिनके पास सवारी है। छोटे आदमी वहां पर नहीं पहुंच पाते हैं क्योंकि वे तो अपनी आवश्यकता की चीजें बाजार से ही ले लेते हैं। लेकिन वहां पर भी रोजाना दाम बढ़े ही हैं।

यहां पर माननीय कृष्णानन्द राय जी ने संयुक्त विधायक दल को कमरे देने पर बड़ी आपत्ति की। वे सरकार के बड़े हिमायती रहे हैं लेकिन मैं तो उनसे निवेदन करना चाहता हूं कि क्या उनको इस बड़ी हिमायत का कोई मुआविजा मिला ? मैं सरकार से कोई याचना नहीं करूंगा चाहे हमें सीधे अपने कमरों से ही यहां आना पड़े। ऐसी बातें लेकर आप हमें नहीं समझे हैं। कुछ लोग यहां पर ऐसे हैं जिनको मकान बनाकर सस्ते किराये पर दिए गये हैं और अगर वे चाहें तो उनको इनकी एक सूची दी जा सकती है। यहीं पर मिल्क बोर्ड में एक आदमी को मिनिस्टर का स्टेटस दिया गया। आप अपने हारे हुए लोगों को तो सस्ते किराये पर मकान देंगे और यदि हम कमरे की मांग करते हैं तो आपको अखरता है। बहुत से हारे हुए सदस्य १०-१० साल से बारहलशका में रह रहे हैं, क्योंकि उन पर आपकी विशेष कृपा है। इसलिये आप इस तरफ भी सोचें। कुछ ऊपर से शुरुआत करनी होगी।

चुनाव में भी चर्चा हुई और यहां पर भी कई बार कहा गया कि हमने दो लड़ाइयां लड़ीं और जीतीं। भूतपूर्व मुख्य मंत्री, श्रीमती सुचेता कृपालानी जब मेरी कांस्टीट्यूएन्सी में गयीं तो उन्होंने वहां लोगों से कहा कि निर्बलीय सदस्यों को वोट मत दो लेकिन मैं कहता हूं कि क्या उन्होंने कभी दादा को भी समझाया या दादी वहां की जनता को ही समझाने गयी थीं। कांग्रेस वालो, यह देश के साथ धोखा है ? युद्ध जीतने में सेना का बहुत बड़ा हाथ है, सिपाहियों का हाथ है और इस विरोधी पक्ष के सारे नेताओं का है। आप अकेले इसका क्यों श्रेय लेते हो और वह भी चुनाव के लिये या समस्या को सुलझाने के लिये। युद्ध तो ऐसा खतरा है जैसा मैं खाद्य समस्या को समझता हूं जिसको सारे देश को मिल कर रोकना पड़ता है। आखिर इम्तहान हुआ, कौन पीछे रहा उस लड़ाई में? चन्दा दिलाने में, भरती कराने में, अमन कायम कराने में, अंधेरे में एक दूसरे को रेल गाड़ियों में सहयोग दिया, सभी ने सहयोग दिया, अकेले कांग्रेस उसकी भागीदार क्यों बनती है ? मैं कहता हूं कि यह देश की एकता को खतरा है। हां, हम देश की राष्ट्रीय समस्या पर आप का साथ देंगे, यह हम विश्वास दिलाते हैं मगर श्रेय आप अकेले लेंगे तो हम आप को चैक करेंगे और अगर फिर भी आप नहीं मानोगे तो जनता आप को श्रेय देने वाली नहीं है।

एक मंत्री महोदय ने जेल की बड़ी बुराई की। बड़े जेल यात्री उधर हैं। २० वर्ष आप ने उसकी कमाई खाली, मान जाओ अब समय नहीं रह गया। और अगर जेल की बात ही रहती तो भगत सिंह की मां और बहन को मैंने नैनीताल में देखा, तुमने उनकी कीमत नहीं समझी, सुभाष चन्द्र बोस की कीमत नहीं समझी, चन्द्र शेखर आजाद की कीमत नहीं समझी, चन्द जेल यात्री हैं जिन्होंने नाजायज फायदा उठा लिया है। क्या विरोधी पक्ष के लोग जेल नहीं गये ? कुछ आप की सरकार के जमाने के जेल गये हुए लोग हैं, इसलिये हमारी तरफ तो ज्यादा जेल यात्री बैठे हुए हैं, इधर तो डबल जेल यात्री बैठे हुए हैं। जेल यात्रा का बहुत दिन तक मुआवजा न उठाओ, अब उसको बन्द कर दो, समय नहीं रहा। जरा मैं पूछ लूं कि केन्द्र में राष्ट्रपति से लेकर यहां कितने जेल यात्री आप ने ले रखे हैं ? और जिन को टिकट दिया उनमें कितने जेल यात्री थे ? मैं जानता हूं क्योंकि मैं तो उसी घर का हूं। कहीं पुराने पोलिटिकल सफरर्स का सम्मेलन होने लगा तो गौतम जी कुछ दिलचस्पी रखते थे मगर देश के राजनीतिक पीढ़ितों को उतना योग नहीं दिया जितना देना चाहिये था, उन्होंने सम्मेलन बुलाया, तो नेता मुश्किल से मिला उन सम्मेलनों के लिये।

[श्री रामचन्द्र बिकल]

मैं नेता सदन से और कांग्रेस के सभी साथियों से बहुत विनम्र शब्दों में कहना चाहता हूं कि प्रदेश और इस देश की राजनीति एक बारूद के ढेर पर खड़ी हुई है, उसमें प्रेम, सहयोग और सद्भावना की सख्त जरूरत है इस वक्त। छोटी-छोटी बातों को लेकर हमारे इस संगठन पर बड़े बड़े प्रहार आप न करें। हमारे संयुक्त दल के जो सदन से संबंधित लोग हैं वह भी और जो विभिन्न दलों के नेता इस देश भर के हैं वे सब उन दिनों जमा रहे। बहुत बहुत योग्य आदमी हैं, आप से कम हो सकते हैं यह मैं मान सकता हूं, क्योंकि मंत्री होने से जरा योग्यता बढ़ जाती है, स्वभाव सा बन गया है। लेकिन पुराने नेता और भुक्त भोगी भी हैं और सब से बड़ी बात यह है कि आपने तो राज कर लिया और राज के बाद नरक का नम्बर आता है "तपेश्वर सो राजेश्वर, राजेश्वर सो नरकेश्वर"। अतः आप तो राज करके नरक के रास्ते पर हैं, लेकिन ये लोग राज के रास्ते पर हैं। हमारे सारे नेताओं ने, जब सरकार बनाने की सम्भावना थी तब भी, कोई शर्त नहीं रखी जरा भी, एक भी शर्त नहीं रखी। जो लोग यह कहते थे कि हम सहयोग करेंगे, सरकार में नहीं जायंगे, वे याचना करते थे कि यह दूर का सहयोग नहीं होगा, नजदीक का सहयोग होगा। पार्टियों के नेताओं से पूछ कर फैसला किया गया। सरकार बनाने का मौका आवे तो किसी ने मंत्री बनने की बात नहीं कही। लेकिन वेतन के बारे में कहा। नेता सदन से फिर कहता हूं कि तिथि वथा तादाद को घोषित कर दें फिर देखियेगा इस मेढक तौल को। कांग्रेस के दो बैठेंगे तो चार निकल जायेंगे। कितना ही वक्तव्य दो कि हम सब एक हैं, फूट नहीं डाली जा सकती लेकिन मैं उस घर का भेदी हूं। मुझे मालूम है आप एक हो ही नहीं सकते मंत्रि-परिषद् बढ़ाने की तारीख के बाद। ज्यादा हम पर शक मत करो। अपने कुटुम्ब को भी संभालो और कब तक संभाल पाओगे? आज विरोधी पक्ष क्यों संभल संभल कर बोलता है। हम जिम्मेदारियां महसूस करते हैं। इतना विश्वास के साथ कह सकता हूं कि इस संयुक्त विधायक दल को सरकार चलाने का मौका मिला तो कांग्रेस ने अपने २० वर्ष के शासन में जो करके नहीं दिखाया वह यह २० महीने में कर के दिखायेगा। यह कोई काल्पनिक बात नहीं कह रहा हूं। मैं निराश नहीं हूं, आशा के साथ कह रहा हूं, एक विश्वास के साथ कह रहा हूं कि जनता २० वर्ष के कारनामों को २० महीनों में भूल जायगी। हमको मालूम है कहां कहां गलतियां आपने की हैं। हमारी वजह से नहीं, आपकी वजह से यह सब होगा। इसलिये हमसे भी ज्यादा आप सतर्क रहें। हम तो संभल संभल कर कदम कदम पर चलना चाहते हैं क्योंकि हमको ८ करोड़ जनता की सेवा करनी है। हम सरकार बनाने के लिये कोई उजलत में नहीं है, कोई इच्छा या आकांक्षा नहीं है लेकिन जब बराबरी के दर्जे पर आये हैं तो फिर पीछे हटने वाले भी नहीं हैं। यह सोचना आपका गलत है कि बहुत से दल हैं तो नहीं चला पायेंगे। समस्याओं का हल आपके पास नहीं है, हमारे पास समस्याओं का हल है। हमें मालूम है कि बजट कहां से लायेंगे। २३ करोड़ लगान किसानों का माफ करेंगे। ३१ करोड़ तो आपका बकाया है सन् ६४ की आडिट रिपोर्ट के हिसाब से जिसे आप वसूल नहीं कर सके। ४ करोड़ प्रोफेशन टैक्स और ४ करोड़ भूमि भवन कर भी माफ होगा। आप समझते है कि हमारे पास बजट नहीं है लेकिन मैं आपको बतलाता हूं कि हमारे पास बजट है। मैंने पहले भी कहा था और आज भी कहता हूं कि सही लोगों पर टैक्स लगाया जाये। लेकिन आप क्यों लगायें उन पर जब कि वे जन्म दिन पर आपको थैलियां देते हैं? आप अपना जन्मदिन थैलियों से मना सकते हैं, हम गरीबों का जन्म दिन भले ही न मने लेकिन इस प्रदेश की गरीब जनता की सेवा करने के लिये इस संयुक्त विधायक दल का एक एक सदस्य तैयार है। आप टैक्स लगायेंगे लेकिन टैक्स कोई चोरी करे तो उसे माफ कर देते हैं और उसे वसूल नहीं कर पाते। मैंने कुछ योजनाओं की चर्चा की जिनमें पानी की तरह से आप रुपया बहा रहे हैं, उनको बन्द करना होगा। आपने सरकारी कर्मचारियों को कुछ आश्वासन दिये थे। लेकिन आज फिर एक चेतावनी शुक्ल जी की तरह से आई है उसे भी जरा आप देखें। कर्मचारियों का पूर्ण सहयोग है। जनता के एक-एक

आदमी की आज यह आकांक्षा हो रही है कि कांग्रेस सरकार हट जाय और गैरकांग्रेस सरकार आ जाय, यह जानकारी करनी हो तो सी० आई० डी० से आप कर लीजिये। और आप अंग्रेज जैसा कैरेक्टर रखते हैं तो समझदारी से यह कुर्सी छोड़ दें। तब आप देखेंगे कि प्रदेश की हालत पर असर होता है या नहीं। हम किसी भी हालत में पीछे हटने वाले नहीं हैं।

इन शब्दों के साथ मैं पुनः प्रार्थना करूंगा कि विरोधी दल का सहयोग अगर आप लेना चाहते हों तो हम देंगे, लेकिन सहयोग लेने की योग्यता और क्षमता आप में होनी चाहिये। अगर आप हमारी उपेक्षा कर के सहयोग लेना चाहें तो हम हरगिज देने वाले नहीं हैं।

*न्याय मंत्री (श्री लक्ष्मीरमण आचार्य)—

अध्यक्ष महोदय, बहुत आशा के साथ मैं नेता विरोधी दल के भाषण को यहां सुनता रहा। मैं एक विभागीय मंत्री हूं इस सदन की और मेरी इच्छा थी कि मेरे विभाग के संबंध में जिन चीजों की चर्चा हुई थी मैं पहले उनका उत्तर दे लेता और मैं इस सदन को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि जो आलोचना या जो चर्चा कुछ विभागों की यहां हुई मैं उनका उत्तर अवश्य दूंगा किन्तु मैं एक लोभ का संवरण नहीं कर सकता और मैं एक प्रकार से कुछ थोड़े से अनमने भाव से अपने नेता विरोधी दल की कुछ बातों का उत्तर देना चाहता हूं।

मैं अत्यन्त विश्वास के साथ कहता हूं कि मेरी इच्छा थी कि वे कुछ कहते सदन के सामने, किन्तु मुझे माफ कर दिया जाय उस भाषा के लिये कि सड़कों पर चूरन वाले चूरन बहुत बेचते हैं और मुझे माफ करें मेरे मित्र, थोड़ा सा सुनने की कृपा करें, चूरन बहुत बिकता है और चूरन के ३६ गुणों का बखान बहुत होता है। अब एक ही चूरन बिकने लगा है कि सरकार बन जाय विरोधियों की। इस चूरन की भी यही भावना है कि जितनी खराबियां हैं, अकाल पड़ता है, भुखमरी होती है या जो कुछ राज्य में होता है, इस सब का एक मात्र राम बाण चूरन है कि विरोधियों की सरकार बनाओ। जितनी आज कठिनाइयां हैं इस प्रदेश के सामने, जितनी कठिनाइयों में ऐतिहासिक स्थल पर यह समस्त देश खड़ा है, जितने दुरूह मार्ग पर और जितनी फिसलने वाली कगार पर आकर इस देश की जनतांत्रिक प्रणाली खड़ी हो गयी उनके संबंध में, श्रीमन्, कहीं एक चर्चा नहीं है, किन्तु चर्चा केवल यह आयी है कि इस प्रदेश में भी एक विरोधी पक्ष की सरकार बन जाय। और सरकार कैसे बन जाय? ऐसे बन जाय कि हम १८८ और तुम १९८ और अगर कुछ निर्दलीय इधर साथ में आकर मिले जाय तो उनको धका दो लेकिन सरकार हमारी बनाओ। अगर कोई निर्दलीय यह कहे कि मित्रो, क्यों व्यर्थ की बातें करते हो, चुनाव तुमसे भी लड़ा हूं, अगर कोई निर्दली यह कहने लगे कि मुझे आप पसन्द नहीं हैं, इस सब के लिये केवल एक चूरन मौजूद है कि हमारी सरकार बन जाय। मुझे एक दुःख भी हुआ अपने एक मित्र से। वह मेरे व्यक्तिगत मित्र हैं और मुझे यह अधिकार है कि मैं उस दुःख को इस सदन के सामने रखूं। जिस दिन तक श्रीमान् राम चन्द्र जी विकल साहब कांग्रेस में थे उस दिन तक उधर के लोग चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, सुभाषचन्द्र बोस, महात्मा गांधी, इन सब की कद्र करते रहे। लेकिन जिस दिन हमने उन्हें टिकट नहीं दिया, वह विरोधी बन गये, हमने सबकी कद्र करना छोड़ दिया। अगर उनको टिकट मिल जाता और वह हमारे साथ में आकर बैठते तो हम जरूर इस चित्र की कद्र करते जिनकी छात्रछाया में यह सारा सदन आज यहां पर बैठा है। लेकिन मेरे मित्रों को आज जो वैधानिक मार्ग है उसके लिये तसल्ली नहीं है। निर्दलीय, सदस्य आपके साथ जाकर बैठे तो हमें क्या एतराज है, आप चुनकर आ जाइये हमें क्या एतराज है, किसी दिन भी जब आपका बहुमत हो जाय हमसे कहिये हम इधर जाकर बैठ जायंगे। हमें उधर बैठने की बहुत आदत रही है उस दिन जब ब्रिटिश संगीन के नीचे इस देश का शासन चलता था। हमें आदत उस दिन की रही है जब आपके स्थान पर कुछ माननीय व्यक्ति बैठा करते थे और जब हम बोला करते थे तो हमको जेलों में धकेल कर हमारे परिवार को तबाह किया जाता था। लेकिन अपने मित्रों की संगीन के नीचे बैठने में हमें एतराज नहीं होगा।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया।

श्री अध्यक्ष---

माननीय आचार्य जी आप पुराने जमाने का ठीक से खयाल कर लें मेरे खयाल से इस आसन से ऐसा कभी नहीं हुआ ।

श्री लक्ष्मीरमण आचार्य---

श्रीमन्, जैसा कि मैंने प्रारम्भ में ही कहा था कि मेरी इच्छा नहीं थी कि मैं इस विवाद में जाऊं । लेकिन मैं अपने लोभ का संवरण न कर सका । इसके लिये मैं क्षमा मांगता हूं ।

आज मैं प्रदेश के राजस्व मंत्री के नाते कुछ कटु तथ्य इस माननीय सदन के सामने रखना चाहता हूं और केवल यह निवेदन करना चाहता हूं कि सदन के माननीय सदस्य इधर बैठते हों या उधर बैठते हों जन पर ध्यान देने की कृपा करें । मेरा विश्वास है कि प्रजातंत्र एक कटु प्रणाली है और उसकी अग्नि म जलकर कुछ दिन तप कर हम यहां बैठे हैं, तो प्रत्येक व्यक्ति जो जनतंत्र का अंग है उसको मानवोचित बड़े-बड़े गुणों की अपेक्षा करनी पड़ेगी । मैं उपदेश दने के खयाल से इन चीजों की चर्चा नहीं करता हूं बल्कि मैं अपने मित्रों के सहयोग की अपेक्षा करता हूं कि वह प्रदेश की समस्या को समझें और मुझे कुछ प्रकार देने की कृपा करें । यदि उनका कर्त्तव्य है कि वह केवल आलोचना ही करेंगे तो वह भी मुझे स्वीकार है । उसमें भी हम कुछ तथ्य पा लेंगे । फिर भी मैं चाहता हूं कि हमें तथ्य दें । लेकिन तथ्यों के स्थान यदि पत्थर पड़े तो उसका इलाज कौन करेगा और किस जनतंत्र ने कब किया ?

श्रीमन्, यह प्रदेश जिसकी आबादी ८ करोड़ २० लाख के लगभग है, यह प्रदेश जिसमें ६४९ व्यक्ति एक वर्ग मील में रहते हैं जब कि समस्त देश में प्रति वर्ग मील केवल ३७० व्यक्ति रहते हैं । यह प्रदेश श्रीमन् जिसका १९५५-५६ में पहले सर्वे हुआ गांवों का, तो २८९ गांवों में से ५६ या ५८ गांवों का सर्वे किया गया और उसमें पाया गया कि इन गांवों के प्रत्येक व्यक्ति की आमदनी १४६ रुपये वार्षिक से कम थी । २९ गांवों का सर्वे एक बार हुआ और दूसरे २९ गांवों का दूसरी बार सर्वे हुआ और समस्त देश के गांवों की इतनी आमदनी आई और उसमें हमारे प्रदेश के ११ गांव आये । दूसरा सर्वे हुआ जिसमें प्रत्येक व्यक्ति की आमदनी १४६ और १७३ रुपये के ग्रुप में थी उसमें भी २९ गांवों में से ११ गांव हमारे प्रदेश के आये ।

प्रथम और द्वितीय पंचवर्षीय योजनाओं में प्राइवेट सैक्टर का ७,३ प्रतिशत रुपया लगा । तृतीय पंचवर्षीय योजना में प्राइवेट सैक्टर से १० प्रतिशत धन आया । इस प्रदेश में यदि मैं आंकड़े दूं तो मैं स्वयं निश्चय के साथ कह सकता हूं और सदन को विश्वास दिला सकता हूं कि वे आंकड़े मुझे दहला देते हैं । श्रीमन् उत्तर प्रदेश में पहली पंच वर्षीय योजना में राज्य की ओर से पर कैपिटा २४ रुपया खर्च किया । समस्त देश में ४८ रुपये खर्च हुआ । (व्यवधान) यह हमारी कमी नहीं है । इसी प्रकार से दूसरी पंचवर्षीय योजना में ३४ रुपये हमारा खर्च हुआ । तीसरी पंचवर्षीय योजना में हमारा ६८ रुपये खर्च हुआ पर कैपिटा और जो केन्द्र का हिस्सा मिला वह केवल १४ प्रथम पंचवर्षीय में १८ दूसरी योजना में और ४७ तीसरी में जब कि समस्त देश में पहली पंचवर्षीय योजना में ४०, दूसरी में ५२ और तीसरी में लगभग ९२ रुपये खर्च हुआ ।

अनेक सदस्य---

क्यों ?

श्री लक्ष्मीरमण आचार्य---

मैं अपने मित्रों को क्यों का उत्तर देना चाहता हूं, लेकिन मेरे मित्र जरा तसल्ली रखें । हमारे पास धन की कमी, हमारा प्रदेश निर्धन, हमारे प्रदेश के रिसोर्सेज कम, समस्त प्रदेश के ८७ प्रतिशत व्यक्ति गांवों में रहते हैं और ८७ प्रतिशत में केवल ७९ प्रतिशत ऐसे लोग हैं जिनके पास खेत हैं या खेतिहर मजदूर हैं बाकी करीब-करीब बेकार । इसी प्रकार से शहरों की बहुत बड़ी आबादी बेकार है । हम से हमेशा केन्द्र ने कहा है कि अपना धन इकट्ठा कीजिये तो हमसे

धन लीजिये। हम एक विषम चक्र के अन्दर हैं। पैसा इकट्ठा करने के लिए टैक्स लगाएं तो किधर से लगाएं, निर्धन जनता है। टैक्स न लगाएं तो सेंटर से हिस्सा न मिले और सेंटर से हिस्सा न मिले तो विकास न हो। बड़ी दयनीय स्थिति है। मैं आज की परिस्थितियों का थोड़ा सिंहावलोकन करना चाहता हूं कि किस प्रकार से हम कहां आकर खड़े हो गये हैं। १९५०-५१ में हमने ११५.७९ टन खाद्यान्न पैदा किया। १९६१-६२ में हमने १४२ टन खाद्या पैदा किया। लेकिन १९६३-६४ से निरन्तर हमारी पैदावार गिरी है। १९६३-६४ में हमारे पास ११६ टन पैदावार हुई। उसके बाद निरन्तर बढ़ नहीं पायी। (व्यवधान) क्यों का उत्तर क्या मेरे मित्र नहीं जानते? उनके चूरन का नुस्खा क्या पानी भी बरसा देगा?

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष—

मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना करूंगा कि कृपया शान्ति रखें। एक कोई माननीय सदस्य प्रश्न कर दें और माननीय मंत्री जवाब देना चाहें तो दे दें। यहां तक तो पार्लियामेंटरी पद्धति ठीक है। लेकिन इस प्रकार बाधा डालने से तो कोई भाषण का लाभ नहीं हो पायेगा।

श्री लक्ष्मीरमण आचार्य—

मैं अपने मित्रों से आज यही आशा करता हूं कि वह इन तथ्यों को हृदयंगम कर लें। सम्भव है कि वह कल यहां आकर बैठें। फिर उनके सामने यह कटु सत्य होंगे जिनका उत्तर उन्हें ढूंढ़ना पड़ेगा। यह प्रदेश एक विषम चक्र के अन्तर्गत है। और उस चक्र में से इस प्रदेश को निकालना पड़ेगा। आज लगभग तीन वर्षों से हमारे प्रदेश में सूखा है। इस वक्त हमारे राजस्व की जितनी आमदनी है उसके बहुत मोटे-मोटे आंकड़े मैं देना चाहता हूं। मेरे मित्र ने कई बार यह जिक्र किया कि हम प्रदेश में राजस्व से काफी आमदनी लेते हैं और कई बार मेरे मित्रों ने यह भी कहा है कि मालगुजारी का देय हमारे प्रदेश में सबसे अधिक है। मैं इसको केवल इस रूप में स्वीकार कर सकता हूं कि यहां अधिक भूमि है जिसमें खेती होती है और सन् १९५१ से लेकर सन् १९६० और ६५ तक खेती करने वाली भूमि में ७.४ प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है। और ऐसा एक तथ्य है कि हमारे प्रदेश में जितनी भूमि है उसमें से लगभग ६३ प्रतिशत में खेती होती है। यदि इस दृष्टि से हमारा राजस्व देय, हमारी मालगुजारी या जो रुपया कि हम किसानों से लेते हैं कुछ प्रदेशों से अधिक है तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। मैं केवल इतना कहना चाहता हूं कि इस बीच में लगभग २६ करोड़ रुपया हमें राजस्व से मिलने वाला है और १९६५-६६ में लगभग २६ करोड़ रुपया हमें मिलने वाला था। इस रुपये में से ज्यादातर रुपया हमने वसूल किया और हम किस प्रकार से उस रुपये को वसूल कर पाये हैं, यदि मेरे मित्र उन आंकड़ों को लेना चाहें तो मैं उनको दिखला सकता हूं कि इस प्रदेश में मुल्तवी और रेमिशन के रूप में भी हमने काफी रकम छोड़ी है। तो यह कोई आश्चर्यजनक आंकड़ा नहीं हो सकता, हमने बहुत ज्यादा रुपया रेमिशन के रूप में छोड़ा है।

श्री उग्रसेन—

यह तो श्रीमन्, यहां कई बार आ चुका है।

श्री लक्ष्मीरमण आचार्य—

मेरी बातों में कुछ तथ्य है तो मेरे मित्र उसे सुन लें। मैं यह जिक्र कर रहा था कि यह रुपया भी हमने काफी छोड़ा है। पिछले दो तीन वर्ष से हमारे सामने बड़ी कठिनाइयां हैं और उन कठिनाइयों को दूर करने के लिये मैं आपके द्वारा इस सदन का सहयोग चाहता हूं। मेरे एक मित्र जिक्र कर रहे थे और हमारे नेता विरोधी दल साहब ने भी जिक्र किया कि हमारी ओर से यह कहा जाता है कि हम तो सितम्बर तक के लिये लोगों के खिलाने का प्रबन्ध करना चाहते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि शायद उनको इसमें कुछ आश्चर्यजनक बात लगती हो, लेकिन सही बात यह है कि वास्तव में हमें सितम्बर तक के लिये अन्न चाहिये। इस सम्बन्ध में मेरा

[श्री लक्ष्मीरमण आचार्य]

माननीय सदन और नेता विरोधी दल से निवेदन है कि वे इस बात से परिचित हैं कि इस प्रदेश के काफी बड़े हिस्से में अकाल की सी स्थिति है और इस प्रदेश के कम से कम ४–६ या ८ जिले ऐसे हैं जिनमें बड़ी कठिनाई है। वहां पानी की कमी है, चारे की कमी है, भोजन की कमी है। वहां अनावृष्टि रही, २ जुलाई के बाद एक अरस तक पानी नहीं बरसा, जो फसल बोयी गयी थी, उसको भी पानी नहीं मिला, मानो प्रकृति के लिये यह पर्याप्त नहीं था। जसे कहावत मशहूर है कि "मूड़ मुड़ाते ही सर पर ओले गिरने लगे"।

श्री उग्रसेन—

जब गुप्ता जी गद्दी पर बैठे तो उनके बैठते ही ओलों की वर्षा हुई।

श्री लक्ष्मीरमण आचार्य—

अनावृष्टि से इस प्रदेश के लगभग आधे हिस्से का सम्बन्ध है और मेरे मित्र इन सारी चीजों की चर्चा करते हैं और आलोचना करते हैं। एक बहुत पुराना खयाल है कि जिस एडमिनिस्ट्रेटिव मशीनरी के जरिये राजस्व विभाग चलता है–मैं श्रीमन्, नीचे से आया हुआ व्यक्ति हूं और इस सदन में जितने लोग बैठे हैं उन सबमें से एक हूं। जनतंत्रीय शासन प्रणाली के नाते यदि हमारे मित्र कुछ व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं तो मुझे भी गौरव प्राप्त है कि मैं भी कुछ व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करता हूं। जब मुझे भी यह गौरव प्राप्त है तो राजस्व विभाग में कर्मचारियों के तन्त्र के विषय में वे जो चर्चायें करते हैं उसका मुझे व्यक्तिगत रूप से ज्ञान है और सदन को मैं यह विश्वास दिलाना चाहूंगा कि पूरा राजस्व विभाग इस चिन्ता में लगा है कि जितनी कठिनाईयां इस तन्त्र में हैं, उसे दूर कर सकें। मैं आज आपसे यह कहना चाहता हूं कि जो कठिनाइयां हैं, जहां पर कठिनाइयां हैं, मैं उनसे भली-भांति परिचित हूं। जैसे चकबन्दी के सम्बन्ध में कुछ चर्चायें हुई, इसकी जितनी चर्चायें हो जाएं वह अन्त तक चलती रहेंगी, क्योंकि चकबन्दी एक प्रोसेस है जिसके द्वारा हमें किसानों के हित के लिये एक बड़ा काम करना पड़ता है। उसमें कुछ कर्मचारी भ्रष्ट भी आ जाते हैं, कुछ भ्रष्ट हो जाते हैं और उनके लिये मैं केवल इतना सा विश्वास सदन को दिलाना चाहूंगा कि यदि कोई सदस्य भी हमसे इस विषय में चर्चा कर सकें तो मैं उनका अनुग्रहीत हूंगा। भ्रष्ट कर्मचारी हो सकते हैं, यह मनुष्य की दुर्बलता है और हम उसके प्रति पूर्ण रूप से सतर्क हैं, लेकिन जनतन्त्र प्रणाली में यह तो सम्भव नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति के बारे में जैसे ही हमें पता चले कि उसने ५ रुपये लिये तो हम उसे आज ही बुला कर फांसी के तख्ते पर लटका दें।

(लाल बत्ती होने पर)

श्रीमन् से प्रार्थना करूंगा कि मुझे २–३ मिनट का समय और दे दें।

श्री अध्यक्ष—

तीन मिनट में बोल लीजिए।

श्री लक्ष्मीरमण आचार्य—

अच्छी बात है। अब मैं सदन के अपने मित्रों से भी आशा चाहूंगा कि वे मुझे समय दे दें। यहां पर कुछ नैनीताल की जमीन के बारे में जिक्र किया गया, तराई भावर की जमीन का मामला उठाया गया। वहां पर कुछ लोगों को निकाला जाएगा जो जबरदस्ती वहां पर बसे हैं और कुछ को बसाना पड़ेगा जिनको जबरदस्ती निकाला गया है। बार-बार कहा जाता है कि वहां पर जमींदारी उन्मूलन प्रथा क्यों नहीं लागू की जाती है। वहां पर कुछ विशिष्ट समस्याएं हैं जिनके कारण यह नहीं हो पाया है, वहां की जमीन स्टेट की है। फिर भी उसके सम्बन्ध में जो सुझाव होंगे मैं उसे स्वीकार करूंगा।

यहां पर न्याय विभाग की चर्चा की गई। विशेष कर एक्जीक्यूटिव और जुडीशियरी के सेप्रेशन के सम्बन्ध में प्रश्न उठाया गया। मैं उसके बारे में यही कहना चाहता हूं कि यह प्रश्न हमारे विचाराधीन है और जो कुछ भी उसके सम्बन्ध में और जितनी शीघ्रता से हो सकता है, हम करना चाहते हैं। कुछ हमारे मित्रों द्वारा इस प्रकार का भी आक्षेप किया गया कि चीफ एलेक्टोरल कमिश्नर को चुनाव के तुरन्त बाद सरकार द्वारा पुरस्कार के रूप में हाई कोर्ट का जज बना दिया गया। किन्तु बात तनिक भी सत्य नहीं है। क्योंकि ५२ में जो सज्जन थे वह ५६ या ५७ में बनाये गये। इसके अतिरिक्त इसकी प्रणाली ऐसी है कि जो व्यक्ति हाई कोर्ट के जज बनते हैं उसमें सरकार का कोई हाथ नहीं रहता है, उसमें केवल चीफ जस्टिस हाई कोर्ट का हाथ रहता है। कुछ चर्चायें और हुईं जिनका उत्तर मैं सूखे के सम्बन्ध में चर्चा के समय दे दूंगा।

मैं आज आपके द्वारा अपने मित्रों से एक नम्र निवेदन करना चाहता हूं। बहुत सम्भव है श्रीमन् इतिहास के एक विचित्र स्थल पर यह देश आज आ कर खड़ा हो गया है। आज प्रश्न यह नहीं है कि किसमें हैं या कौन दल किसमें है कि नहीं है; प्रश्न यह है कि इतिहास आंख खोलकर यह देखना चाहता है कि जनतंत्र जीवित रहता है या नहीं और इतिहास यह भी देखना चाहता है कि जनतंत्र जिस चीज की अपेक्षायें करता है वह अपेक्षायें इस देश के नागरिक और उनके प्रतिनिधि पूरा करते हैं या नहीं। जनतंत्र अपेक्षा करता है हमसे जो कि शासक वर्ग से सम्बन्धित हैं कि हम संयम रखें, धैर्य रखें, शान्ति रखें, लेकिन वह अधिक अपेक्षा करता है संयम की मेरे मित्रों से कि वह जनतंत्र की रक्षा में सहायक बनें और इस प्रकार की परिस्थितियां उत्पन्न करें जिससे जनतंत्र सफल सकें, ऊंचा उठ सकें और जनतंत्रीय शासन प्रणाली को यह देश अग्रसर बनाकर, स्वीकार करके आगे बढ़ सके।

श्री उग्रसेन—

माननीय अध्यक्ष जी, माननीय राज्यपाल जी के अभिभाषण पर धन्यवाद के प्रस्ताव पर आज तीन दिन से विवाद हो रहा है। मैंने आज दो भाषण सुने। एक तो गौतम जी को सुना। वे हमारे पुराने नेता हैं। वह तो चुपके से चले गये जैसे रामायण राय चले गये। आचार्य जी ने तो जनतंत्र की दुहाई दी वह भी मैंने सुनी। जनतंत्र की हत्या तो उसी दिन हो गयी जिस दिन लाल किले पर आपने अपना तिरंगा फहराया था और पढ़ लो मौलाना आजाद की किताब उन्होंने क्या लिखा है कि बटवारा देश का करवाया देश के प्रधान मंत्री ने, क्योंकि वह कुर्सी के मोह, माया और लालच में चिपक गये और गांधी जी की बात को भी ठुकरा दिया। १५ जून, सन् १९४७ को आल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक में २८ आदमियों ने विरोध में अपना मत दिया था उनमें हमारे नेता डाक्टर लोहिया भी थे। तुमने जनतंत्र की हत्या की, या हमने, हे आचार्य जी, जरा सोचो? दूसरी बार जनतंत्र की हत्या तब हुई जब गांधी जी की हत्या करवायी गयी। गांधी को सही मानों में बिड़ला हाउस में नहीं मारा गया, बल्कि सही मानों में ग्वालियर में, जयपुर में, बम्बई में, अहमदाबाद में और आप गद्दी पर बैठे रहे।

मान्यवर, मैं अपने नेता संयुक्त दल के साथ महामहिम के यहां अक्सर जाया करता था एक दिन तो मुझे ५ घंटे लग गये थे। मैं अपनी डायरी लिख रहा था और उस दिन मैंने यह लिखा कि महामहिम जनतंत्र की रक्षा कर नहीं सकते और आज वही बात हो गयी। महामहिम को केन्द्रीय सरकार ने सीधे उनके घर भुवनेश्वर भेज दिया। हम तो संयुक्त विधायक दल के लोग एक सजग प्रहरी के नाते जनतंत्र की रक्षा करने के लिये यहां बैठे हैं। लेकिन क्या सचमुच जनतंत्र की रक्षा ये कांग्रेस वाले कर रहे हैं? इनके नेता चन्द्रभानु गुप्त से बड़े सबेरे चुपके से पूछा गया कि कहिये एडवोकेट जनरल किसको बना रहे हैं, तो उन्होंने चुपके से बिना मंत्रिमंडल की राय लिये कन्हैयालाल मिश्र को फिर ए बोकेट जनरल बना दिया। क्या यही संसदीय परम्परा की रक्षा है? क्या यह जनतंत्र की हत्या नहीं है? जब सदन बैठा हो, सत्र चल रहा हो तब इतनी बड़ी घोषणा की बात माननीय मुख्य मंत्री प्रेस में कर दें सदन में न करें फिर उसके पहले प्रेस में कर दें। माननीय मिश्र जी को सरकार बनवाने में सहायता करने का लाभ हो गया और महामहिम जी को मिल गया कि सवा दो सौ एकड़ के बंगले को छोड़ कर अब १७ एकड़ के मकान में भुवनेश्वर में रहेंगे।

[श्री उग्रसेन]

आचार्य जी ने बताया कि २० करोड़ रुपया हमें केन्द्र से कम मिला। मैं बताऊं कि बंगाल और उड़ीसा की सरकारों को केन्द्र से ज्यादा क्यों मिला। आप मुलाहिजा फरमायें कि पहली पंचवर्षीय योजना में यह सरकार ला पायी १४ करोड़, जब कि दूसरे राज्यों को मिला २५ करोड़, दूसरी पंचवर्षीय योजना में आप ले पाये १८ करोड़, दूसरे राज्यों को मिला २७ करोड़, तीसरी पंचवर्षीय योजना में आप ले पाये ४७ करोड़ और दूसरों को मिला ५६ करोड़ और यही नहीं बंगाल की सरकार ने ३८ करोड़ रुपया और ज्यादा लिया केन्द्रीय सरकार से और उड़ीसा ने ज्यादा लिया ४६ करोड़, इसी तरह से मध्य प्रदेश और राज्यस्थान को ज्यादा मिला लेकिन उत्तर प्रदेश की सरकार २२ करोड़ रुपया कम लायी और यह इसलिये कि यहां पर सिटी मैजिस्ट्रेट चौधरी की कोर्ट में गुप्ता बनाम त्रिपाठी एक मुकदमा चल रहा था। आचार्य जी को हम लोगों ने मथुरा से इसलिये नहीं बुलाया कि शायद वह फीस ज्यादा लेते, लेकिन लड़ाई में यह प्रदेश तबाह हो गया। आप मुलाहिजा फरमाइये इस प्रदेश की आमदनी १९६०-६१ में २४९.५६ रुपया प्रति व्यक्ति थी, लेकिन अब अब २३६.४ है। यह रामचन्द्र विकल, झारखंडे राय या तलबाड़ साहब ने की या आपने की ? जब हम कहते हैं कि गद्दी छोड़िये तो आप कहते हैं कि जनतंत्र, लेकिन जनतंत्र का जनाजा निकल चुका। गुप्ता जी ने कहा कि हम सब मुकदमें वापस ले लेंगे, लेकिन अब कहते हैं कि चिट्ठी लिखकर दो तो मुकदमों को वापस लिया जायगा लड़कों के और सरकारी कर्मचारियों के मुकदमें वापस लेने को कहते हैं, लेकिन बाद को कहते हैं कि लिख कर दो तो वापस करेंगे। यह गुप्ता जी का जनतंत्र है जिसका राज आज इस प्रदेश में चल रहा है। यह जनतंत्र का राज नहीं चल रहा है बल्कि यह सरकार खुद ही जनतन्त्र का जनाजा निकाल रही है।

जहां तक भुखमरी का सवाल है मेरे पास ग्रामवासी जी का पत्र मिर्जापुर से आया है। उन्होंने लिखा है कि वह अभी भी इस बात पर कायम हैं जो उन्होंने पहले कही थी। वे कहते हैं कि जो अन्न का भंडार वहां पर है वह उस जिले के लिये पर्याप्त नहीं है। जिला अधिकारियों ने भ्रष्टाचार किया है और उसी वजह से वहां पर मौतें हो रही हैं। यह सब वहां उन्होंने पता लगाया है और पता लगा कर उन्होंने इस पत्र को लिखा है। घरों में उन्होंने जाकर पता लगाया है। इस प्रकार का पत्र सरकार के पास भी आया होगा। उनको भी जानकारी होगी कि मैं यह बात गलत कह रहा हूं या सही।

हमारे साथी गेंदा सिंह जी १६ वर्ष से साथ थे। अब वह उधर चले गये हैं। कहा जाता है कि उनको खाद्य मंत्री बना दिया गया है। मैं निवेदन करूंगा कि उनको खाद्य मंत्री नहीं बनाया गया है बल्कि उनको अकाल मंत्री बनाया गया है। यह भुखमरी का सवाल आज का सवाल नहीं है। हम बराबर चिल्लाते रहे और अध्यक्ष महोदय हमको यहां से निकालते रहे, लेकिन फिर भी हम चिल्लाते रहे कि भुखमरी हो रही है और लोग भूखे मर रहे हैं। अभी भी हमारे पास खबर है कि पिछले २ महीने के अन्दर ७, ८ मौतें भूख से हुई हैं। मैंने पिछली दफा इस सवाल को सदन में उठाया था कि गंगा पटेहरा ग्राम खुखुन्दो, जिला देवरिया में एक लड़का ११ दिन भूखा रहने के बाद मौत का शिकार हो गया। उसकी जांच हुई तो बाद को यहां पर बतलाया गया कि वह ११ वर्ष का लड़का नहीं था बल्कि ४ महीने का एक बच्चा था जो मर गया। यह जांच की इनकी रिपोर्ट में यहां पर बतला दिया गया। मिर्जापुर में कितनी मौतें हो गई इसका पता वहां जाकर लग सकता है और जो लोग वहां होकर आये हैं उनको पता है। जो गेहूं टेस्ट वर्क के लिये वहां जाता है उसको बिड़ला चोरबाजारी में खरीद लेते हैं और फिर चोर बाजार में उसको बेंचा जाता है। इसकी सी० बी० आई० ने जांच की है और केन्द्रीय सरकार को उसने रिपोर्ट भेजी है। उसने बताया है कि उस अनाज को बिड़ला चोर बाजारी में खरीद लेते हैं और अपनी दूकानों से उसको बिकवाते हैं। इस कारण से लोग मिर्जापुर में लोग भूखों मर रहे हैं। मैं सरकार से यह निवेदन करूंगा कि सरकार देवरिया, गोरखपुर और मिर्जापुर की भुखमरी को रोक नहीं सकती है और हटा नहीं सकती है। १० हजार क्विंटल गेहूं मुफ्त बांटने

के लिये पूर्वी जिलों में भेजा गया। उस गेहूं को चुनाव के समय बांटने को दिया गया, लेकिन सिर्फ गोंडा में सुचेता जी के निर्वाचन क्षेत्र में उस गेहूं को मुफ्त चुनाव के दिनों में बांट दिया गया। क्या यही जनतंत्र है और इसी जनतंत्र के आधार पर यहां की जनता का आप कल्याण करना चाहते हैं? मैं कहता हूं कि इसकी जांच होनी चाहिये।

एक बात मैं मै म स्वेतलाना के सिलसिले में भी निवेदन करना चाहता हूं। वह लेडी लखनऊ में भी आई थीं और एक राज्य सरकार के अधिकारी के यहां आतिथ्य स्वीकार करके रही। यहां के मंत्रिमंडल के नोटिस में यह बात रही कि वह यहां पर हैं और यहां रहना चाहती हैं, लेकिन उनको यहां पर रहने नहीं दिया गया। अमेरिका भेजवाने की सारी साजिश इस मंत्रिमंडल की जानकारी में रही और उसने उनको वहां भेजवाया जिसका इस राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में कोई चर्चा नहीं है।

योजना की बात कही गई लेकिन आप १।। करोड़ नहीं बल्कि ५० करोड़ भी किसी योजना या बांध के लिये खर्च कर दें तब भी कोई लाभ जनता को होने वाला नहीं है। अभी छितौनी बांध की बात बताई कि इतना खर्च किया जा रहा है। मैं कहूंगा कि अगर आप ४।। करोड़ के अलावा ५० करोड़ भी खर्च कर दें तो देवरिया डूबेगा और उसके डूबने की सारी जिम्मेदारी इस सरकार के ऊपर होगी। जहां तक मजदूरों का सवाल है, लक्ष्मी रतन काटन मिल के लिये यह सरकार कुछ करने वाली नहीं है। रामरतन गुप्त का वह मिल है जो चन्द्रभानु गुप्त जी के दोस्त हैं। वह रुपया दे देंगे तो शर्तें तय हो जायंगी। मजदूरों को मजदूरी नहीं मिलेगी और सब बातें सरकार कर देगी। इसी प्रकार से एक माहेश्वरी जूट मिल है। वह भी बन्द है उसके लिये भी यह सरकार कुछ नहीं कर रही है।

यह सरकार १० हजार राजकर्मचारियों की छटनी कर रही है। चिकित्सा विभाग, रोडवेज और उद्योग विभाग के लोगों को छटनी का शिकार बनाया जा रहा है। महंगाई भत्ते के लिये कमीशन की रिपोर्ट सरकार को दे दी गई है जिससे ऐसा मालूम होता है कि केन्द्रीय स्तर के बराबर कमीशन ने कोई बात नहीं कही है। इसलिये पहले यह सरकार अपने जनतन्त्र को बचाने की बात करे। जिस तरह की यह योजनाएं बनाई हैं ये निकम्मी हैं, बेबुनियाद हैं और बेकार हैं। हां, डंडे के बल पर आप चला रहे हैं। खुदा हाफिज। एक बात मैं एक शेर में कहना चाहता हूं--

बाग़बां ने एक नया सितम ईजाद किया,
आशियां फूंक के पानी को बहुत याद किया।

वही आप भी कर रहे हैं। इन शब्दों के साथ मैं इस धन्यवाद के प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

*श्री रामायण राय (जिला देवरिया)--

मान्यवर, आप की आज्ञा से अपने पूर्व वक्ता से मैं एक बात निवेदन करना चाहता हूं। उन्होंने अन्त में सदन में एक बड़ा जोरदार शेर पढ़ा। मैं उनसे आग्रह करूं कि--

सुनना हराम है न सुनाना हराम है,
सुनने के बाद तैश में आना हराम है।

मान्यवर, माननीय उग्रसेन जी ने बतलाया कि इस संयुक्त विधायक दल का गठन जनतंत्र की रक्षा के हेतु हुआ है। मैं आपके माध्यम से उनसे तथा नेता संयुक्त विधायक दल से दो,तीन बातें पूंछना चाहता हूं। हमारी आंखों ने जो देखा है, जो घटनायें हमारे सामने घटित हुई हैं, मैं

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री रामायण राय]

जानता चाहता हूं कि उनसे जनतंत्र की रक्षा हुई है अथवा जनतंत्र का अपमान हुआ है ? मान्यवर, आपने भी सुना होगा कि एक दिन ११ बजे रात को दारुलशफा विधायक निवास के मुख्य द्वार से दो सौ गुण्डे यह नारा लगाते हुए प्रवेश करते हैं कि दारुलशफा के फाटक टूटेंगे, कांग्रेसी विधायकों को हम सड़कों पर घसीट कर गोली मारेंगे। यह कोई ऐसी घटना नहीं है कि जिसकी जानकारी केवल रामायण राय को ही हो। मैं माननीय उग्रसेन जी से पूछना चाहता हूं कि उनके दिल में क्या डाक्टर लोहिया का वह नारा है जिन्होंने आम चुनावों के दौरान घूम-घूम कर यह कहा था कि तुम कांग्रेस को वोट मत देना, अगर पुनः इस देश में कांग्रेस की हुकूमत बनी तो देश को खूनी क्रान्ति से गुजरना पड़ेगा। मैं उग्रसेन जी से पुनः पूछना चाहता हूं कि एक मौके पर जब के० एम० पी० पी० से और हमारी पार्टी से समझौता हो रहा था तो डा० लोहिया ने कहा था कि दो लंगड़े मिलाकर एक पूरा आदमी नहीं बना सकते। ठीक उसी तरह मैं माननीय उग्रसेन जी से जानना चाहता हूं कि विभिन्न दलों का संगठन यह संयुक्त विधायक दल किस प्रकार से और कब तक जनतंत्र की रक्षा कर सकेगा और कैसे वह इस काम में सफल होने वाला है ?

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष--

मैं पुनः कहना चाहता हूं कि हमें स्वस्थ परम्पराओं का सृजन करना चाहिये। यह बिल्कुल अवांछनीय है कि जब एक माननीय सदस्य बोल रहे हों तो दूसरे सदस्य खड़े हो जायं और अपनी बात बीच में कहने लगें। यदि मंत्री जी बोल रहे हों तो सदस्यगण उनकी इजाजत से प्रश्न कर सकते हैं, लेकिन माननीय सदस्य के बोलने पर तो सबको सुनना ही चाहिये।

श्री रामायण राय---

२८ मार्च को लोहिया साहब ने एक बयान जारी किया अंग्रेजी भाषा में जो कि हिन्दी के हिमायती हैं। उसमें कहा कि लोगों को भोजन की कमी है और गैर कांग्रेसी सरकारों में शामिल संसोपा मंत्रियों का रवैया कांग्रेसी मंत्रियों जैसा ही है और उनको अनुशासनहीन और न जाने क्या-क्या संज्ञायें दी हैं। 'गया थेसिस' में भी इसी विषय पर प्रकाश डाला गया है।

श्री जंगबहादुर (जिला बाराबंकी)---

व्यवस्था का प्रश्न है। इस समय देश जिस परिस्थिति से गुजर रहा है बस उसमें अपनी पार्टी की सरकार को हमारे नेता ने आगाह किया है, लेकिन आपके यहां जो २ साल से पाप फैल रहा है उसके लिये किसने आगाह किया है ?

श्री अध्यक्ष--

श्री जंगबहादुर जी। आप कृपया बैठें। यह जो व्यवस्था का प्रश्न है, यह बिलकुल व्यवस्था के प्रश्न के सिद्धांत के विरुद्ध है और मैं पुनः प्रार्थना करूंगा कि कृपया यह दुर्व्यवस्था न पैदा करें व्यवस्था की आड़ में। जबकि एक भाषण हो रहा है तो ऐसा करना अनुचित है।

श्री रामायण राय---

मान्यवर, मैंने संशोधनों की सूची देखी। २९४ कुल संशोधन माननीय सदस्यों की ओर से राज्यपाल के अभिभाषण के संबंध में आये हैं। उन संशोधनों के संबंध में मैं आशा करता था कि सामान्य नीति निर्धारित हो जाने के बाद उनमें भी कोई ताल-मेल दिखाई देता, लेकिन एक ओर जहां संशोधन स्टेट ट्रेडिंग की हिमायत करता है तो वहीं पर संयुक्त विधायक दल के द्वारा प्रस्तुत संशोधन फ्री ट्रेड की भी बात करता है। ऐसे भी संशोधन हैं जिन का संबंध हमारी पार्टी के चुनाव घोषणा-पत्र से है। इसके साथ ही साथ कुछ ऐसे हैं जिनका संबंध इस सदन से नहीं है, जनता और जनतंत्र की बात भी कही गयी है। अभी संयुक्त विधायक दल के नेता ने कहा कि फैसला जनता का हमारे पक्ष में हुआ है, हमारी सरकार बने इसके लिये

मंदिरों में पूजा हो रही है, और न जाने क्या-क्या कहा । मैं तो आपसे केवल आग्रह करूंगा कि आज हमारा देश एक महान संकट से गुजर रहा है । आज हमारी सीमायें कुछ पड़ोसी देशों की कुदृष्टि की शिकार हो रही हैं । सीमा पर रहने वाले हमारे नागरिकों का फैसला आखिर इस चुनाव के बारे में क्या हुआ है ? आपको स्वयं मालूम है कि उत्तर काशी का, पिथौरागढ़ का नतीजा ।

श्री प्रताप सिंह (जिला नैनीताल)---

नैनीताल का बताइये ?

श्री रामायण राय---

काश्मीर का श्री प्रताप सिंह को भी मालूम है । मुझे कतई उनसे यह आशा नहीं थी कि जिस दल के महान नेता ने कहा था कि हमारी दूरी कम्युनिस्टों और कम्युनलिस्टों से बराबर रही और उस महान नेता के पद-चिन्हों पर चलने वाले आज उन लोगों के साथ बैठे हैं जिन पर राष्ट्रपिता बापू की हत्या का आरोप लगा हुआ है ।

श्री टम्बेश्वरप्रसाद---

व्यवस्था का प्रश्न है । मैं माननीय रामायण राय के विरुद्ध प्रिविलेज का नोटिस देता हूं । वह स्पष्ट करें और सिद्ध करें कि किन लोगों से उनका मतलब है वरना मैं उनको जानबूझकर गलत बयानी के लिये नोटिस देता हूं । पहले यह बयान साबित करेंगे उसके बाद दूसरी बात करेंगे ।

रामायण राय यह नहीं समझ रहे हैं कि उनको क्या कहना चाहिये, क्या नहीं । (व्यवधान) टके-टके पर बिकने वाले लोगों के मुंह से यह बात शोभा नहीं देती ।

श्री अध्यक्ष---

माननीय टम्बेश्वर प्रसाद जी, आपने नोटिस दे दिया, ठीक है, उसको देखा जायेगा । अब यहां शांति रखना चाहिये । (व्यवधान) मैं एक बात बता दूं, माननीय रामायण राय ने किसी का नाम तो लिया नहीं, इसलिये ज्यादा रोष नहीं होना चाहिये । (व्यवधान)

श्री रामायण राय---

पिछली लड़ाई के संबंध में माननीय विकल जी ने विचार व्यक्त किये कि लड़ाई जीतने का श्रेय कांग्रेस को नहीं, हमारी सेना को है . . .

श्री झारखंडे राय (जिला आजमगढ़)---

मैं माननीय रामायण राय जी से यह जानना चाहता हूं कि उन्होंने जिस थीसिस का जिक्र किया उसमें किसको थिअरी प्रचलित की गयी थी, डाक्टर लोहिया की या किस की ?

श्री रामायण राय---

स्वर्गीय आचार्य नरेंद्र देव की वह बनायी हुयी थी । तो मैं यह निवेदन कर रहा था कि लड़ाई जीतने का श्रेय संयुक्त विरोधी दल के नेता को भी है और मैं पूछना चाहता हूं कि लेफ्ट कम्युनिस्ट पार्टी के जो लोग उनके दल में हैं क्या उनको भी पाकिस्तान और चीन की लड़ाई जीतने का श्रेय विकले जी देना चाहते हैं ? (व्यवधान) चीन को आक्रामक मानना चाहिये यह डाक्टर लोहिया ने कहा, मगर जो लोग तिब्बत पर चीन का अधिकार चाहते थे वे आज उग्रसेन जी के साथ बैठे हैं । (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष---

मैं आप लोगों से निवेदन कर रहा हूं कि यहां कृपया स्वस्थ परम्परायें डालना चाहिये । अगर कोई माननीय सदस्य कोई बात कहते हैं और वह आपकी राय से ठीक नहीं है तो जो दूसरे माननीय सदस्य बोलें वह उसका जवाब दे सकते हैं ।

श्री हरीशकुमार गंगवार (जिला बरेली)—

श्रीमन्, मैंने बड़े प्रेम से कांग्रेस के नेताओं. . . .

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष—

श्री हरीश कुमार जी, जरा बैठ जायं। मैं कल भी कह चुका हूं और आज फिर दोहराना चाहता हूं कि माननीय सदस्य खड़े होकर शिकायत करते हैं कि मुझे समय नहीं मिला। इसका इलाज मेरे पास नहीं है। कल मना करने के बावजूद भी ३०-३५ कागज रक्खे हैं ऐसे। मैंने आज इनको देखा भी नहीं है। मैंने कल कहा था और माननीय नेता विरोधी दल से प्रार्थना करूंगा कि अगर वे व्यवस्था कर सकें तो अच्छा है। जब नेता विरोधी दल के पास से कुछ नाम आते हैं तो मुझे उनको भी देखना पड़ता है। अगर कभी किसी का नाम नहीं आ रहा हो तो मैं देख सकता हूं। अगर खड़े होकर एक-एक व्यक्ति शिकायत करेंगे तो अनुचित होगा। अगर इस के बारे में सभी व्यवस्था चाहने लगेंगे तो भी मुश्किल होगा। मेरे कक्ष में आकर ऐसे सदस्य बात कर सकते हैं। सभी माननीय सदस्यों को अवसर मिलेगा। अभी बजट का समय आयेगा, उसमें अनुदान होंगे। अगर सभी लोग विवाद में बोलना चाहें तो संभव नहीं होगा।

एक सदस्य—

अध्यक्ष महोदय, जो किसी दल का आदमी न हो क्या उसको भी मौका दिया जायेगा ?

श्री अध्यक्ष—

उनको भी मौका मिलेगा।

(व्यवधान)

श्री हरीशकुमार गंगवार—

मैंने काफी गौर से बातें सुनीं और माननीय रामायण राय जी चले गये और वे अक्सर ऐसी बातें यहां किया करते हैं जिससे कि अव्यवस्था हो। यद्यपि वे अपने को संसदीय पद्धति का बड़ा ज्ञाता कहते हैं, और श्रीमन्, हमें उसमें कोई एतराज नहीं है क्योंकि "रहिमन बुरा न मानिये, जो गंवार कहि जाय।"

श्री रामनरेश शुक्ल—

श्रीमन्, 'गंवार' शब्द क्या सदन में प्रयोग किया जायेगा ?

श्री अध्यक्ष—

रहीम का दोहा असंसदीय नहीं कहा जायेगा।

श्री हरीश कुमार गंगवार—

जिन्होंने इस जनता के विश्वास की अवहेलना की हो, जो इधर से फ्लोर क्रास करके मुड़ चले गये हों उस आदमी को उसी प्रकार से संज्ञा देनी चाहिये जैसे कि हम एक नये मुल्ला को कहते हैं कि वह पांच वक्त के बजाय ६ वक्त नमाज पढ़ता है।

इसके अतिरिक्त मैं रामायण राय जी के विषय में कुछ कहना नहीं चाहता हूं। एक बात माननीय लक्ष्मीरमण आचार्य ने कही है। उन्हें इस बात से तकलीफ है कि कोई भी काम हो जाय, अकाल हो जाय, सूखा हो अतिवृष्टि हो तो जनता कांग्रेस का ही नाम लेती है और उसी को जिम्मेदारी ठहराती है। श्रीमन्, हमारे यहां परम्परा चली आयी है लोग इस बात पर विश्वास करते हैं कि प्रजा को राजा या सरकार के सब पापों का फल भुगतना पड़ता है। श्रीमन्, कांग्रेस के २० वर्ष के

पापों का फल प्रजा को भुगतना पड़ रहा है। इसलिये उसका निश्चित विश्वास है कि जितनी भी आपदायें प्रजा पर आ रही हैं उन सब की बानीमुबानी कांग्रेस सरकार है। मैं अपने क्षेत्र की बात बताऊं। सुनकर कांग्रेसी साथियों को हंसी आयेगी लेकिन सोचने के काबिल बात है। मैं एक गांव में गया। वहां दो औरतों में जिक्र हो रहा था। एक ने कहा कि तेरे लड़कियां ही लड़कियां हो रही हैं तो उसने जवाब दिया कि क्या करूं यह सब कांग्रेस के पापों का फल है। आप देखें कि जनता के अन्दर इस कांग्रेस सरकार के प्रति कितना असंतोष है, जनता कितना उनका तिरस्कार करती है।

माननीय गौतम जी ने कहा कि बहुत सी जगहों पर विरोधी पार्टियों ने कांग्रेस को जिताया लेकिन मैं उनको निश्चित उदाहरण दे सकता हूं कि बरेली में कम से कम तीन सीटों पर एक गुट विशेष ने दूसरे गुट विशेष के लोगों को हराने का पूर्ण प्रयत्न किया। इसलिये पहले वे अपने गरेबान में मुंह डाल कर देखें, तब दूसरों से कहें।

यहां बड़ी-बड़ी योजनाओं की बात कही गयी है कि हमने इतना रुपया खर्च किया। यह भी कहा गया कि सेंटर ने हमें कम रुपया दिया। इनकी एक किताब है—'योजनाकाल की सफलता"। उसमें दिया हुआ है कि पहली योजना में २४ रुपया दूसरी योजना में ३४ रुपया और तीसरी योजना में ६ रुपया प्रति व्यक्ति खर्च किया गया और २४ रुपया प्रति व्यक्ति खर्च करके पहली योजना में २४८ रुपया प्रति व्यक्ति आय हुई, ३४ रुपया खर्च करके २५० रुपया प्रति व्यक्ति आय हुई और तीसरी योजना में ६८ रुपया खर्च करके २५८ रुपया प्रति व्यक्ति आय हुई। यह आपकी योजनाओं की सफलता नहीं, असफलताओं का ही द्योतक है। हो सकता है आपने पुल, पुलिया, नहर और बिजली का काम किया हो, लेकिन जनता तो केवल इसी बात से जानती है कि उसकी प्रति व्यक्ति आय बढ़ी है या नहीं। इसीलिये जनसंघ ने कहा—"जनसंघ का मत है कि योजनाओं के उद्देश्य, प्राथमिकतायें, तकनीक तथा व्यूह रचना में परिवर्तन करना चाहिये। योजना का आधार देश के साधन और क्षमता होना चाहिये। वह व्यावहारिक हो तथा उसका उद्देश्य अर्थव्यवस्था का समूल विकास होना चाहिये।" इसलिये हम योजनाओं के बदलना चाहते हैं। योजनाओं से प्रति व्यक्ति आय में बढ़ोत्तरी होनी चाहिये। अगर आय नहीं बढ़ती तो उस योजना का कोई मतलब ही नहीं है।

श्रीमन, खाद्य नीति की बहुत चर्चा की गयी। हमने स्पष्ट रूप से मिक्स्ड इकानमी की बात कही है। खाद्य नीति के संबंध में हमने कहा है कि खाद्य निगम की शाखायें सभी प्रदेशों में खोली जायेंगी जो एक प्रतिस्पर्शी व्यापारी के नाते काम करेंगी। सरकारी और प्राइवेट सेक्टर दोनों में काम होगा, किसानों से बाजार मूल्य पर ही माल खरीदा जायगा। दाम गिरने पर पूर्वघोषित न्यूनतम मूल्य पर निगम माल खरीदेगी। खाद्य निगम किसानों से फसल का अग्रिम सौदा करेगा। इससे एक ओर किसान की कर्ज की आवश्यकता पूर्ण हो जायगी तथा दूसरी ओर निगम को धान्य की आश्वस्ति रहेगी। आज दिक्कत यह है कि सरकार प्रौक्योरमेंट तो करना चाहती है, लेकिन भाव गिरने पर सरकार के पास कोई भी व्यवस्था नहीं है जिस के द्वारा गिरते हुये भावों को रोका जा सके। आपने खेती का बीमा करने का कोई संकल्प नहीं किया जिस से किसानों को कुछ सुभीता होता।

इस राज्यपाल के अभिभाषण की बड़ी दुहाई दी गई कि प्रदेश में सामान्य चुनाव बड़ी निष्पक्षतापूर्ण और शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हुये हैं। मैं तो आप को उदाहरण दूंगा कि अगर यह चुनाव निष्पक्षतापूर्ण ढंग से और शांतिपूर्ण तरीके से सम्पन्न हुय होते तो आपके माननीय गुप्ता जी यहां के मुख्य मंत्री न हुए वह केवल ७० वोट से मुख्य मंत्री बने हैं जिन के यहां चुनाव अधिकारी ने दूसरे उम्मीदवार की रिकाउंटिग की जायज मांग को अस्वीकार कर दिया। मुझे यकीन है कि अगर उनकी प्रार्थना स्वीकार की गई होती तो विरोधी प्रतिनिधि ५,००० वोटों से जीता होता, लेकिन वहां पक्षपात किया गया। यही निष्पक्षता है? मैं ज्यादा नहीं कहूंगा कि हमारे यहां आंवला कांस्टीटुयेंसी में भी रिटर्निंग आफिसर ने दुबारा मतगणना की आज्ञा प्रदान नहीं की।

[श्री हरीशकुमार गंगवार]

जिस समय माननीय राज्यपाल का भाषण हुआ तो उन्होंने कहा कि आपको यह जानकर संतोष हुआ होगा कि नई सरकार के बनने पर पहले ही दिन मुख्य मंत्री के आश्वासन पर राज्य कर्मचारियों ने अपनी कलमबन्द हड़ताल वापस ले ली । मेरा तो यह निश्चित मत है कि श्री चन्द्रभानु गुप्त अपने ध्येयों की पूर्ति के लिये सुचेता सरकार के खिलाफ राज्य कर्मचारियों को उकसाते रहे और सुचेता जी को हटाकर स्व सरकार बनाने का स्वप्न देखते रहे और उन को यहां से विदा करके ही छोड़ा । अगर यही कदम पहले उठाये गये होते तो यह हड़ताल पहल ही समाप्त हो गई होती । आज भी केवल आश्वासन दिया गया है, दिया कुछ नहीं गया है, इतना तो वह पहले भी कर सकते थे । केवल सुचेता जी को हटाने और बदनाम करने के लिये यह सब कराया गया था . .

(लाल बत्ती होने पर)

मैं चाहता था कि अभी मुझे कुछ समय और दिया जाय.....

श्री अध्यक्ष---

अब यह संभव नहीं है आपका एक मिनट बाकी है उस की जगह आप २ मिनट और ले लें ।

श्री हरीश कुमार गंगवार---

अभी यहां खाद्य नीति की भी चर्चा की गई, लेकिन छापे जो मारे गये, बरेली की मैं जानता हूं कि वहां २४ घंटे पहले छापों की खबर पहुंच गई और माल गायब कर दिया गया । वहां पर ९ दूकानें सस्पेंड की गई और एक भी ऐसी नहीं है जो फिर बहाल न हो गई हो । मैंने खुद एक कलारानी सक्सेना की दूकान पर रात को माल पकड़वाया, लेकिन उन की दूकान भी चुनाव के बाद रेस्टोर कर दी गई । बरेली के इतिहास में एक भी दूकान ऐसी नहीं है जो एक मास से अधिक सस्पेंड रही हो और बाद में रेस्टोर न कर दी गई हो । इस तरह से न गल्ला मिल सकता है और न जनता का भला इन छापों से हो सकता है । मुनाफाखोरी का बाजार खुले आम जारी है ।

(लाल बत्ती होने पर)

केवल २ मिनट और चाहूंगा । हमारे यहां सफाल साहब शिक्षा के डायरेक्टर हैं । ५० हजार से १ लाख की कमाई पाठ्य पुस्तकों की मंजूरी में की गई है । अपनी पावर का मिसयूज कर के अपने हिसाब से एग्जामिनर्स और कमेटियों की नियुक्ति की और मंत्रिमंडल को प्रसन्न किया ।

इसी तरह से सूचना विभाग में भी बहुत गड़बड़ है । श्रीमन, आपको जानकारी होगी कि इस विभाग के एक श्री लक्ष्मी कांत तिवारी थे वे १४०० रुपये पर नियुक्त हो गये हैं । उनका काम केवल रुपया इकट्ठा करने का था । उन्होंने ब्लिट्ज अखबार को १५,००० रुपये के विज्ञापन दिये और उन्होंने भाषणों को उस अखबार में छपवाया । (व्यवधान) मैं तो श्रीमन्, आपके द्वारा सरकार से प्रार्थना करूंगा कि वह एक हाई पावर कमेटी बिठाये जो इस सूचना विभाग के सारे कृत्यों की छानबीन करे ।

कुंवर देवेंद्र सिंह (जिला बिजनौर)--

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने जो मुझे बोलने का समय दिया, इसके लिये मैं आपका आभारी हूं और मैं कोशिश यही करूंगा कि मैं कम से कम समय लूं। महामहिम राज्यपाल के अभिभाषण पर काफी विवाद हो चुका और उस पर दोनों ओर से घोर विरोध दर्शाया गया है मैं इस प्रस्ताव पर दिये गये संशोधनों का समर्थन करता हूं और

आपसे प्रार्थना करता हूं कि बड़ा हार्दिक दुख है कि महामहिम राज्यपाल ने अपने भाषण में बढ़ी हुयी महंगाई, और सस्ते गल्ले की दुकानों पर अनाज भेजवाने आदि के संबंध में कोई वर्णन नहीं किया । दूसरी बात जो मुझे निवेदन करनी है वह यह है कि जिन स्थानों पर ओले से या अतिवृष्टि से या सूखे से हानि हुयी है, वहां के रहने वाले किसानों की न तो तकावी देने और न उनकी मालगुजारी माफ करने का कोई जिक्र इसमें किया गया है। इसके अतिरिक्त और जितनी आवश्यक बातें थीं, उनको भी नजरअन्दाज कर दिया गया ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से अपने जिले की और विशेषकर अपने क्षेत्र की दीन दशा को माननीय गुप्ता जी के मंत्रिमंडल के सामने रखना चाहता हूं। इसके विषय में कुछ खुद नहीं कहना चाहूंगा जिससे हमारी सरकार कहीं यह न समझे कि मैं अतिशयोक्ति का सहारा ले रहा हूं। उनका ध्यान तीसरी पंचवर्षीय जिला योजना (१९६१–६६) जो कि इनको राम बाण चूरन है, की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि इस प्रदेश का कितना पिछड़ा हुआ यह जिला है। इसमें लिखा है कि "जिले की मुख्य समस्या सिंचाई के साधनों की भारी कमी है।" यह समस्या कोतवाली ब्लाक के बढ़ापुर इलाके में और पूरे नजीबाबाद विकास क्षेत्र में अति गम्भीर है। साथ ही इस जिले में बिजली की कमी है, जिसके कारण ट्यूबवेल पूरा-पूरा काम नहीं कर पाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में समुचित घरेलू उद्योग धंधों के आयोजन को भी आवश्यकता है। यह कहना अनुचित न होगा कि इस जिले में बहुत अच्छे आम के बाग हैं और फल संरक्षण कार्यक्रम भी भली प्रकार किया जा सकता है। एक कोल्ड स्टोरेज की भी जरूरत है। खेती बारी की उन्नति के लिये अच्छे यंत्रों का होना आवश्यक है और उनकी मांग भी बहुत है। किन्तु यहां ऐसा कारखाना नहीं है जो रहट और खेती के काम के औजारों के बनाये। लेकिन होता कुछ नहीं है। जिले में कोल्ड स्टोरेज और बड़ी इंडस्ट्रीज को नजरअन्दाज किया गया है। इलाके के गांव वाले कहते हैं कि इस जिले के रहने वालों के साथ सौतेली मां जैसा व्यवहार किया जाता है।

दूसरी बात जो मुझे कहनी है वह यह है कि यह क्षेत्र राजधानी दिल्ली से केवल १२० मील दूर है लेकिन होता क्या है।

(इस समय १ बजकर १८ मिनट पर अधिष्ठाता, डाक्टर राजेंद्र कुमारी बाजपेयी पीठासीन हुयीं।)

अधिष्ठाता महोदया, बरसात के दिनों में जैसे अमरीका में टिम्बकट है उसी प्रकार यह इलाका हो जाता है। बरसात में यातायात का कोई साधन नहीं रह जाता और न चिकित्सा का ही कोई साधन रह जाता है। सारी दुनिया से यह कट कर अलग रह जाता है। यदि चण्डी घाट पर पक्का पुल बन जाय और उसे पक्की सड़क बनाकर क्षेत्र की पक्की सड़क से मिला दिया जाय, तो न केवल यह क्षेत्र, बल्कि हरिद्वार, सहारनपुर, देहरादून और गढ़वाल, सभी जिलों की उन्नति हो सकती है। नजीबाबाद शहर में एक मैटरनिटी व जनरल अस्पताल की बहुत आवश्यकता है। इस कार्य के लिये वहां की जनता २ लाख रु० देने को तैयार है अगर बाकी रकम सरकार लगाये और अगर सरकार यह कर दे तो आधा यूनिट का अस्पताल गाजियाबाद की तरह का या पूरी यूनिट का अस्पताल सहारनपुर की तरह का आसानी से बन सकता है। लेकिन यह जो चूरन हमारी सरकार दे रही है, इससे और पेट में दर्द भूख का उठ रहा है।

यह कांग्रेस सरकार बनी कैसे जो विधायक हमारी मीटिंगों में दस्तखत कर चुके हैं, मिनिमम प्रोग्राम कमेटी की, और जिन्होंने कांग्रेस की आलोचना की, वही आज कांग्रेस के गुण गा रहे हैं। इस का क्या कारण है? यह आप खुद ही समझ सकते हैं। मैं तो कहूंगा सबसे बड़ा कारण यह है कि उन्हें किसी न किसी प्रकार का, कोई न कोई प्रलोभन दिया गया और उस के कारण वे पतन की ओर चले गये। मैं उन सदस्यों को बुरा नहीं कहता क्योंकि वे मानव है। मुझे तो अफसोस होता है गांधी जी के चेलों पर जिन्होंने उन को पथभ्रष्ट किया। जो कि सत्य का पाठ पढ़ाते थे उन्होंने प्रलोभन दे कर झूंठा सच्चा, उन को

[कुंवर देवेन्द्र सिंह]

पतन की ओर अग्रसर कर दिया । जैसा अखबारों में आ चुका है माननीय नेकराम शर्मा जी ने तो अपने स्टेटमेंट में अपनी गलती को ऐडमिट किया है और कहा कि मैंने तो 'पोलिटिकल सुइसाइड' कर लिया है। हमारे क्षेत्र में पोलिटिकल मर्डर्स हो रहे हैं । जैसा यही लालजी ने बताया मुरादाबाद में पोलिटिकल मर्डर्स हो रहे हैं और कल मेरठ में एक पोलिटिकल मर्डर हुआ है । माननीया मुझे अकबर इलाहाबादी की एक शेर याद आता है: "बुद्धू मियां भी हजरते गांधी के साथ हैं, मुश्तये खाक हैं पर आंधी के साथ हैं ।" बड़े बड़े नेताओं ने जो पहले कांग्रेस में रहे, उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी और आज जो यहां रह गये यह मुट्ठी भर धूल है । माननीय राज्यपाल ने जिस प्रकार अल्पमत में होते हुये भी कांग्रेस को प्रदेश की ८ करोड़ जनता पर बैठा दिया है उस के कारण मैं उनके अभिभाषण का समर्थन किसी भी तरह से करने के लिये तैयार नहीं हूं । धन्यवाद !

श्री गुलाब सिंह (जिला देहरादून)--

अधिष्ठाता महोदय जो, धन्यवाद का प्रस्ताव माननीय कृष्णानन्दराय जी ने प्रस्तुत किया है उसका मैं समर्थन करता हूं । माननीय प्रताप सिंह जी ने कहा कि गवर्नर महोदय को केवल पौलिसी पर भाषण देना चाहिये था और माननीय गुप्ता जी की जो तारीफ की है वह उसमें नहीं होनी चाहिये थी । मैं कहना चाहता हूं यदि उन्होंने अभिभाषण पढ़ा हो तो उसमें स्पष्ट लिखा है कि "हमारी योजनाबद्ध अर्थ व्यवस्था में सरकार की अधिकांश नीति व कार्यक्रम पंचवर्षीय योजना पर निर्भर है । मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि पालिसी तो पंचवर्षीय योजना की कांग्रेस सरकार की रहती है और यह बात यही है कि ५ वर्ष बाद चुनाव होते हैं उसके बाद जिसकी सरकार हो वह अपनी नीति निर्धारित करे । इस कारण उन्होंने ठीक ही कहा कि ३ दिन का अरसा हुआ गुप्ता जी ने जो सरकार बनाई है उसका जो कार्यक्रम है उसका संक्षेप में इसके अन्दर वर्णन किया गया है और आने वाले बजट में विस्तृत रूप से जिक्र होगा। हमारे प्रदेश में सबसे बड़ी समस्या खाद्य समस्या है, बड़ी गंभीर समस्या है और इस पर हम सभी लोगों को बड़ी गंभीरता से सोचना है कि इस समस्या को कैसे हल किया जाय । जो सुझाव विरोधी दल के मित्रों ने तथा इधर बैठने वाले मित्रों ने दिये हैं मैं आशा करता हूं कि खाद्य मंत्री जी उनको कार्यान्वित करेंगे।

मैं भी कुछ सुझाव अपनी ओर से रखना चाहता हूं । यह बात कही गयी कि खाद्य समस्या युद्ध स्तर पर हल होनी चाहिये और जो लोग इसमें सहयोग नहीं देते हैं अगर उनके लिये मैं यह संज्ञा दे दूं कि वे देश द्रोही हैं तो उपयुक्त ही होगा । जो लोग जमाखोर (होर्डर्स) हैं उनको पकड़वाने वालों के लिये ईनाम घोषित किये जायं और जो अधिकारी सूचना मिलने पर तुरन्त कार्यवाही न करे उनके खिलाफ फौरन सख्त कदम उठाना चाहिए और मेरे बिचार से ऐसे लोगों को तुरन्त सस्पेन्ड कर देना चाहिये ।

प्रदेश को कैसे आत्म निर्भर बनाया जाय इस पर हमको सोचना होगा । नेहरू जी कहा करते थे कि हमको गांव का नक्शा बदलना है। नक्शा बदलने का मतलब हम यह समझते हैं कि गांव आत्म निर्भर हों कम से कम अन्न के मामले में । आज केवल शहरों की बात ही नहीं है । सारे प्रदेश में अन्न का संकट है । ८ करोड़ जनता को) अन्न की आवश्यकता है । बेबी कारणों से तथा कुछ और कमियों के कारण यह कमी हुई इसके लिये प्रत्येक गांवमें ट्यूववेल होने चाहिये और हर ट्यूववेल के एरिया को स्वावलम्बी होना चाहिये । वहां पर खाद, बीज के स्टोर हों । ट्यूबवेल को चलाने वाला छोटे स्तर का आदमी होता है । उसके सामने बड़ी दिक्कतें होती हैं । गांव के प्रमुख लोग उसे डरा धमका कर अपना काम बना लेते हैं और इस कारण वह पानी का वितरण जो सही ढंग से होना चाहिये नहीं हो पाता है । मैं एक सुझाव सुझाव यह देना चाहूंगा कि उसके साथ-साथ अगर एक पुलिस चौकी भी रख दी जाय तो उससे उसकी रक्षा भी हो जायगी और पानी वितरण भी ठीक होगा इससे कुछ हद तक

खाद्य समस्या भी हल होगी। तो हमें गांवों का नक्शा अवश्य बदलना है। अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो इस गंभीर समस्या को हल करने में बड़ी कठनाई होगी।

मान्यवर, एक बात और कहना चाहता हूं। महामान्य राज्यपाल ने अपने अभिभाषण में पहाड़ों का जिक्र किया और बार्डर के साथ-साथ टेहरी गढ़वाल, अल्मोड़ा और गढ़वाल का जिक्र भी किया और कहा कि इन जिलों की हालत बहुत खराब है और अन्य इलाकों के समकक्ष लाने के लिये कुछ विशेष योजनायें वहां चालू की जायेंगी और एक बोर्ड की स्थापना की जायगी। मैं पिछले साल भी निवेदन कर चुका था और आज उसे फिर दोहराता हूं कि पहाड़ी जिलों में नैनीताल तो पहले से ही आता है लेकिन देहरादून जिले का यह बड़ा दुर्भाग्य है कि उनमें उसको नहीं लिया गया। मैं फिर निवेदन करूंगा कि इस योजना में नैनीताल और देहरादून दोनों को सम्मिलित किया जाय। पहाड़ों की एक विशेष समस्या रहती है। जैसा कि मेरे अन्य साथियों ने कहा कि पहाड़ों की उन्नति कैसे हो क्योंकि मेरे मित्र, श्री त्रेपन सिंह नेगी जी ने जैसा कल कहा कि वहां दो-तीन महीने के लिये राशन होता है, तो पहले भी मैं कह चुका हूं और आज पुनः दोहराना चाहता हूं कि यदि आप पहाड़ों की हालत सुधारना चाहते हैं तो वहां हार्टीकल्चर कीजिये। यही एक तरीका है जिससे हम वहां के पिछड़ेपन को दूर कर सकते हैं। सन् ५८ में सरकार ने एक कौल्टा कमेटी बिठायी थी और उसने एक रिपोर्ट जौनसार बावर खाई के ऊपर प्रस्तुत की थी जिसमें कुछ सिफारिशें की गई थीं। उस रिपोर्ट पर अभी तक कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया। मैं सरकार से निवेदन करूंगा कि उसकी सिफारिशों को तुरन्त लागू कर दें।

जहां तक प्रशासन के सुधार की बात है यह सही है कि हमें उसमें सुधार करना होगा तभी हम प्रगति कर सकते हैं। मेरे मित्र श्री गंगवार जी ने कहा कि सभी योजनाओं में पैसा ज्यादा खर्च करते रहे लेकिन उसका नतीजा कुछ नहीं निकला। मैं उनसे निवेदन करूंगा कि योजना में जब पैसा खर्च होता है तो कुछ चीजें ऐसी होती है जिसमें धन की प्राप्ति तो नहीं होती लेकिन और बात प्राप्त कर लेते हैं। उदाहरण के लिये यदि हम शिक्षा पर खर्च करते हैं तो उसका रिटर्न कुछ नहीं मिलता है। इसी तरह से स्वास्थ्य पर भी खर्च करने का कोई रिटर्न नहीं मिलता। लेकिन इतना मानना पड़ेगा पहले जहां इस प्रदेश की औसत आयु २८–२९ वर्ष थी वहां अब वह ५० वर्ष हो गयी है। यह इस बात का सबूत है कि योजना में कुछ काम किया गया।

श्री अधिष्ठाता––

आपका समय समाप्त।

श्री राम आसरे (जिला बाराबंकी)––

(श्री वीरेश्वर त्यागी का नाम पुकारे जाने पर) मेरा एक निवेदन है कि आपकी निगाह बड़े नेताओं की तरफ ज्यादा पड़ती है। मेरी चार रोज से बराबर उठक बैठक हो रही है, जरा साधारण व्यक्तियों पर भी नजर डाल लिया करिये।

श्री अधिष्ठाता––

माननीय सदस्य अपना स्थान ग्रहण करें। नेता तो एक ही हैं। बाकी सब सदस्य हैं।

*श्री वीरेश्वर त्यागी (जिला मेरठ)––

अधिष्ठाता महोदय, जब हम लोग चुनकर आये तो हम लोग सोचते थे कि कांग्रेस की सरकार इस बार नहीं बनेगी। लेकिन हुशियारी और चालाकी से हमारे मित्रों ने कांग्रेस की सरकार बना ली तो प्रदेश की जनता में भिन्न-भिन्न प्रतिक्रियायें हुईं। एक प्रतिक्रिया यह हुई कि इनका आखिरी मौका मिला है इसलिये जनता को खुश करने के लिये कई नुमायां काम

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री वीरेश्वर त्यागी]

यह करेंगे। हम लोग उम्मीद करते थे कि आने वाले ६ महीनों के लिये ये प्रदेश को बनाने के लिये कोई नक्शा विधान सभा के सामने रखेंगे। लेकिन गवर्नर महोदय के इस अभिभाषण से तमाम बातें खत्म हो गईं। उम्मीदों का महल जो हम लोगों ने बनाया था वह खत्म हो गया।

आज वास्तविक स्थिति यह है कि प्रदेश की उन्नति की बात योजनाओं के जरिये कही जाती है। इससे पहले कि मैं योजनाओं के बारे में कहूं मैं एक बात नम्रतापूर्वक रखना चाहूंगा कि योजना को तारीख में मंत्री महोदय ने आंकड़ों के एक परदे के रखने की कोशिश की है लेकिन एक आंकड़ा वह बताना भूल गये कि जो औसत आमदनी प्रदेश के नागरिक की १९५२ में थी वह आज तीन पंचवर्षीय योजनाओं के बीत जाने के बाद भी बढ़ने के बजाय और कम हो गई है। यह एक ऐसी परीक्षा थी, यह एक ऐसा इम्तहान था जिसमें कांग्रेस सरकार असफल रही। हमें देखना यह है कि इन योजनाओं में रुपया लगता है, लेकिन हम कामयाबी के करीब क्यों नहीं पहुंच पाते हैं। दरअसल में बात यह है कि कांग्रेस सरकार ने योजनाओं को गलत तरीके से पकड़ा। यह रुपये को योजना की पूर्ति का साधन समझ बैठे जब कि रुपया केवल साधन जुटाने का जरिया हो सकता है। हम लोग रुपये की बात करते हैं, लेकिन जो हमारे प्रदेश में भरा हुआ है उन चीजों से जनता को खुशहाल बनाने की योजना नहीं बनाते हैं। हम तो योजनाओं को रुपये से तौलते हैं। नतीजा यह है कि रुपया कभी भी योजना की पूर्ति का साधन नहीं हो सकता है परन्तु साधन जुटाने का जरिया हो सकता है। जब तक हमारी सरकार बुनियादी नीति में आमूल परिवर्तन नहीं करती है तब तक कोई योजना सफल नहीं हो सकती है।

पिछले एक वर्ष में हमारे देश में जो घटनायें हुई हैं उनमें यह एक थी कि शिक्षा आयोग की सिफारिशें हमारे सामने आईं। प्रदेशीय सरकार ने यह कहा कि प्रदेश की शिक्षा का स्तर उठाने के लिये प्रदेश के शिक्षकों की हालत को अच्छा करने के लिये इसको लागू करेंगे। ५ दिसम्बर, १९६६ को पिछले शिक्षा मंत्री, माननीय कैलाश प्रकाश जी ने विधान परिषद में अपना भाषण देते हुए आश्वासन दिया था। कि शिक्षा आयोग ने जो सिफारिशें दी हैं उनको लागू कर देंगे। लेकिन हालत यह है कि राज्यपाल महोदय के भाषण में उसका कोई जिक्र नहीं है। शिक्षा के माध्यम से जनता की बेहतरी की बात का कोई जिक्र हम नहीं पाते हैं। मैं जानना चाहता हूं कि जब राज्यपाल महोदय ने अपने भाषण में सरकारी कर्मचारियों की मांग को स्वीकार किया है। मैं सरकारी कर्मचारियों की मांग का हिमायती रहा हूं और मेरा सहयोग रहा है और मैं उसका स्वागत करता हूं कि सरकारी कर्मचारियों की मांग को माना गया। सरकार ने समान काम के लिये समान वेतन के सिद्धान्त को कबूल किया है लेकिन अजीब बात यह है कि इस सिद्धान्त को मान लेने के उपरान्त भी जो माध्यमिक शिक्षा में काम करते हैं उनके लिये यह सिद्धान्त स्वीकार नहीं किया गया है। जो माननीय सदस्य नुक्ताचीनी कर रहे थे वह समझ लें कि जब केरल गवर्नमेन्ट ने पहली घोषणा की और उसमें समान काम के लिये समान वेतन वाले सिद्धान्त को राज्य कर्मचारी और शिक्षकों के लिये यानी दोनों के लिये माना है, उत्तर प्रदेश एक दुर्भाग्यपूर्ण प्रदेश है जिसकी सरकार इस सिद्धान्त को बुनियादी तौर पर मानने को तैयार नहीं। माननीय चन्द्रभानु गुप्त ने राज्य कर्मचारियों की मांगों को इसलिए मान लिया क्योंकि राज्य कर्मचारियों का आन्दोलन उनके हाथ लग गया। लेकिन लगता है कि सिद्धान्त रूप से आज भी सरकार समान कार्य के लिए समान वेतन के सिद्धान्त को नहीं मानती। सरकार जब प्रदेश में शिक्षा के माध्यम से जनता की बेहतरी करने की बात करती है तो शिक्षा की हालत को बेहतर करने का सवाल सबसे पहले आता है। उत्तर प्रदेश के शिक्षकों और विद्यार्थियों ने अपने लिए चुनौती मानकर सरकार की शिक्षा नीतियों का विरोध किया और शिक्षा मंत्री को चुनाव में हराया। हमारे कांग्रेस के मित्र लोक तंत्र की दुहाई देते हैं। अगर वह ईमानदारी से लोकतंत्र के सिद्धान्तों को मानते हैं तो जब

शिक्षा मंत्री हार गये तो उनके समय में जो शिक्षा पद्धति थी, जितनी गलत नीतियों को शिक्षा मंत्री ने चलाया था, उनमें आमूल परिवर्तन होना चाहिये था। लेकिन हमारी सरकार उन्हीं गलत नीतियों को चलाना चाहती है।

जब मैं लखनऊ आया तो कई मकानों पर यह लिखा हुआ देखा कि माननीय मुख्य मंत्री, श्री चन्द्र भानु गुप्त उदारता से मुख्य मंत्री बने हैं। २० सालों में कांग्रेस ने कई मुख्य मंत्री दिये हैं। लखनऊ, रानीखेत, अल्मोड़ा के मकानों पर यह भले ही लिखा मिल सकता है लेकिन आज भी कांग्रेस पार्टी एक ऐसा मुख्य मंत्री नहीं दे सकी जिसके बारे में कह सकें कि उनकी उदारता से उत्तर प्रदेश नया उत्तर प्रदेश बना। आज माननीय मुख्य मंत्री उन लोगों की तरफ ध्यान नहीं देते जो हजारों लोग बेघरबार हैं, बेरोजगार हैं। आज उनका कार्य केवल हारे हुए मंत्रियों को नौकरी देना मात्र रह गया है। मेरी हर दलील की, मेरी हर बात की माननीय मुख्य मंत्री और उनके साथी सफाई देंगे लेकिन आज आवश्यकता है कि सफाई वह अपने विभागों की करें, भ्रष्टाचार की करें, अपने आपसी मनमुटाव की करें। अन्त में मैं एक शेर अर्ज करूंगा--

इधर-उधर की न बता, यह बता कि काफिले क्यों उलटे,
मुझे रहजन का डर नहीं, तेरी रहबरी का सवाल है।

श्री राजा राम (जिला आगरा)--

माननीय अधिष्ठाता महोदय, इस सदन में मुझे आज पहली बार बोलने का मौका दिया मैं इसके लिये आभारी हूं। आज श्री राज्यपाल के भाषण पर जो बहस चल रही है मैं उसका स्वागत करते हुए अपने कुछ विचार रखना चाहता हूं।

हमारे देश में आजादी आयी। आजादी को आये हुए बीस वर्ष हो गये लेकिन जितनी जाग्रति होनी चाहिये थी उतनी जागृति इस देश में नहीं हुई है। हमारे देश के नेता आपसी गुटबन्दी में लगे रहते हैं। आप कहां से आये, कैसे आये, क्या होना था, क्या होना चाहिये, ये सब बातें पूछने के सिवाय उनके पास और कोई काम नहीं है। हमारे सभी नेताओं के पास देश का काम करने के लिये टाइम नहीं है। उसका एकमात्र कारण यह है कि जो काम उन्हें करना है, सोचना है वे अलग जाकर सोचते हैं। यह नहीं कि सदन के सदस्य होते हुये यहां की बैठक अटेंड करें। मैं अपने सभी साथियों से कहूंगा कि मंत्रियों से निवेदन किया जाय कि जब तक सदन चलता रहे, तब तक वे सभी सदन को अटेंड करें।

मान्यवर, जिस क्षेत्र से मैं आया हूं वह मजदूरों का क्षेत्र है। उस क्षेत्र के पूंजीपति मजदूरों के साथ बुरा व्यवहार करते हैं और वहां के कर्मचारी इतने भ्रष्ट हो गये हैं कि उनके कानों तक मजदूरों की आवाज नहीं जाती कि उनके साथ क्या हो रहा है जैसे-लेबर इंसपैक्टर, लेबर कमिश्नर या लेबर विभाग के जितने अधिकारी हैं, यदि उनके कानों तक वे अपनी आवाज पहुंचाते भी हैं तो उन्हें रिश्वत देकर मजदूरों की आवाज बन्द कर दी जाती है और उनकी कोई आवाज सुनी नहीं जाती। हमारी सरकार समाजवाद का नारा लगाती है, परन्तु आज गरीब और गरीब तथा अमीर और अमीर होता जा रहा है। इसका भी कारण है। हमारी सरकार ने एक नारा लगाया है कि वह समाजवाद लाई है, लेकिन वह समाजवाद क्या है उसको भी जरा आप गौर करके सुनें। "हर माल मिलेगा एक आना," चाहे गेहूं ले लो, चाहे जौ ले लो, चाहे चना ले लो, चाहे बेसन ले लो--सभी चीजें एक ही भाव पर मिलेंगी। हमारी सरकार का यही समाजवाद है और बाजरा के अन्दर भी एक और चीज मिलाई गयी है जिसे ढेचा कहते हैं और इस तरह का समाजवाद हमारी सरकार लाई है।

मान्यवर, मैं फिरोजाबाद क्षेत्र का रहने वाला हूं। उदाहरण के रूप में मैं आपको बतलाऊं कि सन् १९४७ से लेकर आज तक मेरे क्षेत्र में मजदूरों का कोई काम नहीं हुआ है। वहां

[श्री राजाराम]

पर मजदूरों को सन् १९४७ में ३ रु० से लेकर ४० रु० रोज तक मिलता था। जब कोई एक गुच्छा चूड़ियों का निकालता था तो उसकी कीमत थी १ रु० ६ आने, जब कि एक तोड़े की कीमत ३ रु० १० आने हो गयी है और उन मजदूरों की मजदूरी डेढ़ रु० से लेकर १० रुपये तक हो गयी है। मैं पूछता हूं कि क्या मंहगाई केवल मालदारों के लिये आयी है? जो हमारे सरकारी कर्मचारी हैं उनकी मंहगाई भत्ता तो बढ़ा दिया गया लेकिन फिरोजाबाद के मजदूरों को कोई मंहगाई भत्ता वगैरह नहीं दिया गया। क्या उनके लिये सरकार का अलग से कोई कानून है? क्या सरकार उन मालदारों के लिये अलग से निष्पक्ष तरीके से सोच सकती है? वहां पर मजदूरों के लिये न अच्छे रेट न तो प्रोविडेन्ट फन्ड है, न बोनस है और न वहां पर मजदूरों को जितनी और सुविधायें मिलनी चाहिये, वे भी नहीं सरकारी नियमानुसार। सन् १९४७ से लेकर आज तक कोई मंत्री वहां नहीं गया है, और न आज तक निगाह उठाकर ही देखते हैं कि क्या हो रहा है। मजदूरों ने अपनी मांग जब की तो वहां के सेठ मंत्री जी से मिल लिये और जो उन्होंने कहा वह मंत्री जी ने ठीक समझा और मजदूरों ने जो आवाज उठाई वहा आवाज मरोड़ दी गयी। हमारी आवाज १५ जून को उठी जिसमें कि कई हमारे साथी जेल गये। १८ जून को, जिसमें भी हमारे कई साथी जेल गये और ३० जून को तो आवाज उठाने में हमारे घर के आदमी ही बन्द कर दिये गये जब कि अकेला मै लीडरी करने वाला था। हमारे क्षेत्र के अन्दर देखिये, सिंचाई मंत्री जी जबाब दीजिए, आज तक ५ वर्ष के अन्दर हमारे यहां न कोई ट्यूबवेल लगा न कोई बम्बा निकाला न कोई दगदा निकाला और न कोई पैसा ही सरकार की तरफ से दिया गया जैसा कि अन्य जगहों पर लाखों, करोड़ों रुपया सरकार द्वारा बांटा गया है। आज न हमारे क्षेत्र में इस तरह के साधन हैं कि आदमी आ जा सकें। अगर कोई आदमी आने जाने के लिये रास्ते के लिये कहें तो उसकी बात नहीं सुनी जाती है। हमारे फिरोजाबाद के पूर्व क्षेत्र में सौंगाई, सिकहरा, जलालपुर, दतावली आदि जो गांव हैं जहां २० हजार के करीब आदमी रहते हैं, वहां न तो पानी का साधन है न सड़क का साधन है। विकास तो तभी हो सकता है जब हमारी सरकार वहां पर पानी का इन्तजाम करे। होता यह है कि जरा भी जो मंत्री जी का पहचानता है उसका काम हो जाता है और शेष लोगों का कोई काम नहीं हो पाता है। अध्यक्ष जी के यहां मैं गया तो मुझे कह दिया कि २ मिनट बाहर रहिये, फिर मिलूंगा। तो यदि मैं २-२ मिनट बाहर रहने लगूं इस तरह से तो मेरा सारा समय तो ऐसे ही निकल जाएगा और मैं सदन में क्या आ सकूंगा और क्या अपने क्षेत्र का कार्य कर सकूंगा। हमारे भाई नेता विरोधी दल ने कहा कि यदि कोई मैं सच बात भी कहता हूं तो सरकार उसे नहीं मानती है, तो मैं सरकार से चाहता हूं कि यदि वह किसी बात को वास्तविक और ठीक समझती है वह खुद उनकी बात न मानकर अपनी ही तरफ से मान लिया करें तो अच्छा हो।

जहां तक पैदावार और किसानों का सवाल है जब तक हमारी सरकार सही तरीके के साधन किसानों के लिये नहीं जुटाएगी और क्षेत्र-क्षेत्र में जाकर नहीं देखेगी तब तक सुधार नहीं हो सकता है। मैं माननीय कृषि मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि वह कितना खेती के बारे में जानते हैं? मैं हल भी चलाना जानता हूं इसलिये इसके कार्य क्षेत्र में उन्हीं आदमियों को रखा जाय जो खेती करना जानते हैं और किसान हैं। जेल जाने वाली बात तो हमारे विकल जी ने कही। तो मैं कहना चाहता हूं कि जब इस फील्ड में कोई आदमी आता है तो वह जेल से घबड़ाता नहीं है। जेल काटना कोई बड़ी बात नहीं है। जेल काटने से कोई बड़ा आदमी नहीं हो जाता है कि उसे महत्वपूर्ण पद दिए जाएं, यही केवल योग्यता की पहचान नहीं है। यों तो चोर, डाकू भी जेल काटते हैं, वे सब बड़े नहीं हो सकते। हमारे मित्रों ने कहा कि उन्हें टिकट नहीं मिला तो वे विरोधी पक्ष में मिल गये। तो मैं कहता हूं कि आपने जो अच्छा आदमी समझकर जिसे टिकट दिया था वह जीत कर क्यों नहीं आया, वह क्यों हार गया? खाद्य समस्या के बारे में मैं कहना चाहता हूं कि तारीख १६ मार्च को हम लोगों ने कसमें खाई थीं कि हम अच्छे से अच्छा

काम करेंगे। इसलिये आपसे प्रार्थना है कि आप अपने-अपने क्षेत्र में अच्छे से अच्छा काम करने के लिये तैयार रहें, आप चाहे जिसके पक्ष में भी हों।

श्री राम नरेश पांडेय (जिला देवरिया)—

अधिष्ठात्री महोदया, यह पहला अवसर है जबकि आपने मुझे इस सदन में बोलने का अवसर प्रदान किया है। दो-तीन दिनों में मैंने दोनों पक्षों की बहुत सी बातें सुनीं। समाजवाद की व्याख्यायें विभिन्न लोगों की तरफ से आयीं। मैंने उन्हें बड़े गौर से सुना। कांग्रेस पक्ष से समाजवाद की बड़ी दुहाई दी जा रही है। इसके बारे में अनेक बार शंका उठती है। उस सम्बन्ध में निवेदन करता हूं कि हर क्षेत्र में जो समस्यायें हैं वे ही इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि इन २० वर्षों में किस प्रकार का समाजवाद आ सका है। मैं उस कुशीनगर क्षेत्र से आता हूं जिसका बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय महत्व है, उसका एतिहासिक और पौराणिक महत्व है। केन्द्रीय सरकार ने उसके उत्थान और उन्नयन की योजनायें चलाईं। वहां सड़कें मौजूद हैं। वहां एक ट्यूबवेल है, जहां पर कम्बोडिया, अनाम, श्याम दूर दूर से लोग आते हैं लेकिन ६ महीने से वहां पानी नहीं है। हमने सरकार को लिखा लेकिन अब तक कोई कार्यवाही नहीं हुई।

दूसरी समस्या बस स्टेशन की है। २५ वीं बुद्ध जयन्ती मनाने के सिलसिले में करीब ढ़ाई एकड़ का एक प्लाट सरकार ने लिया था बस स्टेशन बनाने के लिये, वहां सज्जा सामान सब पड़ा है लेकिन वहां पर बस स्टेशन का नाम तक नहीं है। हम चाहते हैं कि सरकार वहां तत्काल कदम उठाये और पर्यटकों के हित के लिये कार्यवाही की जाय।

मान्यवर, वहां से २ मील दूर कसया नगर है। वह नगर बरसात में डूब जाता है। पी० डब्लू० डी० के मंत्री जब हाल में वहां गये थे तब हमने उनका ध्यान आकृष्ट किया था। इत्तिफाक से उसी दिन पानी गिरा हुआ था, लगभग २ फीट पानी भरा हुआ था। वहां पानी के निकास के लिये कोई ड्रेनेज नहीं है। गुप्त जी के सामने यह प्रश्न आ चुका है। मैं माननीय पी० डब्लू० डी० के मंत्री से कहना चाहूंगा हूं कि वे अपने जिले की स्थिति को देखें। अगर वह उसके उत्थान और उन्नयन का काम नहीं करेंगे तो जिन जिलों के बारे में उन्हें ज्ञान नहीं है उनका क्या भला होगा।

मेरे जिले में एक पथरदेवा विकास खंड है। वह छपरा जिले के पास है। विकास क्या है, विकास का उपहास है अगर यह कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं है। वहां पर नाम मात्र को कोई भी सड़क नहीं है। बरसात के दिनों में तो चलना फिरना दूभर हो जाता है। गत बरसात में क्या हुआ। वहां के एक आदमी की बेटी बीमार थी। वह उसके लिये अस्पताल जाना चाहता था। उसको लेकर वह जाना चाहता था। उसको लेकर वह जाना चाहता था। लेकिन त्रिमुहानी पर वहां पुल नहीं था। और उसका बुरा नतीजा हो गया। बरसात के दिनों में यातायात ठप हो जाता है बिनापुल के, इसलिये वहां एक पुल का बनना वहां की जनता की सुख-सुविधा के लिये बहुत आवश्यक है।

मान्यवर, जहां तक शिक्षा का सम्बन्ध है राज्यपाल के अभिभाषण में संकेत मात्र है। हमने आशा की थी कि शिक्षा जगत में अब एक क्रान्तिकारी परिवर्तन होगा सरकार चेतेगी और शिक्षक समुदाय को राहत देने के लिये कोई क्रान्तिकारी कदम उठेगा। लेकिन हमें बड़ी निराशा हुई। स्कूलों में एक मिडडे मील की स्कीम चालू करने की बात थी लेकिन सरकार कहती जरूर है लेकिन जब तक पर्याप्त सुख सुविधा नहीं दी जायगी और पढ़ने के लिये पुस्तकें मुहइया नहीं की जायंगी तब तक शिक्षा में प्रगति नहीं हो सकती है। एक तरफ शिक्षा की यह दुर्व्यवस्था है और दूसरी तरफ माध्यमिक शिक्षा के शिक्षकों की दुर्व्यवस्था भी शोचनीय है। जब तक माध्यमिक शिक्षकों के सरकारी और गैर सरकारी अध्यापकों के वेतन में अन्तर है, खाई है उसको पाटने के लिये सरकार की तरफ से कदम नहीं उठाया जायगा तब तक उनकी दशा सुधर नहीं सकती है।

मैं सदन का ध्यान कृषि की तरफ भी आकर्षित करना चाहता हूं। हमारे यहां बरबा सरकारी फार्म है जहां पर खेती के बीज तैयार किये जाते हैं। वहां पर सरकारी ट्यूबवेल है

[श्री रामनरेश पांडेय]

जिसका उपयोग सरकारी फार्म के लिये होता है। हमने सरकार से कहा और लिखा और सरकारी अधिकारियों से बात की कि इस पानी को रिलीज करके दूसरे किसानों के फायदे के लिये दे लेकिन अभी तक वह बात सुनी नहीं गई है। अगर वह पानी रिलीज कर दिया जाय और काश्तकारों को उचित रेट पर वह पानी दिया जाय तो इससे काश्तकारों का बहुत बड़ा लाभ हो सकता है और पैदावार में उन्नति हो सकती है। वहां पर विशेषरूप से गन्ने की खेती होती है उसमें बचत लाभ हो जायगा। एक बात और यह कहना चाहता हूं कि देवरिया जिला परिषद् के अन्दर २ वर्ष में कुछ आयुर्वेदिक वैद्यों को निकाल कर बाहर कर दिया गया था। सरकार को उन्होंने लिखा और रिप्रिजन्टेशन भी भेजा और सरकार का आदेश भी गया लेकिन जिला परिषद् की मनमानी के कारण आज तक वे वैद्य नौकरी नहीं पा सके हैं। इसी प्रकार से कसिया के अन्दर जो अस्पताल है उसकी हालत बड़ी दयनीय है। १०० रुपये से अधिक दवाइयां भी उसको नहीं मिल पाती है। इसलिये मेरा सरकार से निवेदन यह है कि उस अस्पताल को प्राविन्शिलाइज किया जाय ताकि वह अस्पताल आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित होकर जनता को भली प्रकार से सेवा कर सके। कसिया एक बहुत ही उपयुक्त स्थान है जहां पर बाहर के बहुत से यात्री आते हैं इसलिये सरकार इस तरफ अपना ध्यान दे और मैं गुप्ता जी से निवेदन करूंगा कि यह कसिया के अस्पताल को प्राविन्शलाइज करने के लिये अविलम्ब कार्यवाही करने का आदेश दी देने की कृपा करें। उस एरिया से हमारे भाई गेंदासिंह जी आते हैं। पहले वह देवरिया जिले के विषय में बहुत कुछ यहां पर कहा करते थे लेकिन अब उनका मुंह बन्द है। देवरिया जिला सबसे पिछड़ा हुआ जिला है। वहां पर खाद्य समस्या भी जटिल है। पहले वहां पर इतना अन्न पैदा होता था कि वहां से अन्न बिहार की तरफ छपरा को जाया करता था लेकिन आज दशा यह है कि वहां से देवरिया में आता है और तब लोग अपना काम चलाते हैं। सरकार को इस तरफ अपना ध्यान देना चाहिये और इस इलाके की समस्याओं को हल करने के लिये कदम उठाना चाहिये।

एक यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि एल० आर० सी० की एक सड़क है जो पी० डब्ल० डी०, कसिया बना रही थी। वह बन कर तैयार हो गई है। उस सड़क पर मिट्टी डालने का काम हुआ था। उस सड़क के लिये जो जमीन ली गई थी उसका मुआविजा अभी तक नहीं मिला है। मजदूरी भी बहुत कम लोगों को दी गई है लेकिन मुआविजा तो अभी तक उन काश्तकारों को नहीं मिल पाया है जिनकी जमीन उस सड़क के लिये ली गई थी। इसलिये मेरा निवेदन है कि मारकेट रेट पर उन लोगों को मुआविजा दिया जाय और अविलम्ब सरकार इस पर ध्यान दे। इन शब्दों के साथ मैं इस धन्यवाद के प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

श्री राम अंजोर (जिला प्रतापगढ़)---

माननीय अधिष्ठाता महोदय, महामहिम राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद के प्रस्ताव का मैं समर्थन करना चाहता हूं। राज्यपाल के अभिभाषण में हमारे प्रदेश की सभी समस्याओं के समाधान के लिये जो संकेत दिये गये हैं मैं समझता हूं कि वह पर्याप्त हैं। इस अभिभाषण में अगर मैं तो किसी भी समस्या पर जाना संभव नहीं है, किन्तु एक बात कहे बिना मैं नहीं रह सकता कि शिक्षा के क्षेत्र में खास तौर पर प्रारम्भिक स्तर से स्नातकीय स्तर की शिक्षा तक उतनी उदारता का संकेत नहीं है जितना कि अभीष्ट था। मैं समझता हूं कि शिक्षा की ओर विशेष ध्यान देना सभी समस्याओं के समाधान के लिये आवश्यक है और उसमें जब तक प्रारम्भिक स्तर से स्नातकीय स्तर तक ध्यान नहीं दिया जायगा तब तक हम बहुत आगे नहीं बढ़ सकेंगे। हमें खुशी है कि अभिभाषण में कर्मचारियों की मांगे पूरी करने का आश्वासन है किन्तु शिक्षकों की बहुत पहले से मांग है कि उनके वेतन और डी० ए० में भी बढ़ोत्तरी हो। उसका आश्वासन नहीं दिया गया है। मैं चाहता हूं कि इधर और उधर के सब लोग मिल कर नीतियों के कार्यान्वयन की ओर अधिक ध्यान दें हमें आजाद

हुये बीस साल हो गये। इस बीच में नीतियां सभी अच्छी बनीं और मैं तो गांव के स्तर पर काम करता हूं, गांव और जिले के स्तर पर मैंने सरकारी और गैर सरकारी कर्मचारियों के साथ काम करके उनका सूक्ष्म निरीक्षण किया है। मैंने देखा है कि बड़ी सुन्दर-सुन्दर योजनायें और नीतियां बनीं, किन्तु जितना देहात के गरीबों, किसानों और मजदूरों को उनसे फायदा होना चाहिये था, वह योजना उतना लाभ उनको नहीं पहुंचा पा रही है और यह लाभ होना उनको तब तक संभव नहीं है जब तक कि हम सभी उस काम में न जुट जायं। कहीं हम हस्तक्षेप करते हैं और कहीं सरकारी कर्मचारी अपनी मनमानी करते हैं। कुछ ऐसी अव्यवस्था है कि बीस वर्षों में हम ब्लाक इत्यादि के द्वारा किसी देहाती क्षेत्र को लाभ नहीं पहुंचा पाये हैं। मैं खेती के बारे में कहना चाहता हूं कि उत्पादन बढ़ाने के लिये तरह तरह के उपाय सुझाये गये हैं, लेकिन हमारा मूल प्रश्न इस संबंध में सिंचाई का है। अच्छे किस्म का बीज और खाद किसान को मिल जाय, यह ठीक है, लेकिन सबसे बड़ी समस्या पानी की है और वह अभी तक जिस तरह से हल होनी चाहिये थी, हल नहीं हो पायी है। मेरा निवेदन है कि हम इन दो-तीन महीनों में इस प्रकार काम करें कि हम हर किसान की पानी की समस्या को हल कर दें और यदि जनता पूर्ण रूप से अन्न उत्पादन के काम में जुट जायगी तो हम को अन्न बाहर से नहीं मंगाना पड़ेगा। मैं तो सदन में नया आदमी हूं, सदन में थोड़ी बहुत रस्साकशी होना आवश्यक भी है, लेकिन सबसे बड़ा देश है और देश की जिम्मेदारी सबसे ज्यादा किसान की है।

मैं अपने प्रतापगढ़ जिले के संबंध में दो-चार बातें कहना चाहता हूं। आजादी के २० साल के बाद भी वह जिला न तो पूर्वी जिलों में समझा जाता है---जहां तक फायदा पहुंचाना है, न पश्चिमी में। पूरब के लिये पटेल कमीशन बना, कार्यान्वियन उतना नहीं हो पाया, लेकिन आशा है। वहां तो कोई कमीशन भी नहीं बना। वह आम तौर से और जिस क्षेत्र से मैं आता हूं---रामपुर अखेहा, वह खास तौर से बहुत अभागा रहा है। उसकी तमाम समस्याओं को तो कहना नहीं चाहता, लेकिन कुछ ऐसी समस्यायें हैं जिनको प्रदेश स्तर के और केन्द्रीय स्तर के मंत्रियों से समय समय पर आश्वासन भी मिला है एक घुईसरनाथ का पुल और डेरवा से ढिगवरू, धारुपुर, रामपुर और रानीगंज तक तथा घुइसरनाथ से अठेहा उदयपुर तक की सड़कों के संबंध में आश्वासन मिला है और कुछ योजनाओं पर काम भी लग गया है, लेकिन ये समस्यायें अपने रूप में वैसी ही खड़ी हैं। हमारे जिले में सई नदी एक ओर से दूसरी ओर तक है। अठेहा का क्षेत्र एक तरफ है और ऐसा लगता है कि वह उस जिले में है ही नहीं। तहसील और जिला हेडक्वार्टर वहां से बीसों मील दूर है, इससे बड़ी परेशानी होती है। सिंचाई की बड़ी खराब हालत है। कुवां बनाने के लिये चार हजार रूपया चाहिये और ट्यूबवेल जिले में एक भी नहीं है। शासन की ओर से कहा जाता है कि बनाना कठिन है जबकि प्राइवेट प्रयास से कई ट्यूबवेल वहां बन चुके हैं। हमे उम्मीद है कि शासन की ओर से कोई ऐसा कदम उठाया जायगा कि उस जिले को भी ट्यूबवेल में अपना हिस्सा मिले।

अन्न के उत्पादन के साथ साथ प्रतापगढ़ में सई नदी के आस पास हजारों बीघा जमीन पड़ी है जहां गल्ले की विषम परिस्थिति बन गयी है। अब ईंधन की भी विषम समस्या के रूप में समस्या आने वाली है। हम वन महोत्सव मनाते हैं, वृक्ष लगाने का अभियान करते हैं, लेकिन जितने वृक्ष लगाते हैं वह केवल कागज में ही लगते है, स्थान पर नहीं मिलते हैं और उससे कई गुने कट जाते हैं। यह एक बहुत बड़ी प्राब्लाम बन जायगी कि लकड़ी नहीं मिलेगी। हजारों बीघा जमीन बेकार पड़ी है। जंगल विभाग से मैंने कोशिश की है अपने स्तर पर। कुछ जगहों में वृक्ष लगाये गये हैं। दिक्कत यह है कि नदी किनारे की सैकड़ों बीघा जमीन बेकार पड़ी है वह किसी न किसी के नाम बटी हुई है। शासन ले नहीं सकता। मामूली व्यक्तियों के बस की बात नहीं कि वृक्षारोपण कर सकें। मैं चाहूंगा कि ऐसा कदम उठाया जाय कि वह हजारों बीघा जमीन और नदियों के किनारे की जमीन जंगल विभाग ले सके ताकि वृक्षों की समस्यायें हल हों और ईंधन की समस्या का समाधान हो सके। इन शब्दों के साथ मैं धन्यवाद के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

एक सदस्य—

उत्तर प्रदेश का फैलाव सहारनपुर तक है ।

श्री अधिष्ठाता—

मैं जानती हूं ।

श्री रामनाथ (जिला शाहजहांपुर)—

कई रोज से महामहिम राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा इस सदन में चल रही है। माननीय अधिष्ठात्री महोदय, उसमें आये हुये संशोधनों का मैं समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं । इस चर्चा में बहुत से लोगों ने अपने अपने विचार व्यक्त किये । माननीय राजस्व मंत्री जी ने भी आंकड़े पेश करते हुये यह सिद्ध करने की कोशिश की कि राज्यपाल महोदय के अभिभाषणों पर जो धन्यवाद का प्रस्ताव है उसको स्वीकार कर लिया जाय और यह सिद्ध किया कि प्रदेश तरक्की की ओर जा रहा है । अंग्रेजों ने भी हमारे देश के अन्दर बड़े बड़े पुल बनवाये, राम गंगा और जमुना पर पुल बनबाये, बड़ी बड़ी सड़कें बनवायीं, रेलवे लाइन हजारों मील बनवायीं, अस्पताल और स्कूल खुलवाये । यह उस हुकूमत ने किया जो यहां से सात समुद्र पार वाली थी, जिसकी वेशभूषा, रहन सहन आदि हमसे बिलकुल भिन्न थी, और एक विदेशी हूकूमत थी, लेकिन देश को आजाद कराने में हिन्दुस्तान के कितने नौजवानों ने उस हुकूम को हटाने में जानें दी, न जाने कितनी माताओं ने अपनी गोद को सूना किया, न जाने कितनी बहनों ने अपनी मांगों का सिन्दूर मिटाया और न जाने कितनी मुसीबतों को सहा । पिछली तीन पंच वर्षीय योजनाओं को पूरा करने के बाद भी आज हम मामूली खूराक का मसला हल नहीं कर पाये हैं । दूसरे मुल्कों पर आज हम निर्भर हैं । थाने में अगर कोई पीड़ित रिपोर्ट लिखाने जाये तो बिना पैसे दिये उसकी रिपोर्ट तक सही लिखी नहीं जाती, कचहरियों में बिना पैसे के न्याय नहीं मिलता, गरीबों के बच्चे दवा के अभाव में तड़प-तड़प कर मर जाते है क्योंकि बिना पैसे दवा नहीं मिलती, यह इस सरकार के २० वर्षे के कार्यो का नतीजा है ।

मान्यवर, अभी माननीय रामायण राय जी ने गया थीसेज की बात कही, मैं उनको बताना चाहता हूं कि देश का नेता ? देश काल और समाज की परिस्थितियों के मुताबिक ही अपना कार्यक्रम बनाता है। यह जरूरी नहीं कि हर मर्ज में सदैव एक ही दवा काम करे। जिन परिस्थितियों में वह गया थीसेज लिखी गयी थी वे परिस्थितियां आज की परिस्थितियों से बिलकुल भिन्न थीं। मैं उनको बताना चाहता हूं कि जिस तरीके से अंग्रेजों के खिलाफ हिन्दुस्तान को आजाद कराने के लिये, सभी परस्पर विरोधी एक हो गये थे, सभी कन्धे से कन्धा मिला कर उस अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ कार्य कर रहे थे, मजदूर और मालिक एक थे, जमींदार और किसान एक थे और सभी ने मिल कर एक मोर्चा बनाया था, और उसका नतीजा यह हुआ कि अंग्रेज हिन्दुस्तान से चले गये। इस तरीके से आज हम लोग जरूर विभिन्न खयालों के है लेकिन एक खयाल के मातहत हम लोग यहां इकट्ठा हुये है । बीस साल के तजुर्बे ने इसको साबित किया है कि प्रदेश की कांग्रेस सरकार भी हमारे देश के अन्दर गरीबी, महंगाई और रिश्वतखोरी, बेकारी अशिक्षा दूर करने में नाकामयाब रही है । तभी तो इसको हल करने के लिये हमने एक न्यूनतम कार्यक्रम बनाया है उस कार्यक्रम के मातहत हम लोग इकट्ठा हुये हैं। जैसा कि राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में जिक्र किया गया है चुनाव निष्पक्ष हुये हैं। इस सम्बन्ध में मैं अपने क्षेत्र के तजुर्बे को आपके सामने रखना चाहता हूं कि जिला बोर्ड के जितने अध्यापक थे यह मालूम हो रहा था कि इनको तमाम काम चुनाव का करने के लिये छुट्टी दे दी गई है । जिस हिन्दुस्तान के अन्दर गुरुओं का दर्जा भगवान से भी बढ़ कर माना गया हो, गुरु आदर और सम्मान के पात्र हों, उनको चुनाव के काम के लिये छुट्टी दे दी गई। स्कूलों में ताले लगा

दिये गये और कहा गया कि इलैक्शन का काम करो। "गुरु गोविन्द दोउ खड़े काके लागू पाय, बलि- हारी गुरु आपकी जिन गोविन्द दिये शिलाय"। चुनाव का सारा काम उनसे कराया गया।

[तो श्रीमन्, इसी प्रकार से जो हमारे क्षेत्र निगोहा का थानेदार है, उसके काम से भी बाकायदा मालूम होता था कि उसका काम ही इलैक्शन में हिस्सा लेना है। बाकायदा लोगों को बुला कर पूछा जाता था कि वोट किसको दोगे, कहां किस की मदद करोगे। यहीं नहीं उसके बाद इलैक्शन खत्म हो गया उसके बाद जहां जहां उनकी मर्जी के माफिक वोट नहीं मिले उन लोगों को परेशान किया जा रहा है। अजमतपुर गांव में बाबूराम और उसकी पत्नी को बुरी तरह से पीटा गया। मैं जब २५ तारीख को गांव गया तो ग्राम कुदिनी के भी आदमी मेरे पास भी आये और उन्होंने कहा कि थानेदार हमें परेशान कर रहे है। इस बात पर कि वह मेरे पास आये थानेदार ने उसको और भी पीटा और कहा कि "पहुंच गया एम० एल० ए० के पास"। तो मैं आपका ध्यान इन ज्यादतियों की ओर दिलाना चाहता हूं कि नामजदगी के परचे दाखिल करने के बाद जब मैं अपने क्षेत्र में गया तब मैंने देखा जो शाहजहांपुर से पीलीभीत तक ट्रेन जाती है उसके अन्दर भीख मांगने वाली दस ग्यारह साल की एक लड़की थी उस डिब्बे के अन्दर पुलिस वालों ने छेड़खानी की और इज्जत पर हमला करना चाहा तब कुछ नौजवानों को जो ट्रेन में सफर कर रहे थे जिनको यह तरीका पसन्द नहीं आया उन्होंने कहा कि तुम्हारे भी मां बहिन हैं, तुम्हारी भी इज्जत है। इस तरह से इज्जत पर हमला नहीं करना चाहिये। उनको बुरी तरह से पीटा और उस लड़की को भी बुरी तरह से घसीटा। इसी पर झगड़ा शुरू हो गया। ट्रेन खड़ी करवा दी गई और चार घंटे अरेली ग्राम में गाड़ी इसी कारण रुकी रही। मैं भी पहुंच गया। डी० आई० एस० पी० और परगना मैजिस्ट्रेट वहां पहुंचे लेकिन हालत देखने के बाद भी मामले को दबा दिया गया। इसी तरह से जैतीपुर के थानेदार ने लाठी से एक आदमी को इतना मारा कि वह उसकी चोट से ही मर गया। उसके यहां से दरख्वास्त की गई तो उसको भी दबाया जा रहा है। वहां के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट जो हैं वे मुख्य मंत्री के रिश्तेदार है। श्रीमन्, जखीरे बाजों के यहां, छापे मारे गये, आन्दोलन हुये, लेकिन शाहजहांपुर में किसी भी गल्ला व्यापारी को पकड़ा नहीं गया। इन्हीं बातों की ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।

श्री अधिष्ठाता—

अब आपका समय समाप्त हो गया। समय बहुत कम है, बहुत से आदमी बोलना चाहते हैं इसलिये आप सहयोग करें और कृपा करके बैठ जायं।

श्री मदनमोहन सिंह (जिला रायबरेली)—

आदरणीय अधिष्ठात्री महोदया, मैं आपका बहुत ही आभार मानता हूं कि आपने मुझे ३ दिन के बाद आज मौका तो दिया।

महोदया, मैं राज्यपाल महोदय के प्रति धन्यवाद के प्रस्ताव के समर्थन में खड़ा हुआ हूं। मैं कहना चाहता हूं कि आजादी सन् १९४७ में १५ अगस्त को आई। मैं रायबरेली जिले का रहने वाला हूं। मेरे जिले ने आजादी की लड़ाई में अपना पूरा कोटा खून का दिया। पूरी कुर्बानी की। लेकिन आजादी के बाद पूर्वी और पश्चिमी जिलों की गड़गड़ाहट में करोड़ों रुपया योजनाओं में लुटा। परन्तु जो मध्य यू० पी० है, रायबरेली, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर, फतेहपुर, हरदोई, सीतापुर, इन छोटे-छोटे जिलों की उपेक्षा की गई। कोई भी संकेत इस अभिभाषण में नहीं है कि इन जिलों के विकास के लिये कुछ किया जायगा। बहुत ही दुख के साथ हमको कहना पड़ता है कि इस उपेक्षा को बन्द किया जाय, और इसके विकास के लिये योजना बनाकर उस पर सही रूप से अमल किया जाय, वरना हमें कुछ और सोचना होगा।

[श्री मदन मोहन सिंह]

हमारे कुछ विरोधी भाई यों ने कुछ बातों में छींटाकशी की है, मैं उसका जबाव उसी तरह से तो नहीं देना चाहता हूं, लेकिन यह जरूर है कि यहां पर ज्यादा उछल कूद न करके विनम्र भाषा में भी अपनी बात कही जा सकती है। अगर असेम्बली में हम उछल कूद करते हैं तो उसकी बाहर अच्छी टीका-टिप्पणी नहीं होती है इसलिये ऐसी बातें नहीं करनी चाहिये।

रायबरेली के लिये उद्योग के लिये जब भी मुझे समय मिला है मैंने यहां के मुख्य मंत्रियों और मंत्रियों से जबानी और लिखित रूप में भी कोशिश की है। लेकिन मैंने यह देखा कि सिवाय जिल्लत या परेशानी के या यह कि एक-एक फाइल मुद्दत तक मेजों पर पड़ी रहती है और कुछ नहीं होता है। मेरी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। यह जो दूसरा वर्ष आज से शुरु हो रहा है इसमें रायबरेली जिले के और मध्य यू० पी० के लिये कोई विशेष इन्तजाम होना चाहिये। हमारे यहां बहुत ज्यादा बेकारी है।

सुना जा रहा है कि किसानों से गल्ला वसूल किया जायगा। मेरा जिला किसानों का जिला है। वहां कोई भी उद्योग नहीं है सिवाय चन्द मजदूरों के जो बीड़ी बनाने का काम करते हैं। ३ साल से लगातार हमारे यहां सूखा पड़ रहा है। इसलिये हमारे जिले के लिये कोई विशेष अनुदान रखा जाय और गल्ला वसूली न की जाय। सन ४८ की गल्ला वसूली में हमारे यहां जोहबानटकी गांव में गोली चली है। हमारे जिले से गल्ला जबरन वसूल करने का प्रयास न किया जाय। ऐसे सूखे के समय में लगान की पूरी छूट हमारे यहां के किसानों को मिलनी चाहिये। वहां के किसान बेबस हैं।

हाइडल में किस तरह की लूट मची हुई है मैं इसके संबंध में आपका ध्यान आकर्षित करते हुये प्रार्थना करता हूं कि आप कोई भी योजना बनावें, लेकिन यदि उसका अमली रूप सुस्त या गन्दा है तो उस योजना से कोई लाभ नहीं हो सकता है। हालत यह है कि खम्भे गाड़ दिये जाते है और थोड़े दिन बाद उन पर तार भी लगाये जाते है, फिर खड्डे में योजना पड़ी रहती है और महीने तक लोगों को कनैक्शन नहीं मिलते हैं। रिश्वत दी जाय तो काम जल्दी हो जाता है वरना नहीं हो पाता है। मुझे दुख इस बात का है कि मैं कांग्रेसी सदस्य हूं और कांग्रेस की ही सरकार है, अतः यह सारी चीजें यहां हो रही है ये नहीं होनी चाहिये। हम देख रहे है कि विरोधी अगर कोई सही बात कहे तो उसे जरूर मानना चाहिये और मन में कोई लज्जा नहीं आनी चाहिये। विरोधी लोग यहां पर ओवर-ऐक्टिंग करते हैं। इससे कोई लाभ नहीं होगा।

नहरों में पानी के लिये जब हम इंजीनियर्स से बात करते है तो वे कहते है कि यह टेल है, यहां पानी तभी आ सकता है जबकि वह ज्यादा हो। पानी ज्यादा होता नहीं अतः हमें जरूरत के मुताबिक नहीं मिलता है और जब जरूरत नहीं होती है तब कभी कभी मिलता है। इसका समाधान केवल तभी हो सकता है जबकि हम ट्यूबवैल का सहारा लें और वह तभी ले सकते हैं जब ट्यूबवैल की दरख्वातों पर अमल हो और उनको जल्दी से जल्दी मगवाया जाय। अभी तक तो ऐसा नहीं हो सका है, आगे की भगवान जाने या सरकार जाने।

रायबरेली जिले की सहन-शक्ति अब बहुत कम हो गई है, बल्कि खत्म हो गई है। इसलिये मैं सरकार का, मुख्य मंत्री का और सिंचाई मंत्री का ध्यान आकर्षित करते हुये प्रार्थना करता हूं कि बजाय इसके कि रायबरेली विस्फोट हो, आग लगने से पहले ही, मर्ज के अधिक होने से पहले ही, अगर उसकी दवा हो जाय तो ज्यादा अच्छा है क्योंकि वहां के किसान की रीढ़ की हड्डी टूट चुकी है। वहां जितनी भी सीटे हैं सब पर कांग्रेस ही विजयी हो कर आई है, बल्कि उसका असर आस पास के जिलों पर भी पड़ा है, लेकिन दुख यह है कि आज तक इस सरकार ने कोई योजना रायबरेली जिले के लिये, वहां की गरीबी और बेरोजगारी को

दूर करने के लिये नहीं बनाई है। उस जिले की तरफ ध्यान ही नहीं दिया है। इसलिये अगर यही हाल आगे भी रहा तो मुझे भय है कि हम लोगों को कोई क्रियात्मक कदम उठाने के लिये बाध्य न होना पड़े।

इन शब्दों के साथ मैं आपसे प्रार्थना करता हुं कि हमारे उस गरीब और बेबस जिले की ओर ध्यान दें और लखनऊ की नाक के नीचे मध्य यू० पी० की गरीबी पर ध्यान देकर उसके उत्थान के लिये और विकास लिये प्रयत्न करें।

श्री मोतीलाल देहलवी (जिला कानपुर)--

अध्यक्षात्री महोदया,

आज घर घर में घुटन है कि खबरदार रहो,
दोस्त हर दिल में चुभन है कि खबरदार रहो।
भूख की आग सियासत से बुझाने वालों,
सब्र के सर पे कफन है कि खबरदार रहो।

मैंने राज्यपाल महोदय के भाषण को आद्योपान्त कई बार गंभीरता से पढ़ा और इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि जिस प्रकार से सुल्ताना डाकू की मां ने एक मुर्गा चुराने पर सुल्ताना से कहा था कि शाबाश बेटा बहुत बढ़िया काम किया। ठीक उसी तरह से राज्यपाल महोदय ने अपने भाषण में किया है। मैं राज्यपाल महोदय को धन्यवाद ही नहीं देता बल्कि उनके और उनके मंत्रिमंडल के हर माननीय सदस्य के कदमों को चूम लेता अगर उन्होंने अपने भाषण में मालगुजारी खत्म करने का ऐलान किया होता, मैं उनके कदमों को चूम लेता अगर उन्होंने अपने अभिभाषण में सिंचाई की व्यवस्था को मुफ्त करने की घोषणा की होती। मैं राज्यपाल महोदय के कदमों को चूम लेता अगर उन्होंने शिक्षा के समान स्तर करने की घोषणा की होती। मैं उनके कदमों को चूम लेता अगर उन्होंने सरकारी कर्मचारियों के संबंध में अपना गोलमोल भाषण न करके यह स्पष्ट कहा होता कि आयोग का जो निर्णय होगा उसको सरकार अमल में लायेगी और बिलकुल उनको कार्यान्वित करेगी। इसलिये मैं समझता हूं कि जो लोग राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर धन्यवाद देते आ रहे हैं या उनको आगे धन्यवाद देंगे अपने मालिक मतदाताओं के प्रति विश्वासघात करेंगे और उनको धोखा देंगे। भाषण में राज्यपाल महोदय ने सरकार को धन्यवाद दिया है और यह सरकार बदले में राज्यपाल महोदय को धन्यवाद दे रही है। इसके सिवाय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में और कुछ नहीं है।

चुनावों के बारे में माननीय राज्यपाल महोदय ने कहा है कि चुनाव बड़े निष्पक्ष हुए। इस पर बहुप से लोगों ने बहुत रोशनी डाली है। मैं तो केवल इतना कहना चाहता हूं कि चुनाव निष्पक्ष नहीं हुए हैं क्यों कि चुनावों में सरकारी मशीनरी का प्रयोग किया गया है। दबाव डाल डाल कर सरकारी कर्मचारियों का प्रयोग किया गया, लालच दिये गये, प्रलोभन दिये गये, धमकाया गया, गुंडों की मदद ली गई, क्या इसी को निष्पक्ष चुनाव कहेंगे? माननीय राज्यपाल ने गुप्ता जी की प्रशंसा की है कि वह बहुत कुशल राजनीतिज्ञ हैं और दूरदर्शी व्यक्ति हैं। इस में कोई सन्देह नहीं है कि अगर वह कुशल और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ न होते तो शायद यह जो यहां पर उन की सरकार बनी है यह बन ही नहीं सकती थी। जिस तिकड़म और जिस चतुराई से उन्होंने सरकार बनाई है यह सभी लोग जानते हैं और प्रदेश की सारी जनता जानती है।

तीसरी बात सम्बोधन में यह कही गई है कि यह सरकार कृषि संबंधी आवश्यकताओं को प्रभावशाली रूप से पूरा करने में समर्थ रही है। मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि किसान की क्या आवश्यकता की पूर्ति की गई? आज भी मैं बिल्हौर तहसील में दिखा सकता हूं कि खाद व खाद्यान्न का ब्लेक चल रहा है, बीज मिलता नहीं, पानी के बिना खेत

[श्री मोती लाल देहलवी]

सूख रहे हैं, किसान इंजीनियर साहब के यहां पानी मांगने गये लेकिन उन्होंने कह दिया 'गेट आउट'। उन्होंने कहा कि हमें सारे सूबे में पानी देना है हमारे पास पानी कहां है। ऐसी सूरत में हमारी समझ में नहीं आता कि किसानों की किन आवश्यकताओं को पूरा किया जाता रहा है। आज भी बिल्हौर में नलकूप खराब पड़े हैं, चकबन्दी में भ्रष्टाचार फैला हुआ है। चारों तरफ से किसान की लूट हो रही है किसानों को लूटा जा रहा है, लेकिन अभिभाषण में कहा गया है कि किसानों की आवश्यकताओं को पूरा किया गया है यह कतई गलत है और बेबुनियाद बात है। बिल्हौर क्षेत्र के नलकूपों की शिकायत कई बार की गई लेकिन कोई ध्यान नहीं दिया गया। अध्यापकों को राहत के बजाय धमकी दी जा रही है। ऐसी स्थिति में राज्यपाल महोदय का अभिभाषण मैं समझता हूं निरर्थक और बेकार सिद्ध हुआ है। मेरे पास कानपुर का 'जागरण' अखबार है और इस सरकार के बनते ही हर चीजों के दाम गिरे होते और कोई आदमी भुखमरी से न मरा होता तो राज्यपाल को धन्यवाद दिया जा सकता था। लेकिन इस अखबार में छपा है कि एक मिल का मजदूर जो भुखमरी से मरा उसको काम नहीं मिला, अनाज नहीं मिला, खाने को नहीं मिला और नतीजा तो लाजमी था ही कि वह मिल मजदूर मर गया। ऐसी स्थिति में राज्यपाल को धन्यवाद किस बात का दिया जाय? मैं आप से पूछना चाहता हूं कि जो मजदूर मरा सरकार के लोग अपने दिलपर हाथ रख कर देखें कि उसके बीबी बच्चों का आज क्या हाल होगा? क्या यह सरकार आपने इसीलिये बनाई है कि लोग भूखे मरें और इस तरह से राज्यपाल को झूठे धन्यवाद देते रहें? मैं समझता हूं कि अगर प्रदेश में एक भी आदमी सरकार बनने के बाद भूख से मरा तो राज्यपाल महोदय का भाषण किसी काम का नहीं रहा और मैं इसका बहिष्कार कर रहा हूं (इसके बाद माननीय सदस्य ने महामहिम राज्यपाल महोदयके अभिभाषण की प्रति को फाड़ कर सदन में फेंका)

श्री शमीम आलम (जिला बुलन्दशहर)—

मोहतरम सदर साहबा, गवर्नर साहब बहादुर के अभिभाषण (एड्रेस) पर मुख्तलिफ पहलुओं पर रोशनी डाली गयी, लेकिन इसमें एक पहलू है भाषा का, जबान का', जिस पर किसी ने रोशनी नहीं डाली।

एक सदस्य—

माननीय अधिष्ठाता महोदय, उधर से ये दूसरे आदमी बोल रहे हैं।

श्री अधिष्ठाता—

यह कोई व्यवस्था का प्रश्न नहीं है।

श्री शमीम आलम—

गवर्नर साहब ने बहुमत की भाषा का खयाल रखते हुए और दिक्कत होते हुए भी, अपने अभिभाषण को खुद न पढ़ सके और उन्होंने दूसरों की सहायता ली। मुझे अफसोस है कि उन्होंने अक्लियत की जबान का बिल्कुल खयाल नहीं रखा। उन्हें इस बात का भी खयाल रखना चाहिये था कि जिस भाषा में वे बोल रहे थे, उसको समझने से वे कासिर हैं। जिस वक्त उनका अभिभाषण सदन में पढ़ा जा रहा था हम लोग बाहर चले गये थे लेकिन बाहर जाकर मैंने उसको पढ़ना चाहा और मुझे बड़ा अफसोस है कि मैं उनके एड्रेस से लाभान्वित यानी मुस्तफीद न हो सका। मेरी मादरी जबान उर्दू है। मैं इसी देश में पैदा हुआ, पला और तालीम पाई। जिस जमाने में मैं पढ़ता था उस जमाने में उर्दू और अंग्रेजी थी। पहले यहां की भाषा हिन्दी के साथ-साथ उर्दू भी थी। यहां सरकारी दफातरों में भी काम उर्दू में होता था और इस सदन की कार्यवाहियां भी उर्दू में छपती थी, लेकिन न जाने क्या हो गया? उर्दू वह भाषा है जो मुन्शी प्रेम चन्द्र की भाषा है। कोई कहता है कि प्रेमचन्द्र हिन्दी के अदीब थे। न वे हिन्दी के अदीब थे और न उर्दू के अदीब थें। वे हिन्दुस्तानी जबान के अदीब थे। अगर उनकी भाषा हिन्दी कही जाती है तो हमारी सरकार की, हमारे प्रदेश की भाषा मुन्शी

प्रेमचन्द्र की भाषा होनी चाहिये । जो भाषा यहां पर बोली और लिखी जाती है, उससे मुझे ऐसा पता चलता है कि मैं किसी दूसरे मुल्क में चला गया । बाहर रिक्शा वालों की भाषा समझ में आती है, किसानों की भाषा समझ में आती है और दुकानदारों की भाषा समझ मे आती है लेकिन इस सदन की भाषा मेरी समझ में नहीं आती । मैं यह भी समझता हूं कि यहां आप सब लोग मेरी भाषा को समझ रहे हैं । इसके सिलसिले में, मैं सबसे पहले मित्थल साहब से मिला और उनसे दरख्वास्त की कि आप उर्दू जबान का हलफनामा दीजिए क्योंकि हलफनामा जभी मुनासिब होता है कि जो चीज दिल से निकलती है वह ही कही जाय । हमारी कचहरियों में भी जो ओथ कमिश्नर्स होते हैं वे तस्दीक करते हैं कि हलफ लेने वाला इसके कन्टैन्ट को समझता है । इन्टैग्रिटी और सावरैन्टी लफजों का जो अनुवाद किया गया है, समझ में नहीं आता है कि किस चीज के लिये उन्होंने ये लफज इस्तेमाल किए हैं ।

माननीय सदर साहिबा, आपके जरिए मैं सरकार से चाहता हूं कि यहां के जो मेम्बरान हैं, जो लोग चाहें, उनको एजैन्डा उर्दू में मिले और हम लोग सवाल और दूसरी दरख्वास्तें उर्दू में दे सकें और हमें जो जवाब मिलें वे भी उर्दू में हों । कम से कम अगर सरकार उत्तर प्रदेश की दूसरी जबान उर्दू को इस वक्त नहीं करना चाहती तो कम से कम इस सदन की दूसरी भाषा उर्दू करार दे दे जिसके लिये मैं मशकूर हूंगा । उर्दू वह जबान है, आज ही इस सदन में कम से कम ५, ६ मेम्बरान ने अपनी तकरीर को जानदार बनाने के लिये कम से कम ५,६ अशआर उर्दू के पढ़े और आपने उनकी तकरीर को सुना कि उन्होंने उर्दू जबान का सहारा लिया । उर्दू जबान ने गालिब का दीवान दिया, इकबाल जैसी हस्ती को दिया, हिन्दुस्तान को मशहूर तराना दिया "हम बुलबुले हैं इसकी यह गुलिस्ता हमारा ।" जो लोग उर्दू को समझते हैं, जानते हैं मुझे हैरत होती है यह देखकर वह इस हकीकत से इनकार करते हैं कि उर्दू कोई भाषा ही नहीं ।

मैंने अखबार में पढ़ा तो खेद हुआ कि श्रीमती सुचेता कृपालानी से जब केन्द्र में सवाल किया गया कि उर्दू का मामला क्यों नहीं निबटाते तो उन्होंने कहा कि हमारे यहां कोई उर्दू का मसला ही नहीं है । उर्दू का मसला इसलिये नहीं हैं कि उर्दू जानने वाले रेल की पटरियां नहीं उखाड़ते, आग नहीं लगाते, अपने जिस्म पर तेल छिड़क कर आग नहीं लगाते । इसलिये कोई मसला नहीं है । जब उर्दू वाले हिंसा के काम करने लगेंगे तब आप को मालूम होगा कि उर्दू इस प्रदेश की कोई जबान है ।

माननीय तलवार साहब के मुताल्लिक में अर्ज करूं, बहुत से कांग्रेसी दोस्तों ने कहा कि तुम संयुक्त विधायक दल में शामिल हो गये, तुम्हारा कैसे निबाह होगा । लेकिन इस जनसंघ ने बिहार में कोलीशन गवर्नमेन्ट बनायी और उर्दू को दूसरी सरकारी जबान माना । यह वह जनसंघ है जिसने दिल्ली प्रदेश के अन्दर दूसरी सरकारी भाषा उर्दू को माना ।

गवर्नर महोदय ने अपने भाषण में हरिजनों की तकलीफों के बारे में कुछ जिक्र नहीं किया । आज शेड्यूल्ड कास्ट के लोगों पर जो अत्याचार हो रहे हैं, जिन्होंने वोट नहीं डाले, उन को सताया जा रहा है, खसूसन हापुड़ और गाजियाबाद में उन लोगों को घास नहीं खोदने देते, घर से बाहर नहीं निकलने देते और कहते हैं कि तुमने हमारी इच्छा के मुताबिक वोट नहीं दिया इसलिये निकल जाओ । इसलिये मैं चाहूंगा कि वहां के शेड्यूल्ड कास्ट लोगों पर जो अत्याचार हो रहा है उस की तरफ सरकार ध्यान दे । उनके लिये चरागाह मुहैया करे । वे भूमिहीन लोग हैं, उनकी पिटाई होती है, उनके चोटें लगी हैं, मैं चाहूंगा सरकार उधर ध्यान दे । आप साहबान का बहुत बहुत शुक्रिया और खास तौर से मोहतरमा सदर साहिबा का जिन्होंने मुझे यह मौका दिया ।

श्री रघुबीर सिंह (जिला एटा)—

अधिष्ठात्री महोदया, आज चार दिन से राज्यपाल के अभिभाषण पर विवाद हो रहा है । विरोधी दल के नेताओं ने अनेक संशोधन रखे और कमियां बतायीं । मैं इस संबंध में वास्तविकता

[श्री रघुबीर सिंह]

से परे नहीं जाऊंगा। यह बात सत्य है कि कमियां हैं, लेकिन मैं माननीय सदस्यों से यह जानाना चाहूंगा कि क्या इस थोड़े समय में और जो कुछ हमारी सरकार का बजट है उस से जितनी कमियां इन लोगों ने रखी हैं क्या सम्भव है कि पूरी की जा सकती हैं? मैंने नेता विरोधी दल का भाषण सुना। उन्होंने अनेक बार इस बात को विश्वास दिलाया कि जितना बजट हमारे पास है, हम सब कुछ कर सकते हैं। जरा दिल को टटोलें क्या वह इसे करने में सक्षम हैं? कभी नहीं हो सकते।

यह बात मान लेने की है कि कमियां हैं। इस वादविवाद में मैं दो बातों की तरफ सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं। एक बात तो यह कि अधिकांश सदस्यों ने यह कहा कि अन्न का संकट है। यह निर्विवाद सत्य है कि उत्पादन न बढ़ने से अन्न का संकट है, लेकिन उसके अनेक कारण हैं। जैसे दैवी प्रकोप, सिंचाई की पूर्ण व्यवस्था न होना। यदि सरकार यथा शक्ति तथा यथा संभव सिंचाई की व्यवस्था और बीज खाद आदि के लिये प्रयास नहीं कर रही है तो वह उसके लिये दोषी है, अगर प्रयास कर रही है तो फिर उसके लिये सरकार पर कोई दोषारोपण नहीं हो सकता। यह बात सत्य है कि सरकार को सब विभागों से कटौती कर सिंचाई प्रसार के लिये अधिक से अधिक खर्च करना चाहिये था वह न हीं किया गया।

कुछ काम ऐसे हैं जो सरकार को तुरन्त करना चाहिये। ऐसा करने से अन्न का उत्पादन बढ़ सकता है। जैसे हमारे यहां एक कानून है कि बंजर या परती भूमि को भूमिहीन अथवा अलाभकर जोत वाले या हरिजन ही ले सकते हैं, लेकिन साढ़े १२ एकड़ से ऊपर वाले किसान उसे किसी दिशा में नहीं ले सकते।

(व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता—

माननीय सदस्य आपस में बातचीत न करें। समय बहुत कम है।

श्री रघुवीर सिंह—

मैं इस विचार का हूं कि यह कानून सरकार ने जिस उद्देश्य से बनाया था वह ठीक है। जो हरिजन हैं, भूमिहीन हैं अथवा जिनके पास अलाभकर जोतें हैं उनको भूमि मिलने में प्राथमिकता मिलनी चाहिये। लेकिन अगर ऐसे छोटे किसानों के पास साधन न हों तो या वह लोग न लेना चाहें तो फिर ऐसे लोगों को जो १२ १/२ एकड़ से अधिक भूमि वाले किसानों को छूट मिलनी चाहिये जो उसे जोत कर दो चार-वर्ष अपने घर से धन खर्च करने के उपरान्त उसमें अन्न का उत्पादन कर सकें। इस अन्न के संकट के समय यह जो कानून का बंधन है उसे हटा लेना चाहिये और इस कानून में परिवर्तन होना चाहिये। कुछ वर्ष पहिले अधिकतम जोत सीमा आरोपण विधेयक प्रस्तुत हुआ था। इस विधेयक रूपी जाल में इतने बड़े छेद थे कि बड़ी से बड़ी मछलियां निकल गयीं। जो पकड़ में आयीं वह तरह तरह के हथकंडों से आसमान से गिरी परन्तु खजूर में अटक कर रह गईं और आज तक वे जमीनें गरीबों को नहीं मिल सकीं। उसका एक ज्वलंत उदाहरण यह है कि मेरे जिले में राजा साहब आवागढ़ की जमीन १७००, १८०० बीघा भूमि सीलिंग में निकल गयी।

(इस समय ३ बजे श्री अध्यक्ष पुनः पीठासीन हुए।)

वह बंजर पड़ी हुई है। राजा साहब तो धर्मात्मा और त्यागी व्यक्ति हैं परन्तु कुछ लोगों ने बहला कर, फुसला कर उन्हें रजामन्द कर एक गोशाला के नाम रजिस्टरी करा दिया जसके अध्यक्ष वही राजा साहब हैं और वह भूमि गोशाला को दी जा रही है। मेरा अनुरोध है कि उसकी फिर से जांच होनी चाहिये और भूमिहीनों को अन्न उत्पादन हेतु दी जानी चाहिये और सरकार की तरफ से यह चेष्टा होनी चाहिये कि हरिजन तथा भूमिहीनों को वह भूमि मिल

जाय, कुछ इन्टर कालेज को मिलनी चाहिये कि अन्न का उत्पादन बढ़े और किसानों को राहत मिले। हमारी सरकार किसानों को सिंचाई की सुविधा देने के लिये नेक्सन की सुविधा देती है लेकिन बीच में हमारे अधिकारियों के हथकन्डों की वजह से ऐसा होता है कि हमारे लाखों किसान कनेक्शन के लिये दौड़ते रहते हैं और फसल यों ही सूख जाती है मगर कनेक्शन नहीं मिला पाता। मैं चाहता हूं कि अधिकारियों को यह आदेश दे दिया जाय कि कनेक्शन आसानी से उदारता पूर्वक मिल जाया करें जिससे हमारे किसान भाई खेतों को सींच कर अन्न का उत्पादन बढ़ा सकें।

अब मैं आपके सम्मुख ऐसी बातें रखना चाहता हूं जो शीघ्र ही उत्पादन बढ़ाने में सहायक हैं। शीघ्र पकने वाले जितने अन्न हैं, जैसे मक्का, मूंग नं० १ और धान आदि हैं, किसान को प्रोत्साहन देने के लिये ऐसी चीजों की सिंचाई शुल्क में कुछ छूट देनी चाहिये। कल हमारे खाद्य मंत्री महोदय ने एक संकेत इस ओर किया कि खाद्य समस्या के समाधान के लिये किसानों से सीधा गल्ला लेने के लिये सरकार विचार कर रही है। मैं इसका विरोध नहीं करता। उनका उद्देश्य यह है कि सरकार के पास कुछ गल्ला होगा तो जखीरेबाज मनमाने ढंग से भाव नहीं बढ़ा सकते हैं। लेकिन इसमें मैं एक सुझाव यह रखना चाहता हूं कि सरकार को उनका रेट मुकर्रर करते समय इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिये कि खाद्यान्न का दाम कैश क्राप से कम न हो जाय।

श्री अध्यक्ष---

आपका समय समाप्त हो रहा है।

श्री रघुवीरसिंह---

मुझे कुछ समय और दें, मुझे अन्न सुझाव ही देने हैं।

श्री अध्यक्ष---

आज समय देना सम्भव नहीं है इसलिये आप एक मिनट में खत्म कर दें।

श्री रघुवीरसिंह---

जब गन्ने का दाम किसान को ज्यादा मिलता था तो वह गन्ने के नीचे ज्यादा भूमि रखता था। आज अन्न के दाम अपेक्षाकृत अधिक होने के कारण खाद्यान्न के नीचे जितनी भूमि किसान रखता है उतनी गन्ने में नहीं रखता। इसलिये सरकार को चाहिये कि उसका रेट गन्ने, मूंगफली, आलू, तम्बाकू आदि से ज्यादा हो। इसके अलावा जहां पर इसके सेन्टर खोले जांय वहां सुविधापूर्वक अन्न की तौल करा ली जाय और साथ ही किसान की आवश्यकता की चीजें, जैसे सीमेंट, कपड़ा, टीन, लोहा आदि वहीं उसको दे दी जांय। ऐसा करने से किसान अपना अनाज खुशी खुशी उन सेन्टरों पर ले जायेगा। इसके अलावा जो किसान सवा ६ एकड़ तक की जोत के हैं उनको इससे मुक्त कर दिया जाय क्योंकि वे उतना ही गल्ला पैदा करते हैं जितना उनके परिवार के भरण पोषण के लिये काफी होता है।

श्री अध्यक्ष---

अब आपका समय समाप्त हो गया।

श्री अध्यक्ष---

अब मैं माननीय मुख्य मंत्री को बुलाऊंगा लेकिन उससे पहले मैं सदन से और खासकर नेता विरोधी दल से यह कहना चाहता हूं कि हमारे सामने जो समय है वह तो प्रत्यक्ष है। मैं इस क्रम में काम करूंगा आगे कि पहले मैं माननीय मुख्य मंत्री को बुला रहा हूं। उनको ३० मिनट मिलेंगे जैसा कि सदन ने तय किया है।

[श्री अध्यक्ष]

माननीय झारखंडेराय दस मिनट बोलेंगे । उनके बाद माननीय कृष्णानन्द राय जी १० मिनट बोलेंगे जिनका यह प्रस्ताव है । इस क्रम में हो सकता है कि चार बज जांय । हमारी साधारण परम्परा यह है कि ४ बजे से नियम ५१, ५२, ५३ की सूचनाएं लेतेहैं । अगर माननीय सदस्य चाहें तो ऐसा हो जाय । उसके बाद तुरन्त वोटिंग हो जाय । उसके बाद इसको ले लें इस क्रम को रखने के लिये या पहले ५१, ५२, ५३ ले लें ?

("पहले वोटिंग हो जाय" की आवाजें)

मुख्य मंत्री (श्री चन्द्रभानु गुप्त)—

अध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन के माननीय सदस्यों का आभारी हूं जिन्होंने राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के सिलसिले में बहुत से प्रश्नों के ऊपर अपने विचार प्रगट किये और बहुत से सुझाव सदन के समक्ष रखे तथा सरकार की कमियों और कमजोरियों की तरफ सरकार का ध्यान आमंत्रित किया तथा सदन के सदस्यों का ध्यान आमंत्रित किया । इस प्रकार के सुझाव और आलोचनायें गणतंत्र को चलाने में मदद देते हैं और सरकार की यदि गलतियां होती हैं, खामियां होती हैं, उनमें सुधार लाने में मदद पहुंचाते हैं । मुझे आशा और विश्वास है कि जो वास्तविक कमियां और खामियां हैं वे इन सुझावों के अन्तर्गत दूर होने की दिशा आगे बढ़ेंगी और हम उधर अपने कदम बढ़ायेंगे जिधर उत्तरोत्तर कमियों और खामियों को अपने पीछे से ओझल होते हुये देख सकें । मैं भिन्न-भिन्न प्रश्नों के वाद-विवद में नहीं जाऊंगा और न उन बातों को दोहराऊंगा जो बातें उधर के बैठने वाले साथियों ने या इधर के बैठने वाले साथियों ने आपस में तर्क के द्वारा इस सदन के समक्ष रखी हैं ।

एक कांग्रेस के सेवक के नाते और इस सरकार को चलाने वाले व्यक्ति के नाते जिसके ऊपर इस प्रदेशीय सरकार का उत्तरदायित्व कठिन परिस्थितियों में चलाने का आ पड़ा है, उन बातों की थोड़े शब्दों मे चर्चा करूंगा जिनकी चर्चा इस सदन में नहीं हुई । कई सदन के माननीय साथियों ने कांग्रेस की नीति के विषय में चर्चा की और आलोचना करते-करते यह कह डाला कि कांग्रेस ने समाजवाद को भुला दिया है और अब समाजवाद की उसकी घोषणा केवल कागज पर है और वह उनके पीछे चलना नहीं चाहती है । मैं विनम्रता पूर्वक आपके द्वारा सदन के माननीय साथियों से निवेदन करना चाहता हूं कि उनकी आलोचना में कोई तथ्य नहीं है और इसलिये नहीं है कि राज्यपाल महोदय का जो अभिभाषण हुआ यदि उसका ध्यान माननीय सदस्यों ने इस दृष्टिकोण को रखकर किया होता जिसको मैं आपके सामने प्रस्तुत करना चाहता हूं तो कदाचित उन्हें यह आलोचना करने का अवसर नहीं आता । आखिर को कौन नहीं जानता जिसने राज्यपाल के अभिभाषण का अध्ययन किया है कि राज्यपाल ने योजना की चर्चा की है और यह बताया है कि ९२६ करोड़ का नियोजन होने वाला है और उस योचना की पूर्ति में केन्द्रीय सरकार इतना रुपया देगी और प्रदेशीय सरकार को अपने साधनों द्वारा इतना रुपया इकट्ठा करना है ? कौन नहीं जानता कि पहली योजना से लेकर चौथी योजना तक इन योजनाओं का क्या उद्देश्य रहा है और वे किन नीतियों के अन्तर्गत बनी हैं ? वे नीतियां जिनकी घोषणा कांग्रेस सरकार ने की है और जिन नीतियों में समाजवादी व्यवस्था छिपी रही है, समाजवादी व्यवस्था को शीघ्रातिशीघ्र लाने का प्रयास किया गया है, भले ही कांग्रेस की समाजवादी व्यवस्था उस समाजवाद से मिलती जुलती न हो जिसके प्रतिपादक वे व्यक्ति हों जो कि रूस से प्रेरणा लेते हों । परन्तु आज कोई आर्थिक विकास का विद्यार्थी यह कह नहीं सकता कि कांग्रेस ने जिस समाजवाद की रुपरेखा की रचना का प्रयास किया है, शान्तिमय ढंगों से जिसे स्थापित करने का प्रयास किया है मानव को मानव बनाकर, उसको दशा मे परिवर्तन लाने की दिशा में प्रयत्नशील है और वह मानव को मशीन के रूप में समझ कर

कायँ नहीं कराना चाहती। मैं यह बातें इसलिए कहता हूं कि हमारे और उनके समाजवादी बिचारों में काफी अन्तर है जो रूस से प्रेरणा लेते हैं। उस समाजवाद के अन्तर्गत जबरिया बहुत सी चीजें नागरिक से करायी जा सकती हैं और बहुत सा बोझा जबरिया इंसान पर थोपा जा सकता है। जो हमारी समाजवादी व्यवस्था है उसके अन्तर्गत शांतिमय ढंगों से जनता को शिक्षित करके, जनता के बिचारों में परिवर्तन लाकर, उन बिचारों को जनता के बीच में फैलाना है, जिनके अन्तर्गत हमारी कमियां, गुरबत, हमार बीच से ऊंच-नीच की खाईं कम हो जाय, पैसे वाले और गरीबों में जो खाईं है वह मिटे। इसलिये मेरा निवेदन है कि भले ही राज्यपाल के अभिभाषण में समाजवाद का लफ्ज न आया हो परन्तु जहां प्लानिंग की व्यवस्था का जिक्र आया है वहां यह बात भली भाँति हमें स्वीकार करनी चाहिए कि हमारे वे विचार उस प्लान में निहित हैं जिन्हें लेकर हमने प्लान्स की रचना की है और प्लान्स इस बात के द्योतक हैं कि उत्तरोत्तर हम उस खाईं को मिटाने की चेष्टा में जुटे हुए हैं जो खाईं हमें विभिन्न टुकड़ियों में विभाजित किये हुए हैं। कई माननीय सदस्यों ने कहा कि प्लांस न तो कुछ करके दिखलाया नहीं है बल्कि प्लांस ने देश को बर्बाद किया और देशवासियों की उन अभिलाषाओं व आकांक्षाओं को पूरा नहीं किया है जिन अभिलाषाओं व आकांक्षाओं को वे पूरी होते हुए देखना चाहते थे। क्या इस बात में सत्यता है, क्या यह बात सही और ठीक है? क्या देश की आमदनी प्लांस के अन्तर्गत बढ़ी है या नहीं बढ़ी है? क्या प्लांस के अन्तर्गत शिक्षा का क्षेत्र विस्तृत हुआ है या नहीं हुआ है? क्या प्लांस के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के उत्पादन हमारे बीच में बढ़े हैं या नहीं बढ़े हैं? उत्पादन बढ़ाने के साधन हमारे बीच में बढ़े हैं या नहीं बढ़े हैं? यदि हम १९५०-५१ से जब कि पहला प्लान शुरू हुआ, तीसरे प्लान के अन्त तक के विभिन्न क्षेत्रों के आंकड़ों का अध्ययन करें तो हमें विदित होगा कि हमने विभिन्न क्षेत्रों में काफी प्रगति की है, काफी सफलता प्राप्त की है। भले ही कुछ ऐसे क्षेत्र रहे हों और हैं जिनमें असफलता मिली है और हम उतनी कामयाबी नहीं प्राप्त कर सके हैं जितनी कि प्राप्त करना चाहते हैं। इस संबंध में आपके समक्ष में कुछ आंकड़े प्रस्तुत करना चाहता हूं।

सन् १९५०-५१ में स्टेट की टोटल इनकम जो मुझे बतलायी गयी है वह थी १,५१८ करोड़ रु० जो सन् १९६५ के अन्त में २,०५५ करोड़ रु० हो गयी। इसी तरह से बिजली हमारे प्रदेश में सन् १९५०-५१ में १३९ मेगावाट थी और १९६५-६६ में वह ९१० मेगावाट हो गयी। सन् १९५०-५१ में जहां केवल १० गांवों में बिजली थी वहां १८६५-६६ में वह ४,६९२ गांवों में पहुंच गयी। गल्ले का उत्पादन भी—जो आंकड़े मेरे सामने हैं उनके अनुसार १९५०-५१ में ११६ लाख टन था जो १९६५-६६ में १२९ लाख टन हो गया। और १९६४-६५ में तो गल्ले का उत्पादन १५० लाख टन हो गया था। आयल सीड्स का प्रोड्क्शन सन् १९५०-५१ में जहां ७.६७ लाख टन था, वह १९६५-६६ में १५ लाख टन हो गया। केन का प्रोडक्शन सन् १९५०-५१ में जहां २९ लाख ३ हजार टन था वह १९६५-६६ में ५० लाख ३ हजार टन हो गया। इर्रीगेशन पोटेंशियल जहां १९५०-५१ में ७३ लाख एकड़ के लिये उपलब्ध था वहां १९६५-६६ में १२७ लाख एकड़ के लिये हो गया। सन् १९५०-५१ में जहां स्टेट ट्यूबवेल्स की संख्या २३४३ थी वहां १९६५-६६ में उनकी संख्या ८२७० हो गयी। सरकिट रूट्स जहां पहले ११० मील था वह १९६५-६६ में १६,६०० मील हो गया। प्राइमरी स्कूलों में ऐडमिशन जहां १९५०-५१ में २३ लाख था, वहां १९६५-६६ में ९२ लाख ४२ हजार हुआ। मिडिल स्कूलों में में जहां पहले ऐडमिशन ५ लाख था वह १९६५-६६ में १४ लाख ६२ हजार हो गया। हाई स्कूलों में ऐडमिशन जहां १९५०-५१ में १ लाख ८६ हजार था वहां १९६५-६६ में ७ लाख ८७ हजार हुआ। सीमेन्ट, शुगर, पेपर पल्प, काटन आदि के प्रोडक्शन में भी उत्तरोत्तर वृद्धि हुई।

इस तरह से विभिन्न क्षेत्रों में पैदावार बढ़ी है। यह सही है कि जितनी मात्रा में इन बहुत सी वस्तुओं और पदार्थों का उत्पादन बढ़ना चाहिये था उतनी मात्रा में बहुत से क्षेत्रों में पैदावार नहीं बढ़ी है और खासकर गल्ले के सिल सिले में ऐसा हुआ है। यह कोई ताज्जुब

[श्री चन्द्रभानु गुप्त]

की बात नहीं है। जो नये डेवलपिंग इकोनामी वाले देश हैं और जहां की जनता इकोनामिक परिवर्तन चाहती है जिस प्रकार की कठिनाई का मुकाबला हम कर रहे हैं, उन्हें भी वैसी ही कठिनाई का मुकाबला करना पड़ा था। कौन नहीं जानता कि रूस में भी वैसी ही व्यवस्था देखने को मिली और उसी कारण से वहां मंत्रिमंडल में परिवर्तन हुआ, व्यक्ति दूसरे रखे गये और दृष्टिकोण में भी परिवर्तन लाया गया। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि यह कह लेना कि तीनों प्लान्स ने कुछ कार्य नहीं किया, बेकार सिद्ध हुई, यह बात भले ही हम आलोचना के लिये कह दें, किन्तु यह बातें वास्तविकता से परे हैं और मैं सदन के माननीय सदस्यों से निवेदन करना चाहता हूं कि जो असलियत है उसे हमें अपनी नजरों के सामने से ओझल नहीं करना चाहिये। लेकिन जहां कमी है, कमजोरियां हैं वहां सदन के सदस्यों के नाते उनका कर्त्तव्य हो जाता है कि वे उन्हें कहें, सरकार के सामने कहें और जनता के सामने रखें और उसे रखकर प्रदेश में ऐसा वातावरण बनायें जिससे हमारी पैदावार बढ़े। जिन कमियों से हम घिरे हैं उनका शिकार बन कर न रहें।

आज विरोधी दलों के सदस्यों से मैं निवेदन करना चाहता हूं कि आज यह अवसर केवल ढीका-टिप्पणी करने का नहीं है। आज प्रदेश ऐसी अवस्था और ऐसी परिस्थिति से गुजर रहा है जिसमें कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना योगदान देना पड़ेगा, सहयोग देना पड़ेगा। क्योंकि आज खाने की कमी है और सूखा आज हमारे चारों ओर घेरा डाले हुए है और इस तरह से हमारी कठिनाई बढ़ती चली जा रही है। क्या उधर के बैठने वाले ही उनका समाधान ढूंढ़ लेंगे ? आज प्रत्येक नागरिक को, प्रत्येक किसान को, प्रत्येक मिल में काम करने वाले मजदूर को उसके निदान खोजने में सहयोग देना पड़ेगा। इस अवसर पर मैं सदन के माननीय सदस्यों से विनम्रतापूर्वक निवेदन करना चाहता हूं कि आज की कठिन परिस्थितियों में हम सबको मिलकर मुकाबला करना है। उसका मुकाबला करने के लिये प्रत्येक को परिश्रम करना पड़ेगा तब कदाचित वह युग हमारे बीच में आ सकेगा जिसकी कल्पना हमारे सबके हृदय में है और जिसको लाने के लिये हम सब उत्सुक हैं और जिसकी आकांक्षा हम अपने हृदय में रखते हैं। आज कीमतें बढ़ रही हैं, यह बात कोई छिपा नहीं सकता और यह कोई नवीन बात ऐसे देश के लिये नहीं है जो कि अपनी एकोनामी में तब्दीली कर रहा है, अपनी एकोनामी को एक नये ढाँचे में ढालने के लिये चेष्टा कर रहा है। और भी ऐसे देश हैं जहां की बढ़ती हुई कीमतों के बीच से उस देश के नागरिकों को गुजरना पड़ा है। क्या हम नहीं जानते हैं कि जो चीजें हमारे यहां सस्ती मिलती हैं वही चीजें किन्हीं देशों में चौगुने-पंचगुने दामों पर मिलती हैं। जता जो हमारे देश से रूस को जाता है वह वहां पर डेढ़ सौ रुपये का मिलता है जब कि यहां पर हमें ३०–४० रुपये का मिल जाता है। क्या यह आंकड़े इस बात के द्योतक नहीं हैं कि जब हम एग्रीकल्चरल एकोनामी से इंडस्ट्रियल एकोनामी की ओर जाने की चेष्टा करते हैं तो कीमतें बढ़ जाती हैं और उन बढ़ती हुई कीमतों का सरकार को और जनता को मुकाबला करना पड़ता है। मैं जानता हूं कि जिनकी बंधी हुई आमदनी है यह बढ़ती हुई कीमतें उनको परेशानी में डाले हुए हैं और हमारे सरकारी कर्मचारियों को एक जमाने से परेशानी में डाले हुए हैं। सरकार का और समाज का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि जो परेशानी में हो उनकी दिक्कतों को रफा किया जाय। यह सरकार जब आयी तब उसने जो एक आन्दोलन चला हुआ था उसके बारे में सरकारी कर्मचारियों के प्रतिनिधियों से बातचीत करके उसको समाप्त कराया और इस विश्वास के साथ कि जो सिफारिशें कमीशन जो बैठा हुआ है करेगा सरकार उन सिफारिशों के ऊपर पूरी मात्रा में सहानुभूतिपूर्वक विचार करगी और वह निर्णय लेगी जिससे सरकारी कर्मचारियों की समस्यायें जल्द से जल्द हमारे बीच से हटें और वे उन परशानियों से बचें जिन परेशानियों के घेरे में एक जमाने से वे पड़े हुए हैं। इसलिये मैं यह निवेदन करता हूं कि जो वास्तविक चीज है उसको महज नारों की बिना पर नजर से दूर नहीं कर देना चाहिये।

सौभाग्य की बात है कि आज ऐसी सरकारें भी हमारें बीच में पैदा हो गयीं है जो कि गैर कांग्रेसी हैं और आज उन्हें जिन समस्याओं का मुकाबला करना पड़ रहा है उनके समाधान

में वे साथी जो कांग्रेस के विरोध में हैं और रहे हैं ऐ वे काम करेंगे जिनसे नया वातावरण उत्पन्न होगा और उस वातावरण की दिशा से हम नये मार्ग निकाल सकेंगे। मैं चाहता हूं कि हमारे देश में पार्टी सिस्टम हो जाय। मैं उन व्यक्तियों में से हूं जो इस धारणा के समर्थक है कि देश में जल्द से जल्द टू पार्टी सिस्टम स्थापित हो जाय जिससे कि जनता के समक्ष वे पार्टियां अपने कार्य को रख सकें और फिर जनता जिनको चाहेगी उनको अधिक संख्या में भेजेगी। आज जिस तरह से इरेटिक (erratic) वोटिंग पिछले चुनाव में हुयी है उससे गणतंत्र के संभलने में मजबूती नहीं आयी है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि आज ६, ७ दलों के लोग उत्तरोत्तर उस दिशा में प्रयास कर रहे हैं, विभिन्न बिचारों के लोग मिलकर के एक व्यवस्था बनाते जा रहे हैं और ऐसा कार्य करते जा रहे हैं जिससे शायद एक जमाने में दो दल स्थापित हो जाय और उससे गणतंत्र के मजबूत करने में मदद पहुंच सके। अभी आज ऐसी बात नहीं है। उस बात को हमें लाना है और कोई ऐसी चीज उसको लाने में बाधक नहीं बनानी है जिससे वह व्यवस्था हमारे बीच में न आ सके। यदि ये ६, ७ दस जिसमें मुख्तलिफ विचारों के मानने वाले हैं एक हो जायं और एक दल हमारे बीच में काम करने लगे तो फिर वह समय नजदीक आ सकता है कि जब वह दल इन गद्दियों पर आकर बैठे और यह दल उन विरोधी गद्दियों पर जाकर बैठे। इससे गणतंत्र मजबूत बनेगा। मैं उस दिन की तलाश में रहूंगा जब उस प्रकार की व्यवस्था स्थापित हो जाय। परन्तु आज उसके स्थापित करने में धैर्य से काम लेना पड़ेगा। उसके स्थापित करने में हमें बहुत सी परम्पराओं को अपने बीच में स्थापित करना पड़ेगा और मुझे विश्वास है कि प्रदेश में और अन्य प्रदेशों में भी इस प्रदेश के लोगों में मजबूती दिलायेंगे और ऐसा एक वातावरण हमारे बीच में उत्पन्न करायेंगे जिससे कि हम विकसित रूप में गणतंत्र की जड़ों को मजबूत कर सकें।

एक विषय जिसका बहुत चर्चा हुआ और जो एक बहुत महत्व का विषय है वह था सूखे का विषय। वह भी एक ऐसी चिन्ता की चीज है जिसके ऊपर इस सदन के प्रत्येक माननीय सदस्य को सोचना है और विचार करना है और उस चिन्ता के विषय को दूर करने में प्रत्येक को मदद पहुंचानी है। सरकार अपनी तरफ से कर रही है। जो सरकार की योजनायें हैं, यद्यपि वह पूर्ण रूप रेखा के साथ माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में नहीं आई हैं, परन्तु जब सामान्य बजट आपके सामने अगले महीनों में आयेगा उससे आप ब्यौरेवार ज्यादा जान सकेंगे। अब जो कुछ कार्यवाही की गई है वह उस दिशा में एक बड़ा भारी कदम है। उससे जो विपत्ति हमारे बीच में आई है---१७ जिलों में तो बहुत जोर के साथ वह आई है जहां पर ५१ से ७५ फीसदी फसल नष्ट भ्रष्ट हुई है और बाकी जिलों में उसका उतना प्रकोप नहीं है परन्तु वहां पर भी परेशानी का वातावरण है---उस विपत्ति को अपने बीच से मिटायें। उसको मिटाने के लिये जब तक स्वतः हम अपने पैरों पर खड़े होने की चेष्टा नहीं करेंगे, तो मिटा नहीं सकते हैं। इसलिये वह प्रश्न हमारे सामने है। चाहे केन्द्रीय सरकार की मदद से या अपने बीच वे साधन जुटायें, वे जरिये जुटाये जो जरिये हमारी मदद कर सकते हैं बशर्ते कि उन जरियों को हम प्राप्त कर लें। अपने बीच में कोई ऐसी चीज न करें जो उन्हें खासतौर से प्रभावित करें। सरकार ने अवश्य यह निर्णय लिया है कि हम प्रोक्योरमेंट करें। यह निर्णय उन विचारों के आधार पर है जो विचार हमारे विरोधीदल के कई साथियों ने, जिनको मैंने आमन्त्रित किया था, और जिन्होंने यह बात साफ-साफ व्यक्त कर दी थी कि बिना प्रोक्योरमेन्ट के अब मसला हल होने वाला नहीं है। अब प्रोक्योरमेन्ट होना चाहिये। प्रोक्योरमेन्ट हमको ऐसे ढंग से करना चाहिये जिससे कि वह किसान को खले नहीं। अब वह प्रश्न सरकार के सामने है और वह उस पर विचार करेगी। विरोधी दल के साथियों से बातचीत करेंगे और बातचीत करके ऐसा तरीका निकालेंगे जिससे हम उस शिक्षा में कदम उठा सकें और हम गल्ला अपने गोदामों में किसानों की मदद से ला सकें। और उस गल्ले को उस गल्ले से जोड़ सकें जो भारत सरकार से हमको मिलता है। आज केन्द्रीय सरकार के सामने भी प्रश्न है, क्योंकि उसको बराबर विदेशों से गल्ला मंगाना पड़ता है और मंगाकर देश की समस्या का समाधान करना पड़ता है। यह दुख का विषय है कि इन १६, १७ वर्षों में हम अपने को आत्मनिर्भर नहीं बना सके, हम उतनी मात्रा में देश में गल्ला पैदा नहीं कर पाये जितनी मात्रा में हमको गल्ले की आवश्यकता थी।

[श्री चन्द्रभानु गुप्त]

भले ही हम ऐसे देश के रहने वाले थे, ऐसे प्रदेश के रहने वाले थे कि जहां पर खेती सब से बड़ा उद्योग किसान भाइयों का था। आपने राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में देखा होगा कि अब प्रदेश की सरकार का ध्यान इस दिशा में बहुत तेजी के साथ गया है। चाहे वह बिजली का उत्पादन हो, चाहे सिंचाई का व्यवस्था हो और चाहे बीज वितरण की बात हो, सब खेती की उपज बढ़ाने की तरफ ध्यान दे रहे हैं। ९२६ करोड़ रुपये की योजना में खेती की उपज बढ़ाने का सब से पहले ध्यान रखा है। प्रदेश की उस विपत्ति को दूर करने के लिये सरकार उत्तरोत्तर ध्यान दे रही है। उस दिशा में ध्यान उतनी मात्रा में नहीं दिया जितनी मात्रा में उसको देना चाहिये था और ध्यान देकर उस समस्या को हल करना चाहिये था। मुझे आशा है आगे आने वाले महीनों में हमारा ध्यान उस दिशा में बढ़ेगा और हम सब के सहयोग से उस दिशा में हम कदम बढ़ायेंगे जिससे हम आत्म निर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़ सकें।

आज विज्ञान की सहायता से गल्ले की बहुत सी ऐसी किस्में उपलब्ध हैं कि जो उस गल्ले के मुकाबले में जिसे हम पैदा करते हैं कई गुना अधिक अच्छी हैं और उनकी सहायता से उपज कई गुना बढ़ाई जा सकती है। सरकार का ध्यान इस तरफ है और मुझे यकीन है कि सरकार इस दिशा में कदम उठायेगी और उसके लिये अपनी पूरी चेष्टा करेगी।

हमारे प्रतापसिंह जी ने कुछ समस्याओं की तरफ सरकार का ध्यान दिलाया। उन्होंने उस बोर्ड की आलोचना की जिसकी स्थापना प्रदेशीय सरकार ने की है। मैं उस संबंध में इतना कहना चाहूंगा कि उसमें भूल से देहरादून और नैनीताल के जिले रह गये हैं। मैं इस समय घोषणा करता हूं कि देहरादून और नैनीताल के जिले उस बोर्ड में अपने प्रतिनिधि भेजेंगे और उनकी मदद से पहाड़ों की समस्याओं का अध्ययन किया जायगा। प्रदेश के पहाड़ी जिले अपना महत्व रखते हैं और चीन के आक्रमण के बाद तो उनका महत्व बहुत बढ़ गया है। मुझे आशा और विश्वास है कि उस बोर्ड के तत्वावधान में वह नीतियां निर्धारित होंगी जिनसे पहाड़ के निवासियों को संतोष प्राप्त होगा।

विश्वविद्यालय की चर्चा भी प्रतापसिंह जी ने की। जहां तक उत्तर प्रदेश की सरकार का संबंध है वह अपनी सिफारिश विश्वविद्यालय ग्रांट्स कमीशन को भेज चुकी है और मुझे बतलाया गया है कि ग्रान्ट्स कमीशन ने उनको स्वीकार कर लिया है। जहां तक मेरा संबंध है, मैं फिर इस सदन को सूचित करना चाहता हूं कि नैनीताल या कुमायूं में विश्वविद्यालय बनेगा और हम उन मांगों और आकांक्षाओं को पूरा करेंगे जो समय समय पर नैनीताल या कुमायूं में विश्वविद्यालय बनाने के लिये यहां प्रकाशित की गयी है।

मैं इतना और निवेदन करना चाहता हूं कि चाहे वह एलेक्ट्रिसिटी बोर्ड का मसला हो अथवा हिल बोर्ड का, वह स्कैयरसिटी की बात हो अथवा कीमतों को कंट्रोल करने की, सहकारिता का प्रश्न हो अथवा और कोई, इन सब बातों की थोड़ी बहुत चर्चा राज्यपाल के अभिभाषण में है और यदि माननीय सदस्यों ने गंभीरता से उसे देखा होगा तो उन्हें विदित होगा कि सरकार जो नये कदम उस सिलसिले में उठाने जा रही है उनके अनुसार वह एक नयी दिशा में काम करने जा रही है जिस दिशा में अब तक काम करने में वह असमर्थ रही थी। आज आवश्यकता इस बात की है कि शासन की फिजूल खर्ची कम की जाय और वह कम हो सकती है। चाहे अधिकारीगण हों अथवा मंत्रिगण वे खर्च की कमी की दिशा में अपने जीवन से मिसालें पेश करें ताकि लोग उनकी उन मिसालों से प्रभावित हों तो बड़ा काम हो सकता है और आज इस बात की बड़ी आवश्यकता है। जल्से और शादियों में यदि हम लोग ऐसे कार्य करें तो इस दिशा में एक बड़ा काम हो सकता है और फिर हम आक्षेप का विषय नहीं बनेंगे। इसलिए इस परेशानी के समय में हमें स्वतंत्र कदम उठाना चाहिए जिससे जनता हमारे कदम से प्रभावित हो और जबकि गल्ले की कमी है तो हम लोगों को प्रभावित करें कि हम उनकी दिक्कतों के साथ हैं और केवल सहानुभूति ही नहीं है बल्कि उन दिक्कतों और अड़चनों को दूर करने की हमारी आकांक्षा भी है। मैं स्वीकार करने को उद्यत हूं कि शासन में यदि कमियां हैं तो उनको दूर करने में पूरी मात्रा में सहयोग दीजिये। जहां तक मुझसे और मेरे

सहयोगियों से बन सकता है, मैं अपने और उनकी तरफ से कह सकता हूं कि वह मेहनत और परिश्रम देंगे और उस क्षमता का परिचय देंगे जिससे देश में नया वातावरण बने और देश की गम्भीर परिस्थितियों का निराकरण हो सके। इन शब्दों के साथ मैं उन साथियों को फिर धन्यवाद देता हुआ, जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में अपने सुझाव इस सदन के समक्ष प्रस्तुत किये हैं राज्यपाल महोदय के अभिभाषण का समर्थन करता हूं।

*श्री झारखण्डेराय (जिला आजमगढ़)—

मान्यवर, मैं आभारी हूं उन सब साथियों का जिन्होंने हमारी तरमीम पर अपने विचार प्रकट किये। माननीय मुख्य मंत्री जी ने अपने आंकड़ों से इस बात को सिद्ध करने की चेष्टा की है कि हमारे देश और प्रदेश में बड़ा विकास हुआ हैं उत्पादन बढाने में, लेकिन विकास के कुल आंकड़े यहां पर आकर बेकार हो जाते हैं जब हम राधाकृष्णन की कामराज या पं० जवाहरलाल नेहरू की बात या के० बी० राय कमीशन की रिपोर्ट अथवा, महालानोबीस की रिपोर्ट सुनते या पढ़ते हैं और जब इस कठोर तथ्य पर पहुंचते हैं कि २० साल के कांग्रेस शासन का परिणाम यह हुआ कि गरीब गरीब होता गया और अमीर अमीर होता गया। इसका जवाब किसी आंकड़े से नहीं मिलता है। जब इस बात की चर्चा हमारे सामने होती है कि आज देश के पूरे राष्ट्रीय धन का एक तिहाई ७५ परिवारों में इकट्ठा हो गया है और उनमें तीन ऐसे हैं जिनके पास देश के पूरे धन का १/९ इकट्ठा हो गया है टाटा, बिरला और मार्टन बर्न कम्पनी और पूंजीवाद एकाधिकारी पूंजीवाद के रूप में बढ़ रहा है। समाजवाद तो न रशियन है, न चीनी है, न ईस्ट योरोपीय है, न भारतीय है। वह अब जीवन दर्शन है जो बतलाता है कि 'सोशल ओनरशिप आफ मींस आफ प्रोडक्शन, मैं तो एक यही तथ्य समझता हूं—न रूसी, न अर्जेन्टाइना का, न चिली का, न पूर्वी योरोप। उस ओर हमारे प्रदेश और देश की सरकार का एक कदम भी आगे नहीं बढा है। पं० जवाहर- लाल नेहरू ने प्राइवेट सेक्टर को दबाकर पब्लिक सेक्टर को बढ़ाने की कुछ कोशिश की थी, लेकिन उनके मरने के बाद पब्लिक सेक्टर फिर दबा दिया गया और २० साल में प्राइवेट सेक्टर इतना बढ़ा है जिसके मुकाबले पब्लिक सेक्टर १/१० भी नहीं बढ़ा है। इसलिये किसी भी मानें में समाजवाद की तरफ न देश की सरकार बढ़ी है और न प्रदेश की, और मुझे विश्वास है कि न बढ़ सकती है।

छोटी-सी मिसाल बैंकों के राष्ट्रीयकरण के संबंध की मैं कहता हूं। गुप्ता जी पुराने समाजवादी रहे हैं, आचार्य नरेन्द्र देव के दाहिने हाथ रह चुके हैं। कांग्रेस पार्टी की १६ में से ६ सूबों की कांग्रेस कमेटियों ने पास करके केन्द्र के पास भेजा कि बैंकों का राष्ट्रीयकरण होना चाहिये। ५७ एम० पीज० ने पं० जवाहर हाल नेहरू को लिखकर इसी आशय का प्रस्ताव दिया। राज्य सभा और लोक सभा में गैर सरकारी प्रस्ताव पेश करके डिबेट कराया गया, जहां अनेक कांग्रेसी लोक सभा सदस्यों ने बैंकों के राष्ट्रीयकरण का जोरदार समर्थन किया, परन्तु पं० नेहरू के जमाने में भी बैंकों का राष्ट्रीयकरण नहीं किया गया। हमारे प्रदेश में वाराणसी और लखनऊ कमिश्नरी कांग्रेस कार्यकर्ता सम्मेलनों में बैंकों के राष्ट्रीयकरण के सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित किये गये थे। वाराणसी में पं० कमलापति त्रिपाठी उपस्थित थे और हमारे प्रदेश में गोरखपुर, बनारस, लखनऊ के कांग्रेस वरकर्स कान्फ्रेन्स में इसके लिये प्रस्ताव पास हुआ, लेकिन उनकी बात भी इस सरकार ने नहीं मानी। समाजवाद की ओर जो छोटा-सा कदम था, वह भी सरकार ने नहीं माना।

अध्यक्ष महोदय, बुनियादी सिद्धांतों के सामने अनुशासन के बंधन तक टूट जाते हैं। आपको विदित होगा कि १९०७ में गोखले और तिलक मे जब टक्कर हुई तो उस वक्त कांग्रेस संगठन का ढांचा टूट गया था। माननीय विकल जी के बारे में व्यंग करते माननीय लक्ष्मी रमण आचार्य ने कांग्रेस टिकट के बारे में कहा कि उनको कांग्रेस ने टिकट नहीं दिया तो उसके खिलाफ हो गये, मगर वह तो एक चिन्ह था, एक सिम्बल था, विकल जी कांग्रेस के खिलाफ सवाया लगान के प्रश्न पर लड़े और उनकी जीत इस बात का प्रमाण कि जनता कांग्रेस की इस कर वृद्धि को नहीं चाहती है।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री झारख ण्डेराय]

मान्यवर जनतंत्र की रक्षा उस समाज में नहीं हो सकती जहां विभिन्न समुदायों में विषमता हो, हरिजन और निम्न वर्ग के लोगों के प्रति आदर की भावना न हो और उनको चुनाव मे वोट देने का अधिकार भी न मिल सकता हो । जब तक समाज में शोषण की नीति समाप्त नहीं होती, प्रजातंत्र सफल नहीं हो सकता । प्रजातंत्र की सफलता के लिये परम आवश्यक है कि समाज में पहलें विषमता को दूर किया जाये । इसके लिये आवश्यक है कि हर आदमी को अपना वोट देने की स्वतंत्रता हो । हर आदमी अपने वोट का इस्तेमाल कर सके । बिना इसके प्रजातंत्र सफल नहीं हो सकता । इस बार के इलेक्शन में कांग्रेस का मनोबल चकनाचूर हो गया है। विभिन्न सात प्रदेशों में जो गैर कांग्रेस सरकार बनी है उनसे काग्रेस का मनोबल खंड-खंड हुआ है, और इससे जनतंत्र की सुरक्षा अब शुरू होगी ।

माननीय रामायण राय जी ने एक जनरोष की चर्चा की कि दारुलशफा में कुछ लोगों ने कुछ कहा, मुझे उसकी जानकारी नहीं है, लेकिन उसके पीछे एक भावना थी और वह यह है कि कुछ लोग जो कांग्रेस को हरा कर आये हैं वे कांग्रेस सत्ता बनाये रखने के लिये प्रयास कर रहे थे। इसके लिये कुछ लोगों ने उसके विरोध में कुछ किया।

मान्यवर, कोई भी सेरकार हो, यदि वह शांन्ति पूर्ण आन्दोलनों की भाषा को नहीं समझेगी, नागालैण्ड की भाषा को समझेगी तो वह टिक नहीं सकती और न ही प्रजातंत्र की रक्षा हो सकती है । शान्तिपूर्ण आन्दोलनों की भाषा समझी जानी चाहिये और उसके सामने शासन और सत्ता को सर झुकाना चाहिये ।

मान्यवर, संशोधनों के बारे में कहा गया कि उनमें भिन्न-भिन्न प्रकार की बातें है । कोई संशोधन किसी बात को कहता है तो कोई पार्टी का संशोधन उसका विरोध करता है । ऐसी बात नहीं है । हम सब पार्टियों का एक कामन प्रोग्राम बन गया है और जो हमने संयुक्त विधायक दल गठित किया है, उसमें आपको एकता ही दिखाई पड़ेगी । जो मैंने एकता कायम की है, वह है और वह कायम रहेगी । मान्यवर, कांग्रेस कहने को एक पार्टी है । लेकिन क्या कांग्रेस पार्टी के अन्दर कोई कह सकता है कि भयंकर बुनियादी मतभेद नहीं है ? क्या कांग्रेसजनों को हमारी अनेकता में एकता नहीं दिखाई देती है । हमने एक मोर्चा बनाया है, जहां आपको मतभेद और अन्तर्द्वन्द्व दिखाई देता है हम उसको भी मिटायेंगे । जनता की आज्ञाओं की ठोकरों ने एक जगह खड़ा रहने के लिये मजबूर किया है और हम खड़े रहेंगे ।

ला ऐन्ड आर्डर की सिचुएशन बद से बदतर होती जा रही है । अमेरिकन इन्फिल्ट्रेशन दूर देहातों में घुस रहा है । आजमगढ़ जनपद के मुबारिकपुर में शिया सुन्नियों का दंगा होली के अवसर पर अभी हुये जिसमें एक सुन्नी और दो शिया मरे और पचासो आदमी घायल भी हुये । प्रिवेन्शन इज बैटर दैन क्योर । दोनों के बीच तनाव महीनों से नहीं सालों से चल रहा था । शियाओं और सुन्नियों द्वारा अलग-अलग लिखी हुई परस्पर विरोधी पुस्तकें छप रहीं थीं बट रही थीं और उन किताबों को अमेरिकन एजेन्सियां छपवाने के लिये पैसा दे रही थीं। वहां की पुलिस ने इस आधार पर ऊपर रिपोर्ट की, लेकिन कोई प्रिवेन्शन नहीं किया गया । नतीजा यह हुआ कि बाद में भयंकर दंगे हुये । अमेरिकन घुस पैठ कितनी गहराई तक घुस गई है उसका बहुत बड़ा ताजा नमूना यह है । अन्त में मैं एक बात और कहूंगा । हिन्दुओं में आखिरी वक्त में वानप्रस्थ आश्रम स्वीकार कर लेते हैं.... (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष---

मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना करूंगा कि वे शान्त रहें ।

श्री झारख ण्डेराय---

और मुसलमानों में आखिरी वक्त मक्का मदीना को रवाना होते हैं । लेकिन लखनऊ एक ऐसी जगह हो गई है जो पोलिटिकल एसाईलम हो गयी है और मिनिस्ट्री से हटने के बाद भी सभी भूतपूर्व मन्त्री घूम फिरकर लखनऊ में ही बगंला लेंगे, यहीं रहते हैं । क्यो वृद्ध नेता, भूतपूर्व

माल मंत्री हुकुमसिंह जी यह तय कर चुके हैं कि रिटायरमेन्ट के बाद वे लखनऊ में वास करेंगे। काशीवास, बद्रीनाथ या रामेश्वर वास करने नहीं जायेंगे। यह चीज बताती है कि स्वार्थपरता के अतिरिक्त कोई चीज नहीं रह गई है।

*श्री कृष्णानन्द राय (जिला गाजीपुर)—

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सदन के सभी आदरणीय सदस्यों को इस बात के लिये धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने इस वाद विवाद में भाग लिया और विशेष तौर से विरोधी दल के आदरणीय नेता को मैं इस बात के लिये बधाई देता हूं कि उन्होंने वाद विवाद के स्तर को ऊंचा करने में सहयोग दिया है। श्रीमन्, एक चीज की तरफ मैं विशेष रूप से आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि विरोधी दल के लीगल हैड हैं श्री तलवार साहब। उन्होंने इस प्रश्न को उठाया कि राज्यपाल ने जिस प्रकार से उत्तर प्रदेश में सरकार बनवाई है वह संविधान के खिलाफ है। एक सदस्य श्री जायसवाल ने यह कहा कि राज्यपाल ने जो शपथ दिलवाई है वह शपथ निष्ठा के प्रति ठीक नहीं है और वह निष्ठा तोड़ी गई है। संविधान के अनुच्छेद १७४ तथा १६४ के अनुसार तथा जहां जिन देशों में रेंप्रेजेन्टेटिव गवर्नमेन्ट्स बनती हैं उनमें राष्ट्रपति और राज्यपाल को यह अधिकार है कि वह जिस किसी व्यक्ति को चाहे वह प्रधान मंत्री या मुख्य मंत्री चुन सकता है। और वह सदन का विश्वास प्राप्त करने में भी सफल होता है तो वह संवैधानिक दृष्टि से उचित माना जायेगा। श्रीमन्, मैं इंगलैंड का उदाहरण दे सकता हूं। वहां ऐसा अवसर आया हुआ था कि वहां पर कोई भी दल बहुमत में नहीं था तो एक ऐसा दल जिसकी लार्जेस्ट पार्टी थी, उसके नेता को प्रधान मंत्री बनने का अवसर दिया और उन्होंने अपनी गवर्नमेंट बनायी। माननीय तलवार साहब का कहना था कि उत्तर प्रदेश के राज्यपाल ने गवर्नमेंट बनाने में जो दिलचस्पी ली वह उचित नहीं थी। १९३१ में इंगलैंड में लेबर गवर्नमेंट का प्रधान मंत्री था। उसने उसको बिट्रे किया। अब उनके साथ केवल १६ व्यक्ति रह गये। लेकिन राजा ने पुनः श्री बाल्डविन को ही प्रधान मंत्रित्व के लिये आमंत्रित किया। इस पर बड़ी भारी कन्ट्रोवर्सी चली। लेकिन यही निश्चय हुआ कि राजा का यह प्रीरोगेटिव राइट है कि वह किसी को भी प्रधान मंत्री चुन सकता है। और पार्लियामेंट ने इसको एप्रूव किया और बाद में श्री बाल्डविन सदन का अप्रूवल पाने में समर्थ हुए।

माननीय उग्रसेन जी ने एक बात की ओर सदन का ध्यान आकर्षित किया जो राष्ट्रीय महत्व की है। उन्होंने कहा कि इस प्रदेश के लोग स्वेतलाना को भारत से बाहर करने में सफल हुए। उनका यह बड़ा भारी षड़यंत्र रहा। षड़यंत्र में कोई हाथ उत्तर प्रदेश का था, यह तो इससे ही खत्म हो जाती है कि वह यहां से जाकर कई सप्ताह दिल्ली में रहीं। स्वेतलाना के बाहर भेजने में जिस किसी का भी हाथ रहा हो, लेकिन इतना मैं अवश्य कह देना चाहता हूं कि आज उसके निर्णय को देखकर माननीय स्टेलिन की आत्मा जहां कहीं भी हो यह देखती होगी कि आज उनकी पुत्री स्वतंत्रता का अनुभव करना चाहती है जीवन के अन्तिम क्षणों में। मैं अब इस कंट्रोवर्सी में नहीं आना चाहता कि कौन सी सरकार और गैरसरकारी एजेन्सी रही जिन्होंने ऐसा किया, लेकिन लोकतंत्र में समाजतंत्र का बहुत बड़ा हाथ होता है और उसमें हमें ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं जिनमें किसी भी सरकार को उसकी सीमाओं के बाहर जाना कठिन होता है और उसके बाहर जाना जनता के हितों के विरुद्ध होता है।

मैं माननीय प्रताप सिंह जी को इस बात की बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने यह स्वीकार किया कि हमारा प्रदेश एक पिछड़ा हुआ प्रदेश है। जिन सदस्यों ने इस बात की चर्चा की कि इस समय हमारे प्रदेश में गरीबी है, भुखमरी है और जिन्होंने मूल्यों के बढ़ने की शिकायत की है, उन्होंने ठीक ही कहा है। राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में इस ओर सरकार का ध्यान आकर्षित किया है। राज्यपाल महोदय ने कहा है कि सबसे बड़ी आवश्यकता है कि मूल्यों को कम किया जाय और गरीबी तथा भुखमरी को समाप्त किया जाय।

विरोधी दल के माननीय नेता विकल जी ने माननीय मुख्य मंत्री का ध्यान बातादीला और छितौनी बांध की ओर आकर्षित करते हुए कहा कि वहां पर कम से कम १ लाख रुपये का गबन

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री कृष्णानन्द राय]

है। यह संसदीय परम्परा है कि अगर इस प्रकार के स्पष्ट आरोप लगाये गये हों तो उनको अवश्य ही देखा जाना चाहिये। मैं माननीय मुख्य मंत्री जी से अनुरोध करूंगा कि वह सदन के सम्मुख इसकी जांच करा कर अवश्य ही रिपोर्ट करें कि उनका यह चार्ज गलत है या सही है। इन शब्दों के साथ मैं इस धन्यवाद के प्रस्ताव को सदन के सामने पुनः रखना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष--

(श्री चरण सिंह के खड़े होने पर) आप किस विषय में बोलना चाहते हैं?

श्री चरणसिंह (जिला मेरठ)--

मुझे एक छोटा सा बयान देना है और वह यह कि कांग्रेस पार्टी के कुछ सदस्यों ने कांग्रेस पार्टी छोड़ कर जन कांग्रेस नाम की एक पार्टी बनायी है।

(शोर--चरणसिंह जिन्दाबाद के नारे।)

श्री अध्यक्ष--

मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना करूंगा कि वे कृपया संतुलन बरतें।

श्री चरणसिंह--

अध्यक्ष महोदय, मेरे जीवन के ४५ वर्षों के लगभग और मेरे बहुत से साथियों के भी इसी अवधि के लगभग कांग्रेस में काम करते बीत चुके हैं और आज यह फैसला हमारे लिये करना कोई आसान काम न था। यह हमारे लिये एक बहुत दुखद निश्चय हुआ है, परन्तु जनहित को दृष्टि में रखकर हमने बहुत-बहुत मजबूर होकर यह फैसला किया है।

अध्यक्ष महोदय, हमारे यह सारे साथी जो इधर बैठे हैं मैंने बरसों उनके साथ मिलकर, कन्धे से कन्धा मिला कर, काम किया है। हम सब एक ही राजनीतिक दल के अभी तक सदस्य रहे हैं, लेकिन आज उससे रिश्ता तोड़ने में हमें कष्ट अवश्य होता है। मुझे आशा है कि मेरे और उनके जो दूसरे दोस्त इधर बैठे हैं, जहां तक अन्य सामाजिक सम्बन्धों का ताल्लुक है, वे पूर्ववत मधुर बने रहेंगे और कोई कड़वाहट बावजूद इस बात के कि आज यह राजनीतिक रिश्ता खत्म हो रहा है, पैदा न होगी और हमारी यह कोशिश होगी कि ऐसा कोई अवसर न आये क्योंकि यह स्पष्ट है कि यह स्थिति हमारी मजबूरी के बाद आई है।

पिछले चुनाव ने कांग्रेस को एक चेतावनी दी थी और सारी जनता और आम कांग्रेसजन यह आशा करते थे कि कांग्रेस में एक सुधार आयेगा औ कांग्रेस के हमारे साथी और हमारे लीडरान उससे सबक लेंगे। मैं गुप्ता जी को अपना लीडर मानता हूं, हमारी उनकी उम्र करीब करीब बराबर है, बल्कि मुझसे वह कुछ बड़े ही हैं और भी कुछ सदस्य मेरे से उम्र में बड़े हो सकते हैं जिनको कि मैं नेता मानने के लिये तैयार हूं। मुझे तकलीफ है कि जो सबक और जो पाठ हमको इन एलेक्शन्स के नतीजों के बाद सीखना चाहिये था वह हमने नहीं सीखा। जनता आशा करती थी कि कांग्रेस गवर्नमेंट अगर आज की परिस्थितियों में बनी तो एक नया वर्क उल्टा जायगा, नई तस्वीर बनेगी और जन आशाओं को पूरा करने के लिये एक नया अध्याय खुलेगा। ज्यादा तफसील में न जाकर मैं कहूंगा कि यह साबित हो गया है कि जनता की यह आशा निराशा में परिवर्तित हुई है।

अध्यक्ष महोदय, आज जनसाधारण यह जानने में असमर्थ है कि गैरकांग्रेसी सरकारें जहां-जहां कायम हुई हैं वहां-वहां खाद्य सामग्री की कीमतें सभी जगह कम हुई हैं, गिरी हैं और हमारे प्रदेश में जहां कांग्रेस सरकार कायम हुई है वह नीचे नहीं आई और जनता इस बात का आज उत्तर नहीं पा रही है कि ऐसा क्यों है और मुझ जैसे लोग जो जनसेवक होने का क्लेम रखते हैं उनकी समझ में नहीं आ रहा है कि क्या बात है। आज १८ दिन हो गये इस सरकार को कायम हुये, लेकिन उसका कोई इम्पैक्ट नई परिस्थिति के अनुकूल प्रशासन पर नहीं हुआ है, मुझे नहीं, मालूम कि करप्ट लोग चाहें वे प्रशासन में हों, सरकारी कर्मचारी हों या गैरसरकारी कर्मचारी हों, उनके अन्दर कोई किसी तरह की घबराहट इस नई सरकार के कायम होने से पैदा नहीं हुई।

अक्सर कांग्रेस दल के हमारे साथी कहते हैं कि हम जनतन्त्र में विश्वास करते हैं और स्वस्थ परम्परायें कायम करना चाहते हैं, लेकिन जो हमारे साथी किन्हीं कारणों से पराजित हुये हैं अभी इस चुनाव में उनको किसी न किसी जगह रखने की कोशिश यथापूर्व की जा रही है। यह जनता के निर्णय की खुली अवहेलना करना है। बातें बहुत सी कहने को थीं, लेकिन मुझे तकलीफ है ज्यादा कहने में। हमारे दोस्तों की जो पार्टी है जिसमें रह कर मैंने सन् ४६ से आज तक समय गुजारा है, पंडित गोविन्द वल्लभ पन्त के कदमों में और जिस दल के झंडे को लेकर मैंने गांव-गांव और घर-घर में अलख जगाया है, आज मुझे उस दल को छोड़कर यह कहना पड़ रहा है इसके लिये मुझे तकलीफ है, बहुत-बहुत तकलीफ है। यह जो आज फैसला लिया है इतने आदमियों ने, यह जनतन्त्र का एक ऐतिहासिक पृष्ठ है। मुझ से यह बात नहीं छिपी है। यह बयान मैं सब की तरफ से दे रहा हूं। मुझ पर भी इसकी जिम्मेदारी है क्योंकि उन्होंने मुझे ही अग्रणी किया हुआ है।

अध्यक्ष महोदय, एक से भ्रन्त व्यक्ति से मेरी बातचीत हुयी। तो उन्होंने पूछा कि क्या किया। मैंने उनको एक ही जवाब दिया कि आप मेरे ऊपर दया कीजिए। मुझको महसूस हो रहा है कि मेरे और मेरे खयाल के लोगों के लिए आज कांग्रेस में कोई स्थान नहीं है। आज मैंने अखबार में एक बयान पढ़ा है। जिस प्रकार से किसी के छूरा भोंकने पर तकलीफ होती है, मेरे दिल में उसी प्रकार से तकलीफ हुयी है। मैं नहीं समझ पाया कि आत्मसम्मान वाले मेरे साथी कैसे कांग्रेस में रह सकते हैं। अन्त में मुझे यह अर्ज करना है कि मैं माननीय सदस्यों और अपने साथियों से माफी चाहूंगा कि अगर मेरे मुंह से कोई कठोर बात निकल गयी होगी तो वे मुझे माफ करेंगे। राजनीतिक पार्टियां तो एक इन्स्ट्रूमेंट हैं पब्लिक सर्विस की और अगर वह पार्टी जन सेवा का साधन नहीं रह जाती है तो फर्ज है उसके सच्चे सदस्यों का कि उस पार्टी से बिदा ले लें। जिन मान्यताओं के लिए हमने इतना सारा जीवन बिताया, उनकी रक्षा अगर हमको करनी है तो वह कांग्रेस के अन्दर नहीं हो सकती है, बाहर ही हो सकती है। इन शब्दों के साथ में अपने कथन को समाप्त करता हूं।

श्री अध्यक्ष—

अब मैं जो संशोधन प्रस्तुत किया गया है माननीय झारखंडे राय द्वारा, उस पर पहले मतदान लूंगा। माननीय झारखंडे राय जी द्वारा प्रस्तुत संशोधन इस प्रकार है:—

"प्रस्ताव के अन्त में निम्नलिखित जोड़ दिया जाय—

किन्तु खेद है कि महामान्य राज्यपाल ने अपने अभिभाषण में—

१—लगान, भूमि-भवन-कर, वृत्ति एवं व्यापार-कर को समाप्त करने,

२—हाई स्कल तक निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करने,

३—समान काम के लिये समान वेतन के सिद्धान्त को स्वीकार करके प्रदेश के गैर-सरकारी मान्यता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों और सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों के वेतन तथा सेवा की शर्तों में समानता स्थापित करने,

४—न्यायपालिका तथा कार्यपालिका का अविलम्ब पृथकीकरण करने,

५—अवैतनिक मैजिस्ट्रेटों की नियुक्ति प्रथा को समाप्त करने,

६—राज्य कर्मचारियों की मांगों को स्वीकार करने,

७—महंगाई भत्ते को जीवन मूल्य सूचकांक से सम्बद्ध करने,

८—कार्यालयों में बकारी बढ़ाने वाले स्वचालित यन्त्रीकरण को समाप्त करने,

९—प्राइमरी पाठशालाओं के अध्यापकों का न्यूनतम वेतन १५० रु० प्रति मास करने,

[श्री अध्यक्ष]

१०—छात्र तथा अन्य राजनैतिक बन्दियों को जेल से तुरन्त रिहा करने,

११—हाल के गोली कांडों पर न्यायिक जांच करने और एक स्थायी जांच आयोग की नियुक्ति की घोषणा करने जो हर गोली कांड की जांच करेगी,

१२—राज-काज के सभी अंगों से अंग्रेजी हटाकर और पूरे प्रशासन में हिन्दी भाषा का प्रयोग करने,

१३—सभी अनाजों के मूल्य, कृषि उपयोगी वस्तुओं तथा कल-कारखानों से बनने वाली जीवन उपयोगी आवश्यक वस्तुओं में संतुलन (पैरिटी) बनाये रखने की दृष्टि से कोई निश्चित योजना की घोषणा करने,

१४—कृषि कार्य के लिये किसानों को बिजली देने में प्राथमिकता तथा सुविधा दिये जाने,

१५—किसानों के लिये सिंचाई के सस्ते, सुलभ तथा उपयोगी साधनों की तुरन्त व्यवस्था करने,

१६—सिंचाई की दरों में कमी करने,

१७—कृषि योग्य ऊनर, परती, बंजर जमीन को मुफ्त बांट देने और वितरण में खेतिहर मजदूर, भूमिहीन किसान, हरिजन, थारू, कोल आदि कमजोर तबकों को प्राथमिकता देने,

१८—अनुसूचित तथा पिछड़ी जातियों के उत्थान के लिये विशेष रूप से संरक्षण देने की कोई समुचित योजना बनाने,

१९—भूमि अधिग्रहण कानून में समुचित संशोधन करने, जिससे कि भूमिमालिकों के हितों का संरक्षण हो सके,
की घोषणा नहीं की।"

(प्रश्न उपस्थित किया गया और विभाजन की मांग होने पर घंटी बजायी गयी)

श्री अध्यक्ष—

घंटी बजते समय यह घोषणा करना चाहता हूं कि यदि कोई सदस्य यहां पर पीछे या लाबीज में हों, जो इस विधान सभा के सदस्य नहीं हैं, वे कृपया फौरन बाहर चले जायं। यहां के कर्मचारी जो ड्यटी पर हैं, वे इसको देखेंगे।

श्री प्रतापसिंह—

श्रीमन्, हमारे एक माननीय सदस्य बीमार हैं और वह नीचे कुर्सी पर हैं। उनको कुर्सी पर लाने की इजाजत दी जाय।

श्री अध्यक्ष—

यदि घंटी बजते समय यहां आ जायं तो ठीक हैं।

श्री रामचन्द्र विकल—

श्रीमन्, में निवेदन करना चाहता हूं कि विभाजन, 'विभाजन कक्ष' में होना चाहिये।

श्री अध्यक्ष—

उसके लिये आगे प्राविधान है।

श्री भुवनेशभषण (जिला इटावा)—

माननीय शिव प्रसाद गुप्त इस सदन के सदस्य नहीं हैं, अतः उनको नहीं रहना चाहिये।

श्री अध्यक्ष—

उन्हें यहां बैठने का अधिकार है, लेकिन वोट नहीं दे सकते। यह उनकी इच्छा है कि वह बैठें या न बैठें।

श्री महीलाल (जिला मुरादाबाद)—

कोई इस समय गवर्नमेन्ट बिजनेस नहीं हो रहा है, वोटिंग होने जा रहा है इसलिये उनके यहां बैठने का क्या औचित्य है?

श्री अध्यक्ष—

वह वोटिंग में भाग नहीं ले सकते। अभी तो आगे काफी कार्य बाकी है।

एक सदस्य—

कोई भी सदस्य जो इस सदन का सदस्य नहीं है उसको इस सदन में नहीं रहना चाहिये।

श्री उग्रसेन (जिला बेवरिया)—

अब माननीय रामनारायण पांडेय जी पधार गये।

श्री अध्यक्ष—

उनको बैठने का अधिकार है, वोट देने का अधिकार नहीं है।

यह एक ऐसा महत्वपूर्ण विषय है। इसमें लाबी में वोटिंग होना आवश्यक है। अभी मुझसे माननीय सदस्य कह रहे थे कई माननीय सदस्य नये हैं। मैं उनको बतला दूं कि जो माननीय सदस्य इस संशोधन के पक्ष में हों, वे मेरे सीधे हाथ की लाबी 'हां' में जायंगे और जो इस संशोधन के विपक्ष में हैं वे "नहीं" की लाबी में जो मेरे बायें हाथ पर हैं उसमें जायेंगे।

प्रश्न पुनः उपस्थित किया गया और निम्नलिखित मतानुसार स्वीकृत हुआ:—

पक्ष में—२१५

अंगनेलाल, श्री
अख्तर अली खां, श्री
अठई राम, श्री
अनन्तराम, श्री
अयोध्या प्रसाद, श्री (मिर्जापुर)
अवेद्यनाथ, श्री
अशर्फी लाल, श्री
अश्वनी कुमार, श्री
अश्वनी कुमार चतुर्वेदी "राकेश", श्री
अहमदउल्ला खां, श्री
इन्द्रपाल सिंह, श्री
उग्रसेन, श्री
उदय प्रताप, श्री
उदित नारायण, श्री
ऊदल, श्री
ओम प्रकाश, श्री
ओम प्रकाश सिंह, श्री
कन्हैयालाल, श्री (इटावा)
कन्हैयालाल, श्री (झांसी)
कमला प्रसाद, श्री (बहराइच)
कल्याणचन्द मोहिले, श्री (उपनाम कुमऊ गुरु)
कल्याण सिंह, श्री
कामता सिंह, श्री
काशीनाथ, श्री
किशनलाल, श्री
किशनलाल बिलेर, श्री

किशुनलाल, श्री
कृष्ण बहादुर, श्री
केदार राज जंगबहादुर राणा, श्री
केशरी लाल, श्री
गंगा प्रसाद, श्री (एटा)
गंगाभक्तसिंह, श्री
गंगा राम, श्री
गजाधर, श्री
गया प्रसाद, श्री (उपनाम मास्टर साहब)
गया प्रसाद मेहरोत्रा, श्री
गिरीशचन्द्र तिवारी, श्री
गौरीशंकर सराफ, श्री
घनश्याम गिरि, महन्त
चन्द्रकिशोर, श्री
चन्द्रबली, श्री
चन्द्रशेखर, श्री
चन्द्रशेखर सिंह, श्री
चरण सिंह, श्री
चेतराम पचपेड़ा, श्री
चेतरम वर्मा, श्री
जंगबहादुर, श्री
जगत सिंह, श्री
जगदीश नारायण त्रिपाठी, श्री
जगदीश सिंह, श्री
जगपत सिंह, श्री
जगवीर सिंह, श्री
जयराम वर्मा, श्री
जयेन्द्र सिंह, श्री
जवाहिर लाल, श्री
जसोदा नन्द, श्री
जितेन्द्र नाथ मिश्र, श्री
जी० एस० चौधरी, श्री
जुगल किशोर, श्री
जैदत्त सिंह, श्री
जैनूराम, श्री
जोरावर वर्मा, श्री
झारखंडे राय, श्री
टम्बरेश्वर प्रसाद, श्री
टीकम सिंह, श्री
दल सिंह, श्री
दीपंकर, आचार्य
दुर्गाप्रसाद, श्री
वृगराज सिंह, श्री
देवीचरण अग्निहोत्री, श्री
देवीदयाल, सेन, श्री
देवी सेवक, श्री
देवेन्द्रसिंह, कुंवर
धनराज यादव, श्री
धर्मवीर सिंह, श्री
ध्रुव कुमार, श्री
नन्हेलाल, श्री
नरबदेश्वर, श्री
नाथूराम शिक्षक, श्री
नेमपाल सिंह, श्री
पब्बर राम, श्री
पीतम सिंह, श्री
प्यारेलाल, श्री (मेरठ)
प्रताप नारायण तिवारी, श्री
प्रताप सिंह, श्री
बंशीधर, श्री
बजरंग बली, ब्रह्मचारी
बदलराम, श्री
बद्री प्रसाद अवस्थी, श्री
बलदेवसिंह, सरदार
बलवीर सिंह, श्री (मेरठ)
बलवीर सिंह, श्री (फतेहगढ़)
बसन्त सिंह, श्री
बाबू बदरे, श्री
बाबूराम, श्री
बाबू सिंह, श्री
बिशन लाल, श्री
बृज किशोर, श्री
बृजपाल सिंह, श्री
बृजमोहन दास अग्रवाल, श्री
बेचनराम, श्री (वाराणसी)
बैजनाथ, श्री (वाराणसी)
ब्रह्माश्रम, स्वामी
भगवतीसिंह विशारद, श्री
भगौती, श्री
भगौती प्रसाद वर्मा, श्री
भग्गूराम, श्री (उपनाम भृगुनाथ)
भारतसिंह चौहान, श्री
भोखालाल, श्री
भीमा प्रसाद, श्री
भुवनेश भूषण, श्री
भैरवदत्त धूलिया, श्री
मंगलदेव, श्री
मंजूर अहमद, श्री
मकसूद हुसैन, श्री
मधुकर दिघे, श्री

मन्ना लाल, श्री
मन्सादीन, श्री
मलिखान सिंह, श्री
महिपाल सिंह, श्री
महीलाल, श्री
महेन्द्रप्रताप सिंह, कुंवर
महेश कुमार, श्री
मानसिंह, श्री
मारकण्डे, श्री
मुन्शीलाल चमार, श्री
मुन्शीलाल, श्री
मुरलीधर, श्री
मुलायम सिंह, श्री
मुल्कीराज, श्री
मुल्तान सिंह, श्री
मुहम्मद असरार अहमद, श्री
मोती लाल देहलवी, श्री
मोहन लाल कपूर, श्री
रघुनाथसिंह, श्री (आगरा)
रघुनाथसिंह, श्री (झांसी)
रघुराज, श्री
रघुवीर, श्री
रघुवीर सिंह, श्री (मैनपुरी)
रमावल्लभ मिश्र, श्री
रमाशंकर अग्रवाल, श्री
रवीन्द्र प्रताप सिंह, श्री
राजनारायणसिंह, श्री
राजबली, श्री
राजबहादुर, श्री (जौनपुर)
राजबहादुर द्विवेदी, श्री
राज राजेश्वर, श्री
राजेन्द्रसिंह यादव, श्री
राधेश्याम कपूर, श्री
रामअवल सिंह राकेश, श्री
राम अधार, श्री
राम आसरे, श्री
रामकरन, श्री
रामचन्द्र आजाद, श्री
रामचन्द्र जोशी, श्री
रामचन्द्र विकल, श्री
रामचरन दोहरे, श्री
रामदत्त, श्री
रामदास, श्री
रामदुलार पटेल, श्री
रामदुलारे, श्री (गोंडा)
रामदेव, श्री (गोंडा)
रामदेव, श्री (प्रतापगढ़)
रामनरेश पांडेय, श्री
रामनाथ, श्री (शाहजहांपुर)
राम नारायण, श्री
रामपति, श्री
रामप्यारे शुक्ला, श्री
रामप्रकाश त्रिपाठी, श्री
रामप्रसाद देशमुख, श्री
रामबचन, श्री
रामश्री राजपूत, श्री
रामसजीवन, श्री
रामसरन सिंह, श्री
रामसुन्दर शास्त्री, श्री
रामसेवक, श्री
रामस्वरूप, श्री (देहरादून)
रामस्वरूप वर्मा, श्री
रामेश्वर सिंह, श्री
रुस्तम सैटिन, श्री
रूप नाथ, श्री
लाखन, श्री
लालकृष्ण कुमार पाल, श्री
वरमेश्वर पाण्डेय, श्री
विपिन बिहारी तिवारी, श्री
विश्वनाथ प्रसाद, श्री (उपनाम शींगन साहू)
विष्णु स्वरूप, श्री
वीरेश्वर त्यागी, श्री
शंकर सिंह, चौधरी
शमीम आलम, श्री
शराफत हुसैन रिजवी, श्री
शशिभूषण सिंह, श्री
शिवगोपाल तिवारी, श्री
शिवराज सिंह, श्री
शिवलाल, श्री
श्यामलाल यादव, श्री
श्याम सिंह, श्री
शंकर शर्मा, श्री (उपनाम लालजी शर्मा वकील)
सन्तू, श्री
सरजू प्रसाद, श्री
सरदार सिंह, श्री
सहदेव सिंह, श्री
सालिक राम, श्री
सियाराम, श्री
सुखदेव प्रसाद, श्री
सुशील कुमार विद्यार्थी, श्री

सोहन लाल, श्री
हरीशकुमार गंगवार, श्री
हरीशचन्द्र सिंह, श्री
हरीसिंह, श्री (बुलन्दशहर)
हरीसिंह, श्री (मेरठ)
हिम्मत सिंह, श्री
हुकुमसिंह, श्री
होरीलाल यादव, श्री

विपक्ष में—१९८

अजीत प्रताप , श्री
अतीकुर्रहमान, श्री
अब्दुल खालिक, श्री
अब्दुल मुईज खां, श्री
अयोध्या प्रसाद, श्री (झांसी)
अयोध्या प्रसाद आर्य, श्री
अर्जुन, श्री
अवधेश प्रताप मल, श्री
अशरफ अली खां, श्री
आत्मा, श्री
आनन्द सिंह, कुंवर
इन्द्रमणी, श्री
इन्द्र मोहिनी, श्रीमती
इन्द्रलाल, श्री
ईश्वर शरण, श्री
उमादत्त, श्री
एस० जी० दत्त, श्री
ए० सी० ग्राइस, श्री
ओंकार सरन, श्री
कन्धई लाल, श्री
कन्हैयालाल बाल्मीकि, श्री
कमला प्रसाद, श्री (जौनपुर)
करनसिंह, श्री
कलारानी, श्रीमती
कल्पनाथ सिंह, श्री
कालीचरण, श्री
किशनसिंह, श्री
कृष्णसिंह, श्री
कृष्णानन्द राय, श्री
केशव देव, श्री
खब सिंह, श्री
खेमा, श्री
गंगाधर, श्री
गया प्रसाद, श्री (मथुरा)
गंगास्वरूप भटनागर, श्री
गिरजाशंकर, श्री
गिरधारी लाल, चौधरी
गिरिराज सिंह, श्री
गुप्तार सिंह, श्री
गुलाब सिंह, श्री
गेंदा सिंह, श्री
गोपालदत्त ओझा, श्री
गोपाल राम दास, श्री
गोविन्द नारायण तिवारी, श्री
गोविन्द सहाय, श्री
गौरी राम, श्री
गौरी सिंह राठौर, श्री
घनश्यामदास, श्री
चतुर्भुज शर्मा, श्री
चन्द्रकुमार, श्री
चन्द्रदेव, श्री
चन्द्रभानु गुप्त, श्री
चन्द्रसिंह रावत, श्री
जगदम्बा प्रसाद, श्री
जगन प्रसाद रावत, श्री
जमीलुर्रहमान, श्री
जयनारायण सिंह, श्री
जवाहर लाल जाटव, श्री
जानकी प्रसाद, श्री
जियाउर्रहमान, श्री
जे० एन० सिन्हा, श्री
तिरमल सिंह, श्री
तेज सिंह, श्री
त्रिवेणी, श्री
त्रेपनसिंह, श्री
दल बहादुर सिंह, श्री
दशरथ, श्री
दुर्गाप्रसाद, श्री
दुर्योधन, श्री
देव राम, श्री
देवी सहाय बाजपेयी, श्री
देशराज सिंह, श्री
धनुषधारी पाण्डेय, श्री
धर्मगज सिंह, श्री

धर्मवीर, श्री
धर्म सिंह, श्री
नरदेव सिंह, श्री
नरेन्द्र सिंह विष्ट, श्री
नवलकिशोर, श्री
नारायणदास, श्री
नारायण सिंह, श्री
नित्यानन्द पाण्डेय, श्री
नियाज हसन, श्री
निहाला सिंह, श्री
नेकराम शर्मा, श्री
नौनिहाल सिंह, श्री
पातीराम अहरवार, श्री
प्यारे लाल, श्री (अलीगढ़)
प्रभाकर त्रिपाठी, श्री
प्रभुदयाल, श्री
प्रेमदत्त, श्री
फारुक चिश्ती, श्री
फूल सिंह, श्री
बंशीधर मिश्र, श्री
बदनसिंह, श्री
बद्री प्रसाद, श्री
बनारसी दास, श्री
बसन्तलाल, श्री (जालौन)
बसन्तलाल, श्री (लखनऊ)
बाबूलाल, श्री
बेचनराम, श्री (मिर्जापुर)
बेनी बाई, श्रीमती
बूनीसिंह अवस्थी, श्री
भगुनाथ चतुर्वेदी, श्री
मंगला प्रसादतिवारी, श्री
मदन मोहन मिश्र, श्री
मन मोहन सिंह, श्री
मन्नी लाल, श्री
महरमसिंह, श्री
माता प्रसाद, श्री
मुक्तिनाथ राय, श्री
मुजफ्फर हसन, श्री
मुहम्मद महमूद अली खां, श्री
मुहम्मद रऊफ, श्री
मुहम्मद रफी खां, श्री
मोहन लाल, आचार्य
मोहन लाल गौतम, श्री
यशोदादेवी, श्रीमती
यादवेन्द्रसिंह, श्री (उपनाम ललन जी)
योगेश्वर प्रसाद, श्री
रईसउद्दीन, श्री
रघुनाथ सिंह, श्री (कानपुर)
रघुनाथ सिंह वर्मा, श्री
रघुवीर सिंह, श्री (एटा)
रफी मुहम्मद खां, श्री
रमाकांत श्री
राजकिशोर, श्री
राजदेव, श्री
राजनाथ, श्री
राजबहादुर, श्री (सीतापुर)
राजबहादुर चन्द, श्री
राजाराम, श्री (देवरिया)
राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी, डाक्टर
राजेन्द्रदत्त, श्री
राजेन्द्र प्रताप सिंह, श्री
रामअंजोर, श्री
रामआधीन सिंह, श्री
रामकिंकर, श्री
राम कुमार, श्री
रामचन्द्र सिंह, श्री
रामजीलाल सहायक, श्री
रामदुलारे, श्री (रायबरेली)
रामनरेश शुक्ल, श्री
राम नाथ, श्री (मिर्जापुर)
रामपाल त्रिवेदी, श्री
राम प्रसाद, श्री (आगरा)
राम प्रसाद, श्री (रायबरेली)
रामबली मिश्र, श्री
राममूर्ति, श्री
राममूर्ति "अंचल", श्री
राम रतन, श्री
राम लखन सिंह, श्री
रामलाल, श्री
राम समझावन, श्री
रामसिंह, श्री
रामस्वरूप, श्री (प्रतापगढ़)
रामस्वरूप, श्री (मैनपुरी)
रामायण राय, श्री
रूप नारायण, श्री
लक्ष्मीरमण आचार्य, श्री
लक्ष्मीशंकर, श्री
लटूरी सिंह, श्री
लालन शर्मा, श्री

लाल बहादुर, श्री
वसी नकवी, श्री
विजय कुमार त्रिपाठी, श्री
विजय शंकर सिंह, श्री
विशुन प्रताप सिंह, श्री
विश्वनाथ सिंह, श्री
वीर बहादुर, श्री
वीरेन्द्र वर्मा, श्री
शकुंतला देवी, श्रीमती
शफकत जंग, श्री
शब्बीर हसन, श्री
शिवनाथ सिंह, श्री
शिवमंगल सिंह, श्री
शिवशंकर सिंह, श्री
शीतलादीन, श्री
शीतला प्रसाद सिंह, श्री
शगनचन्द मजदूर, श्री
श्रीनाथ, श्री
श्रीनारायण तिवारी, श्री
श्रीपति मिश्र, श्री
श्रीराम तिवारी, श्री
सईद अहमद, श्री
सत्यवीर, कुंवर
सीताराम, डाक्टर
सुक्खनलाल, श्री
सुखदेव, श्री
सुदामा प्रसाद गोस्वामी, श्री
सुरेन्द्र विक्रम, श्री
सोहन लाल धुसिया, श्री
हरिगेनराम, श्री
हरिहरनाथ अग्रवाल, श्री (उपनाम हरी बाबू)
हरिहर बख्श सिंह, राजा
हरीदत्त काण्डपाल, श्री
हरीशचन्द, श्री
हिम्मत बहादुर, श्री
हेमवती नन्दन बहुगुणा, श्री

श्री उग्रसेन---

माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे माननीय चन्द्रभानु गुप्त की सरकार पर अविश्वास है।

श्री अध्यक्ष---

इसका परिणाम यह हुआ कि जो संशोधन प्रस्तुत हुआ था वह स्वीकृत हो गया और जो मूल प्रस्ताव था वह संशोधित रूप में अब मैं सदन के समक्ष रखना चाहूंगा।

श्री चन्द्रभानु गुप्त---

अध्यक्ष महोदय, मैं सिर्फ यह निवेदन करना चाहता था कि चूंकि विपक्ष बहुमत में है इसलिये मैं आप से निवदन करूंगा कि सदन की कार्यवाही स्थगित कर दी जाय। मैं गवर्नर महोदय को अपना और अपने साथियों का इस्तीफा जाकर दे दूंगा।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष---

मैं माननीय नेता विरोधी दल से प्रार्थना करूंगा कि वे जरा शान्ति स्थापित कराने में सहयोग दें।

श्री रामचन्द्र विकल---

अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय नेता सदन को, जिन्होंने आज जनतंत्र की सबसे ऊंची प्रणाली को अपनाया है, हार्दिक धन्यवाद देता हूं और उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूं और मुझे आशा है कि उत्तर प्रदेश में जो जनतंत्र की मान्यतायें हैं वह सारे देश को प्रेरणा देंगी। इस सदन के ही नहीं, प्रदेश के नेता होने के नाते मैं माननीय चन्द्रभानु गुप्त को संयुक्त विधायक दल की तरफ से हार्दिक धन्यवाद देता हूं और उनका अभिवादन करता हूं। उन्होंने एक स्वस्थ परम्परा के लिये जिस बात की आज जरूरत थी, उसे अपना कर स्वयं सरकार से त्यागपत्र देने की घोषणा की है। यह इस प्रदेश की जनता, कांग्रेस और जनतंत्र के लिये बहुत सही और उपयुक्त प्रणाली होगी। मैं फिर उनका धन्यवाद करता हूं।

अध्यक्ष--

माननीय नेता सदन की इस घोषणा के बाद भी, जो मेरा कर्तव्य है वह यह है कि जो संशोधित प्रस्ताव है वह मैं सदन के समक्ष प्रस्तुत कर दूं। संशोधन के स्वीकार हो जाने के बाद, मुख्य मंत्री जी ने जो निश्चय या फैसला लिया वह दूसरी और अलग बात है, लेकिन नियम की जो खानापूरी है वह विधिवत् सदन में होनी चाहिये।

प्रश्न यह है कि जो प्रस्ताव माननीय कृष्णानन्द जी ने रखा था कि " यह सदन महामहिम राज्यपाल के सम्बोधन के लिये धन्यवाद प्रकट करता है," उसमें जो संशोधन स्वीकृत हुआ है वह जोड़ दिया जाय। तो यह संशोधित प्रस्ताव मैं सदन के सामने रख रहा हूं।

प्रश्न यह है कि यह सदन महामहिम राज्यपाल के सम्बोधन के लिये धन्यवाद प्रकट करता है। किन्तु खेद है कि महामान्य राज्यपाल ने अपने अभिभाषण में--

१--लगान, भूमि-भवन-कर, वृत्ति एवं व्यापार-कर को समाप्त करने,

२--हाई स्कूल तक निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करने,

३--समान काम के लिये समान वेतन के सिद्धान्त को स्वीकार करके प्रदेश के गैर-सरकारी मान्यता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों और सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों के वेतन तथा सेवा की शर्तों में समानता स्थापित करने,

४--न्यायपालिका तथा कार्यपालिका का अविलम्ब पृथकीकरण करने,

५--अवैतनिक मैजिस्ट्रेटों की नियुक्ति प्रथा को समाप्त करने,

६--राज्य कर्मचारियों की मांगों को स्वीकार करने,

७--महंगाई भत्ते को जीवन मूल्य सूचकांक से सम्बद्ध करने,

८--कार्यालयों में बेकारी बढ़ाने वाले स्वचालित यंत्रीकरण को समाप्त करने,

९--प्राइमरी पाठशालाओं के अध्यापकों का न्यूतम वेतन १५० रु० प्रति मास करने,

१०--छात्र तथा अन्य राजनैतिक बन्दियों को जेल से तुरन्त रिहा करने,

११--हाल के गोली कांडों पर न्यायिक जांच कराने और एक स्थायी जांच आयोग की नियुक्ति की घोषणा करने जो हर एक गोलीकांड की जांच करेगा,

१२--राज-काज के सभी अंगों से अंग्रेजी हटा कर और पूरे प्रशासन में हिन्दी भाषा का प्रयोग करने,

१३--सभी अनाजों के मूल्य, कृषि उपयोगी वस्तुओं तथा कल-कारखानों से बनने वाली जीवनोपयोगी आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में संतुलन (पेरिटी) बनाये रखने की दृष्टि से कोई निश्चित योजना की घोषणा करने,

१४--कृषि कार्य के लिये किसानों को बिजली देने में प्राथमिकता तथा सुविधा दिये जाने,

१५--किसानों के लिये सिंचाई के सस्ते, सुलभ तथा उपयोगी साधनों की तुरन्त व्यवस्था करने,

१६--सिंचाई की दरों में कमी करने,

१७--कृषि योग्य ऊसर, परती, बंजर जमीन को मुफ्त बांट देने और बितरण में खेतिहर मजदूर, भूमिहीन किसान, हरिजन, थारू, कोल आदि कमजोर तबकों को प्रथमिकता देने,

१८--अनुसूचित तथा पिछड़ी जातियों के उत्थान के लिये विशेष रूप से संरक्षण देने के लिये कोई समुचित योजना बनाने,

१९—भूमि अधिग्रहण कानून में समुचित संशोधन करने, जिससे कि भूमि-मालिकों के हितों का संरक्षण हो सके,

की घोषणा नहीं की।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।)

श्री अध्यक्ष—

माननीय मुख्य मंत्री जी ने प्रस्ताव किया था कि जो शेष कार्य है वह स्थगित किया जाय। तो इसके लिये मैं सदन की अनुमति चाहता हूं कि बाकी कार्य स्थगित किया जाय।

(सदन की स्वीकृति से शेष कार्य स्थगित किया गया।)

श्री अध्यक्ष—

अब हम उठते हैं और परसों ११ बजे फिर बैठेंगे।

(इसके बाद सदन ४ बज कर ५० मिनट पर ३ अप्रैल, १९६७, के ११ बजे दिन तक के लिये स्थगित हो गया।)

देवकी नन्दन मित्थल,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

लखनऊ :
१ अप्रैल, १९६७।